(क) हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन
प्रस्तावना

(ख) तुलनात्मक साहित्य की विभावना एवं उपादेयता

(1) तुलनात्मक साहित्य का अर्थ और संकल्पनाएँ
(2) तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा
(3) तुलनात्मक साहित्य : विभिन्न विचारकों द्वारा सूचित संज्ञाएँ
(4) तुलनात्मक साहित्य शोध समीक्षा
- तुलनात्मक साहित्य के लक्षण एवं स्वरुप
- तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के क्षेत्र
(5) तुलनात्मक साहित्य की उपादेयता
  - ❐ पूर्वग्रह से मुक्ति
  - ❐ ज्ञानक्षेत्र का विस्तार
  - ❐ विविध साहित्यों और कलाओं के पारस्परिक संबंधों के प्रेरक
  - ❐ पाठक, भावक, आलोचक एवं समाज की चेतना जागृति
(6) नूतन अभिगम, विचार शैली आदि का आविष्कार
और साहित्यिक विकास
(7) अनुवादों का प्रेरक

(ग) हिन्दी - गुजराती दलित कहानियों का विश्लेषण

(अ) हिन्दी दलित कहानियाँ
(आ) गुजराती दलित कहानियाँ

(घ) कहानियों का विश्लेषण

(1) अपमानबोध
(2) मानवगौरव
(3) जातिवाद का विरोध
(4) विद्रोह की भावना
(5) अन्याय और अत्याचार के प्रति विरोध
(6) सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जागरुकता
(7) नारी भावना
(8) समाज के प्रति अस्मिता की पहचान

(क) हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :

भारत में धार्मिक शास्त्रनुसार भगवान के दस अवतरा एवं तैतीस करोड़ देवता के होते हुए भी अछूतों की अपवित्रता कायम है । वे अपवित्र ही बने रहकर मर भी जाते हैं और वे जिन बच्चों को जन्म देते है वें बच्चें भी अपवित्र का टीका माथे पर लगाये जन्म ग्रहण करते हैं । यह एक स्थायी वंशानुगत कलंक है, जो किसी तरह धुलने का काम नहीं ले रहा है । हिन्दू से मुसलमान बनने वाले का धर्म परिवर्तन कराके फिर से हम हिन्दू बना सकते हैं लेकिन हिन्दू धर्म में जन्में एक शूद्र को हम सवर्ण नहीं बना सकते । जमाना बदल गया है लेकिन हिन्दू सवर्ण मानसिकता नहीं बदली । फिर कैसे कहें हम सब हिन्दू एक है । शंकराचार्य जैसे आदरणीय व्यक्तियों का कहना है कि "जाति व्यवस्था के अनुसार जीना और सोचना ही भारतीय संस्कृति का सच्चा अनुगमन है ।"[1] हमारा देश आज एक सांस्कृतिक संकट से गुजर रहा है। हमारे देश में उपेक्षित जनसमूहों की समस्याओं, कुरीतियों, कुंठाओं, मान्यताओं, परंपराओं, रूढियों, पर्वो, उत्सवों, त्यौहारों उनकी पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं, उनके विश्वासों, आस्थाओं, व्यवसायों, व्यसनों, नरनारी संबंध, नारी पर होनेवाले अत्याचार, अज्ञानता, उनकी काम लोलुपता, उनका दारिद्रय, उनका तनाव, उनके संस्कार, संघर्ष तथा उनके रोष, क्रोध, सुख-दुःख व हर्ष रूदन को दलित साहित्यकारों द्वारा जिस साहित्य में यथार्थ रुप में अभिव्यक्त किया गया है वह दलित साहित्य । दलितों के संबंध में लिखा गया साहित्य दलित साहित्य है चाहे वह दलित ने लिखा हो या अदलित ने । जो देखा-भोगा-सोचा-जाना अनुभव किया उसका यथार्थ चित्रण किया गया हो, जो अनुभव अनुभूतिपक्ष को उजागर करता हो उसे दलित साहित्य कहा गया है । दलित वर्ग की यातनाओं को यह साहित्य उद्‌गार प्रदान करता है । अपने स्वतंत्र अस्तित्व का उद्‌घोष करता है । सामाजिक वैषम्य पर, जाति व्यवस्था तथा वर्ण व्यवस्था पर वह प्रखर आघात करता है ।

सामाजिक न्याय, सामाजिक समता, स्वातंत्र्यमुक्ति, अधिकारों की माँग और अपने अस्तित्व का स्वीकार दलित साहित्य का मूल स्वर है । आज का दलित साहित्यकार डॉ. बाबासाहब आंबेड़कर के विचारों को आगे बढ़ा रहा

हैं। दलित साहित्य में आंबेड्कर की ध्वनि सुनाई देती है । निश्चित ध्येय लेकर दलित साहित्य ने अपना मंच तैयार किया है । दलितों के रुदन का स्वर ही दलित साहित्य है, जिसमें आक्रोश, तीव्रता, आगेकूच की नई दिशाएँ, नयी सोच, मुक्ति का मार्ग भी है ।

निश्चित लक्ष्य के साथ दलित साहित्य आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ है। इस आंदोलन ने समाज में उफान पैदा कर दिया है । कुछ लोगों की सांप्रदायिक विचारधारा के कारण रोस्टर नीति के विरुद्ध आंदोलन, मांडलपंच की स्वीकृति के विरुद्ध आंदोलन आदि ने इस आंदोलन को गति प्रदान की है। पढ़े-लिखे शिक्षित दलित साहित्यकारों ने उनके विरुद्ध चलाये गये आंदोलनों एवम् उपेक्षावृति के सामने अपना क्रोध-रोष दलित साहित्य से अभिव्यक्त किया । दलित साहित्यकारों ने अपने अनुभवों की सच्चाई बड़ी तीव्रता के साथ साहित्य के माध्यम से हमारे सामने रखी । दलित साहित्यकारों ने दलित समाज को मुक्ति की राह दिखाई दलित युवा पीढ़ी में आशा-आकांक्षाओं का नवोन्मेष किया । दलित समाज को चातुर्वर्ण्य व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा एवं नवीन दृष्टि दी, नया विश्वास प्रदान किया ।

भारत एक बहुभाषीय साहित्य संपन्न देश है । इसलिए भारतीय भाषाओं और साहित्य के इतिहास की अवधारणा के निर्माण के लिए तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है । **सर जेम्स** ने भी कहा है कि, "तुलनात्मक अध्ययन पूर्णता प्रदान करता है । इससे स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक अध्ययनपूर्ण एवं समग्र ज्ञान की प्राप्ति का साधन है । इसलिए इसकी अपेक्षा है । दूसरी तरफ हेनरी जोर्ज मानते है कि "तुलनात्मक अध्ययन हमें संस्कृति का सार प्रदान करता है ।" विभिन्न संस्कृतियों का सार ग्रहण करने के लिए भी तुलनात्मक अध्ययन की अपेक्षा है । विविध साहित्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही संभव है । मैक्समूलर ने भी इसीलिए कहा है कि, "सभी उच्चत्तर ज्ञान की प्राप्ति तुलना पर ही आधारित है, अर्थात् तुलना उच्चता और विकासात्मकता के लिए अपेक्षित है ।"[2]

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास संगोष्ठी के प्रवचन में डॉ. अंबाशंकर नागरजी ने कहा था, "आज माने, चाहे न माने, यह हकीकत है कि अहिन्दी प्रदेश में रहने के कारण हम हिन्दी भाषा और साहित्य की मुख्यधारा (मेन-स्ट्रीम) से कटे हुए है । संचार माध्यमों और साधनों के बावजूद हमारी भाषा क्षमता अंगुलि के जल के भाँति छीडकती जाती है । अधुनातन साहित्य हमें

आसानी से उपलब्ध नहीं होता ।"[3] यदि गुजरात के हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष की यह मनोवेदना है तो, हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की खोज करना परिश्रमी है ।

दलित साहित्य का सम्यक अवलोकन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि संख्या की दृष्टि से कविताओं का सृजन सबसे अधिक हुआ है । इसके बाद अन्य साहित्य रूपों की तुलना में दलित कथाओं की संख्या अधिक है । सामाजिक सत्य की सिद्धि के लिए प्रमाण स्वरुप घटना या प्रसंग के आरोपण को दलित कहानी की सामान्य और स्थूल विशेषता माना जाता है । वस्तुतः सामाजिक यथार्थ की व्यक्ति विशिष्ट अनुभूति को सर्जनात्मक स्तर देने की आवश्यकता है, इसीमें दलित कहानी की सार्थकता निहित है ।

दलित कहानी इस व्यवस्था की सदियों के खिलाफ आवाज़ ही नहीं उठाती बल्कि कुछ सवाल भी पूछती है । सार्थक कहानी वही है जो मन को कचोट जाय और जिसमें समाज में परिवर्तन की राह बने । इसके लिए यह आवश्यक है कि सौंदर्यशास्त्र के परंपरागत मापदण्डों का मोह त्यागा जाए । दलित साहित्य परिवर्तन के लिए लिखा जानेवाले साहित्य है । यह एक बहुत विशाल समुदाय के सामाजिक अधिकार के लिए संघर्षरत अनुबद्ध साहित्य है । दलित कहानियाँ सामाजिक बदलाव लाने का आह्वान करती है ।

दलित कहानी में अभिव्यक्त यह सवाल और उनसे उपजा संघर्ष उसी बृहतर समाज से जुड़ने की कोशिश का एक हिस्सा है, जिसमें एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ अपने संबंध की कहानी कहता है । कहना न होगा कि दलित कहानी में उभरा यह संघर्ष एक समाज जीवन मूल्यों पर केन्द्रित सामाजिक व्यवस्था की मांग करता है जिसमें ज्ञान, वाणी और ज़मीन पर अधिकार हो कैसे यह संघर्ष की दिशा और उसका जन केन्द्रित दर्शन तय करेगा ।

दलित जीवन के कई कोण हैं - जीवन से जूझने के, जिन्दा रहने के, पीड़ा सहने के और उससे उबरने के । समय के लम्बे अंतराल को छूती हैं ये कहानियाँ इसलिए दलित चेतना के उदय से लेकर संकल्प बनने तक का विकास इनमें उजागर होता है । हीन भावना से उबारना, निर्मित होता आत्मसम्मान, तनकर खड़ी होती अस्मिता और परिवर्तन का संकल्प विकसित होता नज़र आता है इनमें "गुलाम हूँ मैं" का अहसास भी डंक मारता दिखता है तो उस अहसास से मुक्ति की छटपटाहट भी कुलबुलाती नज़र आती है

और नज़र आता है यह सपना "जाँति नहीं मनुष्य हूँ मैं - समाज का साझेदार हूँ में - ओरों की तरह मेरी भी जीने की शर्ते है ।" ये सपना इन कहानियों को दिशा देता है और लगने लगता है कि जैसे उन्हें ज्ञान, इलहाम या कुछ भी कहो, हो गया है । कहीं-कहीं तो वह "अप्पो दीपो भवः" बनकर रोशन हो जाता है और अँधेरे को काँटने लगता है । कहीं-कहीं वह संगठित होकर योजना बनाता है और कहीं सीधे संघर्ष में उतरकर राह तैयार करता है । कहीं पीड़ा को उकेरकर उनके मन में जिन्होंने उसे पशुवत बनाया, अपराध बोध पैदा करता है और शर्म दिलाता है और सफल हो जाता है । अपने लक्ष्य में सार्थक हो जाती है, कहानी जब वह चोट करती है और ये कहानियाँ चोट कराती है ।

दलित साहित्य सिर्फ आनंद के लिए नहीं बल्कि परिवर्तन के लिए लिखा जाता है । सार्थक कहानी के लिए कलात्मक की बज़ाय हकीक़त, दृष्टि, दिशा एवं वर्तमान व्यवस्था की सडांघ के प्रति धृणा आवश्यक है तभी उसमें एक ऐसी सृजनात्मक शक्ति उत्पन्न होगी जिससे एक नई संस्कृति और नई दुनिया की पृष्ठभूमि तैयार होगी । पुरानी लकीरों को पीटने से संतुलन भले ही हिलडुल जाए पर परिवर्तन नहीं होगा । दलित कहानी पुरानी लीक से हटकर चलने की मुहिम चलाने को कटिबद्ध है । दलित कहानियों में विकास-प्रक्रिया के विभिन्न स्तर, रूप और रस मिलेगें जो इस प्रकार है ।

(ख) तुलनात्मक साहित्य की विभावना एवं उपादेयता :

भारतीय संदर्भ में विशेष रूप से बहुभाषित देश होने के नाते तुलनात्मक साहित्याध्ययन भारतीय साहित्य के इतिहास की अवधारणा के निर्माण के लिए जहाँ जरूरी है वहाँ दूसरी ओर भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित अविच्छिन्न साहित्य अभिव्यक्ति का ऐतिहासिक दृष्टि से विश्वासोत्पादक आलेख प्रस्तुत करने के लिए भी आवश्यक है । भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन किया जाए जिसमें "हिन्दी सही मायने में भारत की सामाजिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सके और भाविक कुंठाओं से मुक्त करके हर भाषा के वैविध्य तथा एकता के तत्त्वों से हमें परिचित करा सकें ।"[4] भारत में अनेक जातियाँ, धर्मो, भाषाओं, संस्कृतियों की सहस्थिति है । ऐसे में देश की भावनात्मक एकता एवं सोहार्द की दृष्टि से भी यहाँ की विभिन्न भाषाओं के साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी हो सकता है । साथ ही किसी भी साहित्य के विद्यार्थी के लिए अपनी साहित्य समझ और दृष्टिकोण

को गहरा और व्यापक बनाने के लिए एक से अधिक भाषाओं के साहित्य का अध्ययन और तुलनात्मक विश्लेषण आवश्यक शर्त है ।

मीड़िया औ दूरसंचार के साधनों के बढ़ते प्रचार-प्रसार के कारण देश की विभिन्न भाषाओं के साहित्य से हमारे परिचय गाढ़ बना है और इससे तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में जिज्ञासाएँ और प्रयत्न भी बढ़े है । भारतीय साहित्य की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी का कथन समझना जरूरी है ।

"विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं जैसे हिन्दी, बंगला, मराठी, तामिल आदि में लिखा गया साहित्य जिन में विषय एवं भावगत एकसूत्रता स्पष्ट दिखाई पड़ती है । वस्तुतः संस्कृत साहित्य एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखे साहित्य के आधार पर ही भारतीय साहित्य के स्वरूप का पता चलता है । यह साहित्य एक है यद्यपि भारत की पंद्रह मुख्य भाषाओं में पंद्रह प्रकार की अभिव्यक्तियाँ दिखायी पड़ती है ।"[5]

(1) तुलनात्मक साहित्य का अर्थ और संकल्पनाएँ :

अंग्रेजी में Comptarative शब्द लेटिन शब्द Comparatius पर से बना हुआ है । पोलिटिकल इकोनोमी क्षेत्र में विशेषण के रूप में Compare शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ होता है To examine the mutual relation of to bring to in to. Comparison तुलना करना । जिसका विस्तृत एवं व्यापक अर्थ है "सादृश्य और वैदृश्य तत्वों को अलग-अलग करने हेतु भिन्न-भिन्न चीजों की तुलना करने की वृत्ति और सामर्थ्य और कार्यकारण के निर्णय करने की उदाहरण देने की ओर निदर्शन पद्धति से विमर्श करने की शक्ति ।"[6]

किसी भी उत्तम साहित्य रचना का आस्वाद किया जाता है तब भावक उसका बार-बार अनुशीलन करता है तथा अध्ययन की अनेक प्रक्रियाओं से गुजरता है । केवल साहित्य की नहीं किंतु किसी भी क्षेत्र का अध्येता प्रथम अध्ययन विषय का अवलोकन करता है और इन्द्रिगम्य पक्षों या पहलूओं को अवगत करता है एवं अपनाता है । इसके बाद विषय का पृथक्करण करने लग जाता है । इस प्रकार चीज़, व्यक्ति का प्रथम अवलोकन (observation) करता है । बाद में उसका पृथक्करण (Analysis) करता है । विश्लेषण करते समय उसके प्रत्येक पहलू उसके अंग, उपांगो को अलग करके उनके बीच पारस्परिक संबंधों को जाँचता है । इस प्रक्रिया के दौरान ही वह चीज़ या

कृति की विशेषताएँ एवं विशेष लक्षण स्पष्ट करने हेतु सहज भाव से तुलना करने लगता है । यह भी कहा जा सकता है कि इस तुलना या (Comparision) से वह विशेषता एवं विशेष लक्षणों को पहचाना जाता है । पृथक्करण और वर्णन की इस तरह तुलना भी ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में ज्ञेय वस्तु के स्वरूप को वस्तुलक्षी दृष्टिकोण से जानने का एक औजार बन जाती है । विज्ञान और अन्य विद्याशाखाओं में तुलना मात्र एक आत्मलक्षी दृष्टिकोण (Subjective method) तरीके से नहीं परंतु वस्तुलक्षी (Objective Method) मेथड के रूप में प्रयुक्त होती है । इसलिए संभवतः मैक्समूलर जैसे विद्वानों का कथन है कि, "All high knowledge gained by comparision and rests on comparision अर्थात् उच्च कोटि का ज्ञान तुलना से प्राप्त होता है और तुलना के आधार पर ही टीका रहता है ।"[7]

'तुलनात्मक साहित्य' शब्द को लेकर विद्वानों में काफ़ी विवाद भी रहा है । बोसवेल इसे "तुलनात्मक व्युत्पति" नाम से पुकारते हैं, तो पलेयर - ने 'साहित्य का तुलनात्मक विज्ञान' नाम से उसे अभिहित किया है ।"[8] सच कहा जाय तो 'तुलनात्मक साहित्य' आधुनिक साहित्य चिंतन की एक नूतन एवं नवीन संकल्पना है । तुलनात्मक साहित्य अपने पारिभाषिक रूप में अध्ययन की सिद्धी नहीं, विषय है ।

ओक्सफर्ड डिक्सनरी में Compare का अर्थ इस प्रकार है - Compare to bring togather or side by side indorder to note points of difference and more especially likeness to note and express the resemblance between.[9]

गुजराती साहित्यकार डॉ. धीरुभाई परीख तुलनात्मक साहित्य का अर्थ इस प्रकार प्रस्तुत करते है - "साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने की प्रवृति जो एक प्रकार से समीक्षा प्रवृति है । इसलिए वह आलोचना या समीक्षा के क्षेत्र की प्रवृति होती है । यह प्रवृति एक स्वतंत्र साधन के रूप में हैं । वह मीमांसा-समीक्षा की एक पद्धति है ।"[10]

(2) तुलनात्मक साहित्य की परिभाषाएँ :

तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से निम्नानुसार दी है -

- "तुलनात्मक साहित्य" साहित्य के समग्र रूप का अंतराष्ट्रीय

परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है जिसके मूल में यह भावना निहित होती है कि साहित्य सृजन और आस्वादन की चेतना जातीय एवं राजनैतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एक रस और अखंड होती है ।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY, M. S. University of Baroda

- रेनेवेलेफ

- 'तुलनात्मक साहित्य' एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साथ साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है । यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विविध क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है ।

- हेनरी एच.एच.रेमाक

- "साहित्य विकास के सामान्य सिद्धांतो का अध्ययन निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है ।" - पासनेट । "तुलनात्म साहित्य में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्व है ।"

- कलाइव स्काट

- "तुलना और विश्लेषण आलोचक के प्रमुख ओझार है । मूल्यांकन परक आलोचना की श्रेष्ठता को मापने के लिए तुलनात्मक पद्धति का लाभ उठाती है ।"

- टी. एस. इलियट

- "'तुलनात्मक साहित्य' एक प्रकार का अंत:साहित्य अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है - अनेकता में एकता का संधान ।"

- डॉ. नगेन्द्र

- "एक ही अपेक्षा अधिक साहित्यों का तुलना की सहायता से किया गया अध्ययन है ।"

- वसंत वापट

- "तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ ज्ञान के दूसरे क्षेत्र का भी तुलनात्मक अध्ययन है ।"

- इन्द्रनाथ चौधरी

- "तुलनात्मक साहित्य मूलत: भाषिक परिप्रेक्ष्य से जुड़ा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है । तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विषय है जिससे विभिन्न

भाषाओं में रचित साहित्यों की एक संपूर्ण इकाई के रूप में व्यापक पहचान की तभी अधिक संभावना बनती है । यह काम केवल विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों की तुलना ही नहीं वरन् मानवीय ज्ञान तथा प्रतीतियों, विशेष रूप से कलात्मक तथा वैचारिक क्षेत्रों के साथ तुलना से ही संभव हो सकता है । तात्पर्य है कि तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में क्षेत्रीयता अथवा भौगोलिकता तथा जातिगतता के आश्रय से साहित्य के विश्लेषण का प्रसार होता है ।"

(3) तुलनात्मक साहित्य : विभिन्न विचारकों द्वारा सूचित संज्ञाएँ :

तुलनात्मक साहित्य की कुछ परिभाषाएँ देखने के साथ-साथ हम यह भी चाहेगें कि इस 'तुलनात्मक साहित्य' के करीब के अर्थ संकेत देते शब्दों का प्रयोग कुछ पाश्चात्य और भारतीय चिंतक सर्जकों ने किया है इन शब्दों में तुलनात्मक साहित्य "विश्व साहित्य तथा व्यापक साहित्य" दीख पड़ते हैं जो इस प्रकार निम्नानुसार है -

- "National literature is now rather an unmeaning term the epoch of world literature is at hand and every one must strive to hasten its approach."[11]

जर्मन कवि ग्युइथे ने 'तुलनात्मक साहित्य' संज्ञा तो नहीं दी पर इसी ओर संकेत करती हुई 'विश्व साहित्य' की विभावना का जोरदार प्रचार किया । इसीलिए तुलनात्मक साहित्य 'राष्ट्रीय साहित्य' नहीं 'विश्व साहित्य' का गौरव बढ़ाते है ।

श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर की दृष्टि भी 'विश्व मानव पर स्थिर थी । जहाँ सारा विश्व नीड़ बन जाय ऐसा स्वपन जीवन भर देखनेवाले रवीन्द्रनाथ टैगोर का स्वप्न विश्व मानव (Universal Man) का था इस स्वप्न को पूरा करने के लिए उन्हें पूर्व और पश्चिम का समन्वय अनिवार्य लगा । 1908 में समस्त मनुष्य जाति की अंतर्हित एकता का निर्देश करते हुए उन्होंने कहा - "भले स्पष्ट रूप से मैं समझूँ या नहीं परंतु अब मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि समस्त मानवों में रहनेवाला मैं एक हूँ यह एक्य जितने अंश में मेरा कल्याण है, मेरा आनंद है ।"[12]

अंग्रेज मीमांसक मैथ्यू आर्नाल्ड ने सर्वप्रथम तुलनात्मक साहित्य के लिए Comparative Literature शब्द का प्रयोग किया था वे कहते है -

"No signal event no signal literature is adequatey

compreshend except in its relation on other events to other literature's."[13]

1966 में एक डबल्यू चैड़लर इसकी व्याख्या देते हुए कहते है - "A Conception involving a method a concepation of literature as whole. A concepation of this whole as composed of national elements a conception of literature as distinguish from liguistics."[14]

इस प्रकार हमने 'तुलनात्मक साहित्य' की व्याख्या और परिभाषाओं के अध्ययन के संदर्भ में विविध विद्वानों के मत देखें । इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि एक विद्याकीय अनुशासन रूप में 'तुलनात्मक साहित्य' विवादों और चर्चा का विषय बना हुआ है । इसके विरुद्ध विभिन्न क्षेत्रों से जो आरोप लगाए गए हैं वे भी एकदम उपेक्षनीय नहीं है ।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि "तुलनात्मक साहित्य की यह अवधारणा जैसा कि आरंभ में संकेत किया, कोई नया आविष्कार नहीं है, फिर भी वर्तमान युग में इसका स्वरूप एवं प्रक्रिया अत्यंत जटिल हो गई है और इसी अनुपात में इसके अध्ययन की कठिनाईयाँ भी बढ़ गई है । आज के साहित्य जगत में जिस तरह के परस्पर विरोधी मतभेद का जाल फैला है उसे देखते हुए यह अनिवार्य हो गया है कि, साहित्य के प्रति समग्र और व्यापक दृष्टिकोण का विकास किया जाय । व्यापक मानवीय आधार पर अव्यवस्थिति होने के कारण इस प्रकार का अध्ययन एक नये मानववाद के लिए भूमिका तैयार करेगा और 'खंडित मानवता' के समक्ष कुछ ऐसे मूल्य प्रस्तुत कर सकेगा जो एक सीमा तक सभी को ग्राह्य हो सकते है । इससे संपूर्ण मानव सभ्यता के लिए मार्ग प्रशस्त होगा और अंत में आधारित मानव मूल्यों को रेखांकित करता हुआ यह अध्ययन एक ऐसी सौंदर्य चेतना का विकास करेगा जो देश और काम की सीमाओं से मुक्त होगी ।"[15]

(4) तुलनात्मक साहित्य शोध-समीक्षा :

तुलनात्मक साहित्य लक्षण एवं स्वरुप :

तुलनात्मक साहित्य की परिभाषाओं और कुछ विद्वानों के विचारों का अनुशीलन करने के पश्चात 'तुलनात्मक साहित्य' के लक्षणों एवं स्वरूप पर विचार करना आवश्यक है जो इस प्रकार है -

- तुलनात्मक साहित्य में सर्जनात्मक एक से अधिक कृतियों का अध्ययन होता है । ये कृतियाँ दो भिन्न राष्ट्र की हों या एक ही राष्ट्र की, भिन्न-भिन्न भाषाओं का होना अपेक्षित है । एक ही सर्जक की दो विभिन्न भाषाओं में सर्जित कृतियों का भी तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत अध्ययन हो सकता है ।
- तुलनात्मक साहित्य मूलतः अंत भाविक परिप्रेक्ष्य से जुड़ा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है ।
- तुलनात्मक साहित्य साहित्येतिहास की एक शाखा रूप है ।
- पद्धति या प्रक्रिया के रूप में स्पष्टतः 'तुलनात्मक साहित्य' किसी कृतिकार कृति अथवा विधा विशेष का अलग-अलग या एकांत रूप से नहीं वरन् दूसरों की तुलना में विवेचन प्रस्तुत करता है । अर्थात् 'तुलनात्मक साहित्य' विवेचन की एवं साहित्य विवेचन की एक पद्धति है ।
- तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का पारस्परिक प्रभाव सूत्रों का अध्ययन करनेवाला आधुनिक विज्ञान है ।
- तुलनात्मक साहित्य, साहित्य और अन्य कलाओं, प्रतीतियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन है ।
- तुलनात्मक साहित्य में विविध भाषाओं की सैद्धांतिक साहित्य मीमांसा, दो संप्रदाय, दो परंपराओं, दो युग, दो वाद, दो स्वरूप की भी तुलना होती है । अर्थात् यह कल्पना प्रधान कृतियों तक सीमित अध्ययन नहीं है किंतु वह साहित्य आलोचना-विवेचन की तुलना तक भी विस्तृत है ।
- तुलनात्मक साहित्य जीवन के दृष्टिकोण एवं जीवन और साहित्य के संबंधों की भी चर्चा करता है ।
- तुलनात्मक साहित्य एक पद्धति Method है यहाँ तुलना का उद्देश्य ऊँच-नीच, उत्कृष्ट-निकृष्ट या भारी-हलका की भेद रेखा स्थापित करना या किसी भी प्रशस्ति या सराहना करना यह नहीं है । वह तुलना चाहे समग्र कृतियों की हो या उसके अंश मात्र की । किंतु इस पद्धति में अध्येता को कृति का आकलन के लिए पृथक्करण करना पड़ता है । पृथक्करण के साथ वर्गीकरण की प्रक्रिया होती है । अर्थात् तुलना के वक्त केवल साम्य ही नहीं वैषम्य का भी निर्देश होता है । कृति के संदर्भ में मूल स्रोत की जाँच-पड़ताल भी की जाती है ।

- तुलनात्मक साहित्य में दो राष्ट्र या दो भाषा का अध्ययन अपेक्षित है । इसलिए यहाँ अनुवाद की आवश्यकता रहती है । अनुवाद प्रवृत्ति यहाँ अंतर्हित स्वाभाविक और अविभाज्य अंग है ।
- तुलनात्मक अध्ययन अध्येता को मानव हृदय में स्थित भावों की दुनिया में घसीट ले जाता है और मानव हृदय में स्थित वैविध्य और उसकी विशेषताओं विविध साम्यताओं का ज्ञान कराता है । अत: भिन्न-भिन्न राष्ट्र, भाषाओं, संस्कृति समाज और मानवीय तात्विक ऐक्य आदि के दर्शन होने लहते हैं । मानवजाति साहित्य सर्जन क्षेत्र में यही सुंदरम्, सत्यम् और शिवम् का एहसास कर सकती है ।
- तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत है अर्थात् दो भिन्न कृति राष्ट्र संस्कृति से भावक अध्येता प्रभावित हो उठता है । उसकी चेतना विकसित होती है साथ में समाज की भी चेतना बढ़ती है । मानव जाति की सामूहिक विवेक बुद्धि की शोध तुलनात्मक साहित्य में सिद्ध होती है । इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य विविध साहित्यों के पारस्परिक संबंधो का अध्ययन है ।

तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र :

जैसा कि हमने तुलनात्मक साहित्य विषय के विस्तृत फलक से संबंध रखता है । तुलनात्मक साहित्य की सर्वमान्य स्थूल परिभाषा यही हो सकती है कि यह साहित्यिक समस्याओं का अध्ययन है जहाँ एक से अधिक भाषाओं के साहित्य का उपयोग किया जाता है । पश्चिम के तुलनात्मक साहित्य के दो प्रमुख संप्रदाय - फ्रांसीसी - जर्मन तथा अमरिकी स्कूल के अनुसार इस प्रकार के अध्ययन के दो रूप है । एक में साहित्येतिहास को अध्ययन का प्रमुख आधार माना गया है तथा दूसरे में कलापरख काव्यशास्त्रीय सौंदर्यमूलक तथा विश्लेषणात्मक अंतदृष्टि के आश्रय से अध्ययन का प्रसार होता है ।

डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी ने अपनी पुस्तक 'तुलनात्मक साहित्य की भूमिका' में उपर्युक्त दोनों संप्रदायों के आधार पर तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र का निर्देश किया है । पहला क्षेत्र है - काव्यशास्त्रीय सौंदर्यमूलक मूल्यों का प्रयोग और उनकी कलापरख विश्लेषण । दूसरे क्षेत्र में साहित्यिक आंदोलनों का अध्ययन करते हुए मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक या शैली वैज्ञानिक प्रवृत्तियों का विवेचन होता है । ये प्रवृत्तियाँ निश्चित कालक्रम से युक्त युगों में कभी-कभी इतना अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है कि पूरे एक

युग को अपनी विशेषताओं से परिभाषित करने लगती है । तीसरे क्षेत्र के अंतर्गत साहित्यिक विषयों का अध्ययन होता है, जहाँ साहित्य में अभिव्यक्ति व्यक्तित्व या अमूर्त विचारों का विभिन्न रूपांतरों की विभिन्न दृष्टियों से प्रयोग का विश्लेषण होता है । राम-कृष्ण फाउस्ट, डोन जुआन का अध्ययन, व्यक्तित्व का अध्ययन है तथा साहित्य में 'मृत्यु' पर दिये गये विचारों को अमूर्त विचार से जुड़ा हुआ विषय कहा जा सकता है । काव्य रूपों का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य का चौथा क्षेत्र है - "साहित्य संबंधों का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य की नाना पद्धतियाँ के सहारे इस अध्ययन का प्रसार होता है । जिनमें स्रोत या प्रभाव विवेचन अथवा साहित्य एवं मानवीय ज्ञान के दूसरे क्षेत्र के पारस्पारिक संबंधों का विश्लेषण किया जाता है ।"[16]

"तुलनात्मक साहित्य की भूमिका ग्रंथ में इंद्रनाथ चौधरी काम्पेरेटिव तथा जनरल लिटरेचर की 'इयरबुक' का संदर्भ देते है । जिसके अनुसार तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र निम्नलिखित शीर्षकों में प्रस्तुत किया जा सकता है ।

- "विषयवस्तु तथा काव्य रुढि अभिप्राय ।
- काव्यस्वरूप प्रकार विधा तथा विभिन्न तकनीक ।
- बाइबल, अभिजात, प्राचीनता, विस्तृत भौगोलिक तथा भाविक इकाई ।
- अनुवाद विषय - यात्रा - केन्द्र तथा मध्यस्थ ।
- विशिष्ट देश ।
- विशिष्ट लेखक ।"[17]

जॉन फ्लेचर ने भी तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र पर प्रभाव डाला है । जिसके अंतर्गत निम्नलिखित विषय क्षेत्र है ।

- सांस्कृतिक देशांतरण का विशेष अध्ययन ।
- विभिन्न लेखकों के पारस्पारिक भावों का विवेचन ।
- अनुवाद और गलत अनुवादों का विवेचन ।
- साहित्य तथा दूसरी कलाओं के पारस्परिक प्रभावों का विवेचन ।
- साहित्य तथा विचारों के अश्रृंखलित संबंध का विवेचन । उदाहरण के लिए 'धर्मवीर भारतीय पर फ्रांसीसी अस्तित्ववाद का प्रभाव ।'

भारतीय संदर्भ में इनके अतिरिक्त समस्तरीय के स्थान पर अनुलंबनीय ढंग से भारतीय साहित्येतिहास का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य का एक बहुत ही प्रमुख क्षेत्र है, "फांर्कापि जोस्ट तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र के चार-चार कोटियों में इस प्रकार विभाजित करते है ।"[18]

(6) अलग-अलग देश : उ.दा. पुनर्जागरण काल में अंग्रेजी तथा स्पेनी त्रासदियों की समांतर प्रवृतियाँ ।

(7) अलग-अलग लेखक : उ.दा. प्लूटो और शेक्सपियर ।

श्री राजूरकर ने अपने ग्रंथ "तुलनात्मक अध्ययन भारतीय भाषाएँ और साहित्य" में क्षेत्र परिधिकानिर्देश किया है, जो इस प्रकार है -[21]

(1) साहित्यों की तुलना ।

(2) साहित्यकारों की तुलना ।

(3) विशिष्ट कृतियों की तुलना ।

(4) साहित्यिक विधाओं की तुलना ।

(5) सांस्कृतिक अध्ययन् ।

(6) शिल्प एवं रचना शैलियों की तुलना ।

(7) अनुवाद की समस्याओं की तुलना ।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है । इसमें विविध राष्ट्र, प्रांत या भाषा, संस्कृति जीवन सृष्टियों या जीवनमूल्यों का साहित्यिक ढंग से अध्ययन किया जाता है । यह 'विश्व साहित्य' या 'सार्वभौम' साहित्य के रूप में अध्ययन है । इनका नाता 'जीवन' से है अर्थात् समग्र मानव-मानवीय एक्य सह अस्तित्व इसका मूल स्रोत है । इसके अंतर्गत जो कुछ समाविष्ट किया जाय वह सब कुछ है । चाहे वह कृतिकी घटनाओं की तुलना हो, साहित्यिक सिद्धांतों की या कृतिकार की । वैयक्तिक रूप से तो मानव का आंतरजगत और बाह्यजगत का संधान करने की चेष्टा से यह अध्ययन किया जाता है । मानव मन में जब सवाल उठता है कि - हम ऐसे हैं - हमारा साहित्य समाज आदि ऐसा हैं - क्या अन्य समाज देश, साहित्य ऐसा होगा या दोनों में मूल मानवीयता कहाँ है ? इन्हीं सवालों का उत्तर ढूँढने का कार्य साहित्य के जरियें यहाँ किया जाता है ।

(5) तुलनात्मक साहित्य की उपादेयता :

साहित्य के अध्ययन की विभिन्न विधियों में तुलनात्मक अध्ययन एक है । साहित्यिक आदान-प्रदान के क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन का अपूर्व योगदान है । राष्ट्रीय एवं आंतराष्ट्रीय विचारों का निरूपण एवं उदातीकरण इस विधि द्वारा संभव है । तुलनात्मक साहित्य, साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन करता है । अत: इसके अंतर्गत तुलनीय साहित्यों की कृतियों, कृतिकारों -

विधाओं एवं प्रवृतियों में निहित साम्य एवं वैषम्य का मूल्यांकन द्वारा विश्व की विभिन्न भाषाओं को वैविध्य तथा एकता के तत्वों का परिचय होता है ।

विभिन्न भाषाएँ एवं साहित्यों की विशेषताओं में से साहित्यगत एकरूपता या समानता का निरूपण करना तुलनात्मक साहित्य का उद्देश्य है । तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा मानव जाति के हृदय एवं मानव मन में परिलक्षित भाव साम्य का प्रगटीकरण एवं विश्व मानवता की एकता का निरूपण किया जाता है । तुलनात्मक अध्ययन व्यापक परिप्रेक्ष्य में है । अत: विभिन्न साहित्यों की समानता एवं विभिन्नता का विवेचन किया जाता है । इसके कारणों का अन्वेषण भी किया जाता है । विश्व मानव एवं विश्व मानवतावाद का दर्शन यहाँ संभव होता है ।

भारतीय संदर्भ में देखें तो भी यह अति आवश्यक है । भारत बहुभाषिक देश है एवं इसके प्रत्येक राज्य प्रांत आदि में भौगोलिक, सामाजिक और अन्य विभिन्नताएँ भी है । सर जेम्सन ने कहा है कि तुलना समग्रता को प्राप्त करती है । Comparision bestos Perfection हेनरी जोजे भी कहते है, It grants essence of our culture. "तुलनात्मक अध्ययन संस्कृति सार प्रदान करता है ।"[22] बाहर से विभिन्न एवं विभक्त अथवा पृथक-पृथक दिखाई देनेवाली भारतीय भाषाओं की साहित्य में जो समानताएँ हैं । उन्हीं रेखांकन तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अन्य साहित्य से जोड़ने हेतु, संपर्क हेतु भी तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है । यह सच है कि तुलनात्मक साहित्य से ही भारतीय साहित्य भी देश की सीमाओं का अतिक्रमण कर विविध देशों में साहित्यिक अपने क्षेत्र का विस्तार कर सकता है और अपनी परिधि के बाहर भी अन्य कलाओं एवं शास्त्रों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का आकलन कर सकता है ।

आज के युग में मानवजाति का विकास तभी संभव है जब विभिन्न संस्कृतियों का संगम हो राष्ट्रीय सीमाओं का सचेष्ट रूप में और निश्चयपूर्वक अतिक्रमण किया जाय और व्यक्तिवादी आधार का विकास किया जाए, तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन भले ही सार्वजनिक आंदोलनों से अनिवार्यत: दूर होगा वह उच्च शिक्षितों के लिए ही संभव होगा, पर आंतराष्ट्रीय सहयोग की वृद्धि का एक अद्‌भूत साधन बन सकेगा । वह प्रथमत: उन मनोवैज्ञानिक स्थितियों का निर्माण करेगा जिससे वास्तविकता अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के चिंतन के क्षेत्र में विकास होगा । यह भी सच है कि खंडित मानवता के समक्ष कुछ ऐसे मूल्य प्रस्तुत कर सकेगा जो एक सीमा तक सभी को ग्राह्य हो सकता है ।

इससे संपूर्ण मानवसभ्यता के अध्ययन के लिए मार्ग प्रशस्त होगा और अंत में आधारित मानवमूल्यों को रेखांकित करता हुआ यह अध्ययन एक ऐसी सौंदर्य चेतना का विकास करेगा जो देश और काल की सीमाओं से मुक्त होगी ।

❑ पूर्वग्रह से मुक्ति :

तुलनात्मक अध्ययन से हमारे परिचय क्षेत्र का विस्तार होता है । अपरिचित एवं अज्ञान या अजनबी क्षेत्रों के संबंधों के संपर्क से हम परिचित होने लगते हैं, जानने लगते है । अत: इसका परिणाम यह होता है कि हम परिचित होने लगते है । पूर्वग्रहों से मुक्त होना सीखते हैं । तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से दृष्टिकोण में विस्तार आता हैं । संकुचित मनोवृत्ति से मुक्ति मिलती है । हम ओरों से महत्व का स्वीकार करने लगते है और उनसे रागात्मक संबंध स्थापित करते हैं ।

❑ ज्ञानक्षेत्र का विस्तार :

आचार्य सुंदर रेड्डीजी के अनुसार "तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करता है । देश की एकता के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है ।"

डॉ. टी.मोहनसिंह ने अपने लेख में डॉ. को शिवसत्यनारायण के इस कथन को उद्‌धृत करके इस बात का अनुमोदन किया है । यह कथन है "तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र को विस्तृत करता है और उसके भाषागत, साहित्यिक एवं प्रादेशिक बंधनों को ज्ञानार्जन में बाधा डालने नहीं देता ।"

❑ विविध साहित्यों और कलाओं के पारस्परिक संबंधों के प्रेरक :

रेमाक ने कहा है कि तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाजविज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है । यह साहित्य से साहित्य की कलाओं, मानव संस्कृतियों आदि को जोड़ता है । उनके बीच के संदर्भ संबंधों की चर्चा करता है । तुलनात्मक अध्ययन का मूल उद्देश्य एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में विभिन्न भाषाओं के साहित्यों का अध्ययन है । जिससे उसका उचित अभिज्ञान या रसास्वादन हो सके तथा उन भाषाओं के साहित्यों के बारे में एक समुचित विचारधारा का विकास हो सके ।

❐ **पाठक, भावक, आलोचक एवं समाज की चेतना जागृति :**

तुलनात्मक साहित्य दो साहित्यों से जुड़ी हुई समस्याओं का विश्लेषण करता है । तुलनात्मक पद्धति के अन्वेषक की दृष्टि सूक्ष्मतर होकर अतल गहराई में स्थित काव्य की अंतरात्मा का स्पर्श कर लेती है । इतना ही नहीं, किसी विषय के एकांगी अध्ययन की अपेक्षा तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञान की अनंत वृद्धि भी होती है । अत: आलोचक पर अध्ययन के वक्त इन साहित्यों का प्रभाव रहता है । यह अध्ययन सर्वभोग्य बनता है । तब पाठक पर भी प्रभाव पड़ता है और चेतना की जागृति होती है । वह चेतना प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में समाज पर और साहित्य पर भी प्रतिबिंबित होती है ।

(6) नूतन अभिगम, विचार शैली आदि का आविष्कार और साहित्यिक विकास :

जब कोई भी साहित्य सर्जन एक परंपरा या ढाँचे में रहता है या अन्य साहित्य कलाओं की अवहेलना करता है तो वह कुंठित हो जाता है । उसका विकास एवं प्रगति नहीं होती । परिवर्तनशीलता नावीन्य विकास आदि के लिए साहित्यिक संपर्क आवश्यक है । यह भी देखा जाता है जनजागृति हो या कोई भी आंदोलन हुआ हो इसी में विदेशी साहित्य के बाद का भी प्रभाव रहा है । सर्वोदय की कल्पना में गांधीजी को अधिक सहायता देनेवाला ग्रंथ **'अन टु द लास्ट'** था । भारतीय समाज की कई मान्यताओं में परिवर्तन लाने में भी उस युग के शिक्षित युवानों का विदेशी साहित्य से परिचय महत्वपूर्ण होता है । नूतन अभिगम - विचार शैली आदि का आविष्कार तुलनात्मक अध्ययन से अधिक हो जाता है और साहित्यिक विकास की गति तेज होती रहती है ।

भ. न. राजुरकर का यह मानना उचित ही है कि, "हिन्दी भाषा का संपर्क यदि भारत वर्ष की अन्य भाषाओं से निरंतर बढ़ता रहेगा तो निश्चित ही हिन्दी के माध्यम से राष्ट्र की भावनाओं की अभिव्यक्ति में सहायता मिलेगी तुलनात्मक अध्ययन का यह महान कार्य है ।"[23] एक नूतन अभिगम के रूप में भी तुलनात्मक साहित्य आवकार्य है ।

(7) अनुवादों का प्रेरक :

तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद का मत्वपूर्ण स्थान है । साथ ही साथ साहित्यों की तुलनात्मक आलोचना होती है । यह सत्य है कि यहाँ अध्येता अध्ययन कृति को समझकर उसका अनुवाद करता है । इससे सूक्ष्म अध्ययन करके उसकी आत्मा तक पहुँचता है । वह अज्ञान कृति को समझकर उसका अनुवाद करके लोकभोग्य बना देता है । उसमें व्यक्त विचारों, जीवन दृष्टि आदि को विश्व के साहित्य का प्रसार हो जाता है । विश्व के अज्ञात साहित्यकारों और साहित्य के प्रति ज्ञान पिपासु सहज ही आकर्षित हो उठता है। युद्ध संघर्ष भेदभाव आदि जैसे बुरे अनुभव विश्वस दो विश्व युद्धों ने करवाये है । अत: अब मानव अस्तित्व बनाये रहने की तीव्र अपेक्षा करता है । फिर भी संकुचित राष्ट्रवाद, धर्मवाद आदि के कारण निजी स्वार्थ के लिए विश्व के देशों में ठंडे संघर्ष की स्थिति बनी रही है । ऐसे में विश्व मानव को एक-दूसरे की सच्ची पहचान देने और संघर्ष को मिटाने के लिए तुलनात्मक साहित्य आवश्यक ही नहीं आर्शीवाद रूप बना रहेगा यह नि:शंक है, यदि संक्षेप में कहा जाय तो तुलनात्मक अध्ययन विश्व को मानवीय मूल्यों की एक रस्सी में पिरोता है और मानव को मानव की तरह जीने की राह दिखाकर मानव से विश्व मानव की संकल्पना को चरितार्थ करता है ।

जैसा कि हमें पता है भारत बहुभाषित देश है । इसमें राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार व्यापक हो रहा है । दूरसंचार के माध्यमों और मीडिया के विस्फोट के कारण भारत की भाषाओं के साहित्य का भी परिचय अरस-परस बढ़ा है तो उनमें समांतर विविध साहित्यिक प्रवाहों के तुलनात्मक अध्ययन की ओर ही जिज्ञासु अध्येताओं का ध्यान गया है । "भारतीय साहित्य" की संकल्पना भी स्पष्टतर होती जा रही है । "तुलनात्मक साहित्याभास" जैसी राष्ट्रीय संगोष्ठी का गुजरात विद्यापीठ जैसी संस्थाओं में कार्य हुआ है । डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी, डॉ. अमियदेव (पूर्व उपकुलपति) पं.बंगाल युनि. कोलकता । डॉ. र. वी. रामकृष्णन सहित अन्य भाषा-भाषियों के तुलनात्मक साहित्यकारों ने हिस्सा लिया । मुझे भी भारत की दो प्रमुख भाषाओं "हिन्दी और गुजराती कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन" का उपक्रम है । तुलनात्मक अध्ययन निम्न ग्रंथों का अनुसंधान उपादेय होगा ।

तुलनात्मक अध्ययन की ग्रंथ सूची :

- हिन्दी-गुजराती उपन्यासों में गांधीवाद - नवीन कलार्थी
- तुकाराम एवं कबीर - एक तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. रमेश सेठ
- हिन्दी तथा बंगला नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. रमासेन गुप्ता
- साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती कहानियाँ - लता एस. सुमन
- सूरदास और नरसिंह महेता - एक तुलनात्मक अध्ययन - भ्रमरलाल जोशी

यहाँ हम प्रस्तुत शोध प्रबंध के विषय की प्रासंगिकता पर भी कुछ कहना चाहते हैं । सर्व विदित है कि आज भारतीय साहित्य के फलक पर 'दलित साहित्य' एक बहुत चर्चित संज्ञा है । विशेष रूप से सामाजिक बदलाव की चेतना के भारतीय साहित्य के संदर्भ में दलित वर्ग से संबंधित इस साहित्य की चर्चा प्रासंगिक एवं महत्व का मुद्दा है । इसमें संदेह नहीं कि दलित साहित्य के रूप में मराठी साहित्य ने समकालीन भारतीय साहित्य को एक विशिष्ट अवदान प्रदान किया है । विद्वानों और चर्चाओं की कश्मकश के बाद मराठी में 'दलित साहित्य' प्रतिष्ठित हो पाया । "पारंपारिक साहित्य से अलग होकर अपने वर्ग की अस्मिता को लेकर इस वर्ग के लेखकों ने सोचना शुरु किया और अपने वर्ग की यातनाओं और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने लगे । कल्प भाषा और शिल्प के स्तर पर परंपरा से एकदम अलग हो जाने के कारण आरंभ में इस साहित्य की हँसी उड़ाई गई । उपेक्षा हुई परंतु 'संवेदना की प्रखरता और अभिव्यक्ति की विशिष्टता के कारण इसे स्वीकारा गया है ।"[24] डॉ. नवल किशोर शर्मा उपर्युक्त उद्धरण को प्रस्तुत करते हुए कहते है कि, "यह साहित्य दलितवर्ग के मुक्ति संघर्ष का सशक्त सांस्कृतिक आयाम सिद्ध हुआ है और इसका संपूर्ण भारतीय साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा है । इसी प्रभाव के अंतर्गत दलित वर्ग के जीवन यथार्थ पर केन्द्रित बहुत सा साहित्य हिन्दी में लिखा गया है । भले ही अलग से दलित जैसे साहित्यांग का आविर्भाव न हुआ हो । इस प्रभाव को लगभग सभी भारतीय भाषाओं में कमोवेश लक्षित किया जा सकता है ।"[25]

दलित चेतना पर जो शोधकार्य हुआ है वह इस प्रकार है -

- हिन्दी साहित्य में दलित चेतना - डॉ. आनंद वास्कर
- हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग - डॉ. कुसुम मेघवाल
- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी- गुजराती
  उपन्यास साहित्य में दलित चेतना - डॉ. गिरीश रोहित

- हिन्दी-गुजराती उपन्यास साहित्य में दलित चेतना - डॉ. नरसिंहदास वणकर
- मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिन्दी कविता में सामाजिक और राजनीतिक चेतना - विमल थोरात

"हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन" हमारा अपेक्षित विषय है ।

तुलनात्मक अध्ययन : विशेषताएँ और महत्व :-

(1) तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा तुलनीय पक्षों की ऐसी विशेषताओं का उद्‌घाटन हो जाता है । जो सामान्य अध्ययन के द्वारा प्रकाश में नहीं आ पाती है ।

(2) तुलनात्मक अध्ययन भाषा और साहित्यों के परस्पर संपर्क को बढ़ाता है ।

(3) तुलनीय साहित्यकार या कृतियाँ एक दूसरें को नवीन संदर्भ प्रदान करते हैं । एक दूसरे के संदर्भ में इनका नवीन रूप प्रकट होता है ।

(4) एक भाषा साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के लिए दूसरी भाषा और साहित्य की सामग्री का उपयोग किया जा सकता है ।

(5) पारस्परिक संपर्क और आदान-प्रदान से भाषाओं और साहित्यों के क्षितिज विस्तृत होते हैं ।

(6) दो भाषाओं में तुलनात्मक अध्ययन से अनुवाद और मशीनी अनुवाद में सहायता मिल सकती है ।

(7) तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञानक्षेत्र को विस्तृत करता है और उसके भाषागत, साहित्यिक एवं प्रादेशिक बंधनों को ज्ञानार्जन में बाधा नहीं डालने देता ।

(8) तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा विभिन्न साहित्यों की समानताओं एवं भिन्नताओं का विवेचन करके इनके कारणों का अन्वेषण किया जाता है । विश्व मानव एवं विश्व-मानवतावाद को प्रतिष्ठित किया जाता है ।

(9) ज्ञान-विज्ञान की नई दिशाओं का उद्‌घाटन, भाषाशैली एवं अभिव्यंजना की मनोहारी अभिनय छटाओं का दिग्दर्शन, राष्ट्रीय एवं भावनात्मक ऐक्य का विश्वसनीय प्रतिपादन, विश्व मानव चेतना का संश्लेषण बहुमुखी प्रकट रूप, जाति, धर्म एवं रूढ़ियों द्वारा आरोपित भिन्नता में अन्तर्हित सामाजिक आदर्श एवं त्याग प्रधान भारतीय

संस्कृति का संस्थापन एवं अनेक न्युनताओं के प्रति सतर्कता तुलनात्मक अध्ययन द्वारा संभव है ।

(10) "देश की विविधता और विचित्रता में मूलभूत एकता के अंतदर्शन कराने में तुलनात्मक अध्ययन का विशिष्ट महत्व है ।"[26]

(11) "तुलनात्मक अध्ययन व्यक्ति को भाषा, साहित्य, देशकाल के बंधन से विमुक्तकर ज्ञानार्जन में सहायता देता है ।"[27]

(12) "भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक एकता की अनुभूति को तुलनात्मक अध्ययन आधार प्रदान करता है ।"[28]

तुलनात्मक अध्ययन से हमें यह अनुभव प्राप्त होता है कि, हमारी भाषा का साहित्य ही सर्वश्रेष्ठ नहीं है, बल्कि विभिन्न देश प्रदेशों की भाषा-भूमियों के बीच बहनेवाली हमारी वैचरिक एवं भावात्मक जीवन सहिता एक है ।

"दलित साहित्यकारों द्वारा लिखित साहित्य के तुलनात्मक अभ्यास की आज आवश्यकता है । इन साहित्यकारों ने अपने साहित्य में दलित वर्ग की सच्चाई के साथ कहाँ तक विश्लेषित किया है । इस पर संशोधन करना अनिवार्य है । साहित्य कभी दलित नहीं हो सकता । साहित्य में दलित वर्ग की स्थिति का वर्णन होता है ।"[29] दलित साहित्य आज के संदर्भ में नई दिशाएँ खोलता है । डॉ. गया प्रसाद 'प्रशांत' का कहना है कि - "दलित साहित्य आज के पाठ्यक्रमों में लिए जाने से ब्राह्मणी व दलित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन होगा । इस अध्ययन में अनुभव की कसौटी पर जो भी खरा व सत्य ठहरेगा उसी की मान्यता होगी । जूठी मान्यताएँ समाप्त होकर आदमी सद्बुद्धि की दिशा में अग्रसर होगा ।"[30]

(ग) हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का विश्लेषण

(अ) हिन्दी दलित कहानियाँ

कहानी	लेखक
❒ लटकी हुई शर्त	प्रहलादचंद्र दास
❒ पच्चीस चौके डेढ़ सौ	ओमप्रकाश वाल्मीकि
❒ एक और अंत	अभयकुमार सिन्हा

❒	एक और सीता	आलमशाह खान
❒	आदमी	आशिष सिन्हा
❒	अस्वीकृति	गिरिराजशरण अग्रवाल
❒	अषाढ़ का एक दिन	जवाहर सिंह
❒	कमीज़	नरेन्द्र मौर्य
❒	पन्ना धाय का दूसरा बेटा	रघुनाथ प्यासा
❒	सर्प-दंश	रामदास मिश्र
❒	बिच्छूधास	श्रीविलास डबराल
❒	छिपे हुए हाथ	सच्चिदानंद धूमकेतु
❒	कामरेड का सपना	बलराम
❒	हरिजन सेवक	मधुकर सिंह
❒	बयान	रमाकांत
❒	उठे हुए हाथ	मधुकर गंगाधर
❒	शवयात्रा	ओमप्रकाश वाल्मीकि
❒	अब नहीं नाचब	राम निहौर विमल
❒	जीवनसाथी	प्रेम कपाड़िया
❒	दाग दिया सच	रमणिका गुप्ता
❒	आतंक	राजेशकुमार बौद्ध
❒	बलात्कारी	रतन वर्मा
❒	षडयंत्र	विपिन बिहारी
❒	इंकलाब जिन्दाबाद	सत्यप्रकाश
❒	इशारा	स्वरूप चंद्र
❒	अपना गाँव	मोहनदास नैमिशराय
❒	सपना	ओमप्रकाश वाल्मीकि

हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का विश्लेषण

हिन्दी दलित कहानियाँ

❒ लटकी हुई शर्त :

लेखक - प्रहलादचंद्र दास

प्रहलादचंद्र दास की 'लटकी हुई शर्त' वर्ण चेतना की अद्‌भूत कहानी

है जो छोटा नागपुर के सामाजिक परिवेश में लिखी गई है । इस कहानी में दलितों की सुप्त वर्ग चेतना के करवट लेने और जगने का चित्रण है । कल का गंगाराम कहलानेवाला 'गंगाराम' गंवई समाज के बाबुओं के घर पर भोज में पतल पर से उठाया जानेवाला पेटू गंगाराम, एक प्रतिष्ठित गंगाराम बन जाता है, पर बाबुओं के लिए वह अछूत ही रहता है, भले ही वक्त पड़ने पर वहाँ के बाबू लोग उसी से कर्ज लेने आते हैं, चाहे बाप के श्राद्ध के लिए हो, चाहे बेटी के ब्याह के लिए । एक दिन बाबू साहब की लड़की के ब्याह पर भोज का इंतजाम किया जाता है और गंगाराम सहित सबको न्यौता दिया जाता है । गंगाराम एक शर्त रखता है - **"यह सिर्फ संयोग की बात है कि आपकी पोती की शादी है । और हम खाने से कहाँ इनकार करते है ? शर्त यही है कि खाने के बाद हम अपना पत्तल नहीं उठाएँगे । नेउत कर ले जाते हैं तो सचमुच सम्मान दीजिए और यह सम्मान अगर आपने दिया तो सबने दिया - क्योंकि आप तो गाँव के सिरमौर है ।"**[31]

गंगाराम इस प्रकार दलित समाज को अपमानित होकर भोज में शामिल होने से रोकता है । यह गांधीवादी तरीका है बायकाट का । लेकिन वह एक व्यावहारिक पक्ष भी अपनाता है । इस डर से कि कहीं खाने की लालच में दलित भोज में न चले जाएँ, वह अपने घर पर भी भोज रख देता है । यहाँ तक की गाँव की बेटी की शादी में दुसाध-चमार सभी ने जाकर रामकिसुन बाबू के यहाँ काम किया जरूर - पर खाना किसी ने नहीं खाया। गंगाराम की शर्त जहाँ की तहाँ लटकी हुई है । कितनी शादियाँ बाबुओं के यहाँ हुई कितनी शादियाँ इतरों के यहाँ हुई । लेकिन न इन्होंने उनके यहाँ खाया, न उन्होंने इनके यहाँ । पहले तो 'सूखा' भी चलता करता था, अब तो वह भी बंद हो गया है ।

"गंगाराम अलबता, बाबूओं की मदद ही करता है - दरी, पेट्रोलियम आदि-आदि ऐसे अवसरों पर काम आनेवाली चीज़ें देकर । कभी-कभी अपनी दोनों बंदूकें भी दे देता है । शादी-ब्याह में बाबुओं के दरवाजें पर गोली छोड़ने का रिवाज़ चलाएँ रखने के लिए । अगर बंदूक चलानेवाला कोई न हुआ तो अपने बेटों अथवा पोतों को भेज देता है । लेकिन खाना ? ना बाबा ! खाने की वही शर्त मंजूर है तो कहो आते हैं ।"[32]

यह शर्त रास्ता बदलती है जरूर पर है यह एक व्यक्तिगत प्रयास ही है, पूरे समाज का एक संगठित संकल्प नहीं ।

❑ पच्चीस चौके डेढ़ सौ :

लेखक - ओमप्रकाश वाल्मीकि

"पच्चीस चौके डेढ़ सौ" कहानी का नायक सुदीप पहली कमाई लेकर बस से घर लौट रहा है । हर हाथ जोड़कर झुककर बातें करनेवालें दीन-हीन डरे से आदमी में उसे अपने पिता की छबि नज़र आती है । वह अपने बचपन में पहुँच जाता है जब उसके पिता उसे स्कूल में दाखिल करवाया था । वहाँ वह पच्चीस का पहाड़ा याद करता है और घर जाकर दोहराता है - **"पच्चीस चौका सौ ।"** पिता उसे बुरी तरह डाँटते है और कहते है - **"तेरी किताब में गलत तो हो सके..... नहीं तो क्या चौधरी झूठ बोलेगें ? तेरी किताब से कहीं ठाड्डे (बड़े) आदमी हैं चौधरी जी । उनके घोरे (पास) तो ये मोट्टी-मोट्टी किताबें हैं... वह जो तेरा हेडमास्तर है वो भी पाँव छुए है चौधरी जी के । फेर भला वो गलत बतावेगें..... मास्टर से कहणा सही-सही पढ़ाया करें..... ।"**[33] क्योंकि कर्ज का सूद चूकाते वक्त गाँव के चौधरी ने उन्हें हंमेशा ऐसे ही गिनाया है । चौधरी गलत नहीं बोल सकता । जब वह स्कूल में पच्चीस चौके डेढ़ सौ दोहराता है तो मास्टर उसे 'भंगी', संस्कारहीन छोटीजात कहकर गरियाता है । घर में डेढ़ सौ और स्कूल में 'सौ' दुहरानेवाला वही बालक आज वेतन लेकर पिता को सच बताने जा रहा है । माँ वेतन को आंचल में प्रसाद मानकर रख लेती है । बेटा पच्चीस की चार ढेरियाँ लगाता है । पिता जो गिनना नहीं जानता उसे गिनने का आग्रह करता है । पुत्र की मदद से रूपयों चारों ढेरियों को बार-बार गिनने पर रूपये डेढ़ सौ नहीं, एक सौ ही गिनाते हैं । तब वह बूढ़ा पिता, जो बचपन और जवानी से आज तक उस चौधरी को पच्चीस चौका डेढ़ सौ की मान्यता पर सूद चुकाता रहा था, गुस्से से उठ जाता है । गाली देता है - **"कीड़े पड़ेंगे चौधरी..... कोई पानी देनेवाला भी नहीं बचेगा ।"**[34]

यह कहानी संवेदना, भाषा तथा संकल्प स्तर पर बहुत ही सक्षम है । एक गाली में जन्म-जन्म का आक्रोश उगलती यह कहानी दलित चेतना के विकास को बहुत आगे ले जाती है और बाबा साहब आंबेडकर के 'शिक्षा' के मंत्र को उजाकर करने के साथ-साथ सामंती शोषण को भी उजागर करती है। शिक्षा ने ही "पच्चीस चोके डेढ़ सौ" को "पच्चीस चोके सौ" साबित किया। बूढ़े पिता का वह आक्रोश दलित पीढ़ी को विद्रोह के कगार पर खड़ा कर देता है और विशिष्ट वर्ग के कहे को ब्रह्मवाक्य मानने तथा नियति के मिथक को तोड़ता है । यह कहानी एक साथ वर्ण और वर्ग चेतना से युक्त है ।

❑ एक और अंत :

लेखक - अभयकुमार सिन्हा

प्रस्तुत कहानी में वर्णव्यवस्था का दूषण दिमक की तरह पूरे समाज को नष्ट करता है जिसका शिकार मनुष्य बनकर अपना सर्वस्व लुटाकर खोखला बनकर जातिवाद का शिकार बनता रहता है ।

कहानी के चरित्र टुनरा, सुमनी ने अपने समाज के विरुद्ध जाकर प्रेमविवाह किया है । उनका पुत्र नन्हुआ छोटा था तभी से अपनी माँ की तरह वह भी टुनरा की मौसी का धृणा पात्र बनकर अछूत व्यक्ति की तरह जीवन बीता रहा था । पाँच साल की उम्र में ही उसके शिर से माँ की छाँव चली गई वह एकदम अकेला रह गया । टुनरा ने नन्हुआ को महबूब मिया की साईकिल की दुकान पर मज़दूरी करने लगा दिया और अपने आपको जवाबदारी से आज़ाद बना लिया । कुछ दिनों के बाद उसे घुमते समय नन्हुआ को पढ़ाने की बात सोचता है जैसे **"नन्हुआ पढ़-लिखकर अच्छा आदमी बन जायेगा तब कोई कुछ नहीं कहेगा उसे । पढ़े-लिखे आदमी को कोई कुछ नहीं कहेगा उससे उसकी जात-पात की बात कोई नहीं करता-पूछता । वहाँ जहाँ भी रहेगा इज्जत से रहेगा ।"[35]**

टुनरा इसी आशा के कारण नन्हुआ को स्टेशन छोड़कर ज्यादा पैसे कमाने के चक्कर में अपने बेटे को गँवा देता है और अपने आपको असहाय पाता है । इस कहानी में लेखक ने समाज में फैले जातिवाद को संबंधों की परवाह न करके स्वयं को नष्ट एवं विनाश की गर्त में धकेलता हुआ ही पाता है ।

❑ एक और सीता :

लेखक - आलमशाह खान

'एक और सीता' कहानी में लेखक ने जातिवाद के द्वारा उच्चवर्ण के लोग किस प्रकार बेबस लोगों को अपनी हवस का शिकार बनाते है पर समय के बदलाव और सही सोच के कारण कैसे मात भी खाते है ।

कहानी के चरित्र ठाकुर, सीता, रमिया तीनों एक कड़ी में बंधे है अपने आपको बंदी बना दिया है पर सीता अपने आपको उस बंधन से मुक्त कर देती है । पति की कमज़ोरी के कारण वह ठाकुर की हवस का शिकार होती है पर जाति की बात पर इस प्रकार विवाद होता है जैसे -

"अच्छा हुआ... ठाकुर की बात फली.... चमरिया की कोख चमार का ही बीज फुटा । आरसी घर सूरत न मिला लें बाप-बेटे ?"[36] सीता ने अपने शोषण का प्रतिकार भी किया पर ठाकुर की जबरदस्ती का जवाब बड़ी हिम्मत से अपने हाथ में गंडासा लेकर कहती है - **"आगे न बढ़ ठाकुर । मेरे हाथ में गड़ासा है... और कोई नहीं तो लो यह लखन-रेख मैं ही खींच देती हूँ ।"**[37]

इस प्रकार रेखा खींचकर ठाकुर को अपनी सीमा से आगाह करके ठाकुर को चौका भी देती है । इस प्रकार कहानी में एक दलित स्त्री अपने शोषण करने पर अपने आपको बचाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है और प्रतिघात करती है ।

❑ आदमी :

लेखक - आशीष सिन्हा

'आदमी' कहानी में कहानीकार ने संथाल जाति का परिचय देकर आधुनिक युग के पढ़े-लिखें बुद्धिजीव वर्ग के द्वारा गरीब आदिवासी स्त्री को अपनी हवस का शिकार बनाकर और पैसों की लालच से उसे खरीदकर एक मज़बूर आदमी के सुखी परिवार को रौंदने की घटना से हमें परिचित करवाया है ।

कारिया ओरांव और टानों अपनी शादीसुधा जीवन में बड़े खुश थे पर दिनरात मेहनत करने के बावजूद भी कारिया दो वक्त की रोटी जुटा नहीं पाता था । इस समस्या से निपटने के लिए टानों भी अपने आनेवाला बच्चा भी इस समस्या का शिकार न बने इसलिए वह भी रोज़ी कमाने जाती है । लेकिन जंगलबाबू की हवस से भरी निगाह पड़ने पर उसका सर्वनाश हो जाता है । जंगलबाबू अपनी हुकुमत के जोर पर टानों को डाक बंगले पर ले आते है और उसे अपनी हवस का शिकार बनाते है । टानों हिंमत से सामना करती है पर सफल नहीं होती और आहत जख़्मी टानों की आवाज़ डाक-बंगले की दीवारों से टकरायी थी - **"जंगलबाबू, मुझे छोड़ दे... मैं माँ बनने वाली हूँ, मुझे छोड़ दे... मेरी कोख में जो पल रहा है उस पर रहम कर..."**[38] टानों गर्भवती है इस बात की परवाह न करके जंगलबाबू उसका काम तमाम करके उसकी लाश को झाड़ी में फेंक देते है । कारिया उसकी लाश को झाड़ी में से निकालता है तो टानों की साँस चालू है ऐसा महसूस करता है । टानों की अधमरी लाश मिलने पर टानों अपने मुज़रीम का नाम बताकर कारिया को उसकी और अपने बच्चे

के खुनी से बदला लेने के लिए कहती है । कारिया भी जंगलबाबू की कैद से छूटकर जंगलबाबू को मौत के घाट उतार देता है । इस प्रकार कारिया अपना बदला लेकर जंगलबाबू जैसे शिक्षित लोगों को मारकर पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी वर्ग को अपनी ताकत का अंदाजा लगाने में कामयाब होता है ।

❑ अस्वीकृति

लेखक - गिरिराजशरण अग्रवाल

'अस्वीकृति' कहानी में गिरिराजशरण अग्रवाल ने स्वयं को उद्घोषक बनाकर कहानी में निहित सत्य से समाज को आगाह किया है । लेखक सफल अध्यापक है जिन्हें समाज भगवान का दर्जा देता है । समाज के वह निर्माता है । लेखक ने कहानी में की हुई पौराणिक विचारक बातों पर सोचने पर मज़बूर हो जाएगें ऐसी घटना को लेकर हमें अपने स्वभाव से अवगत कराया है । लेखक ने अपनी बाह्य और आंतरिक प्रकृति से पाठक को समाज के हरेक आदमी से प्रश्न पूछा है कि आप भले ही किसी प्रकार की ऊँची सोच रखते हो पर अपने आदर्शो को बचाने की कोशिश में स्वयं को भी अछूत बना देता है ।

लेखक ने अपने अछूत शिष्य को भूतकाल में घटित पौराणिक कथा का पुनःरावर्तन की परिस्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है । विक्रम बुद्धिजीवी, पढा-लिखा लड़का है पर जब लेखक की बेटी से ब्याह का प्रस्ताव रखता है तो लेखक वर्णव्यवस्था की कैद में अपने आपको पाते है और विक्रम से कहते है -

"यह क्या बदतमीजी है ?"[39]

लेखक ने इस वाक्य के अंत में प्रश्न चिन्ह लगाकर समाज को ओर अपने आपको सोचने के लिए मज़बूर किया है कि यह क्या बदतमीजी है जो इस 21वीं सदी में भी जातपात के बाड़े में कैद पाते है । इसी प्रकार लेखक समाज को जातिवाद का प्रतिकार करने की प्रेरणा देते है ।

❑ अषाढ़ का एक दिन :

लेखक - जवाहर सिंह

जवाहर सिंह ने इस कहानी में जातिवाद, राजनीति, दोनों को लेकर समाज की परिस्थिति पर प्रकाश डालने की कोशिश की है ।

गरीब की झोपड़ी में हो रहे वार्तालाप से कहानी को आगे बढ़ाकर इन्दिरा गांधी आवासयोजना की सुविधा का लाभ किस प्रकार गाँव के प्रतिष्ठित लोग फ़ायदा हडप लेते है ऐसी रणनीति का स्पष्ट चित्रण दिखाया है । भगेलू एक अछूत

व्यक्ति है जो राजेसरा बाबू से सूरजमुखी को सावधान रहने की सलाह भी देता है। गाँव में दी गई दलितों की ज़मीन को हडपने के बाद गाँव में युद्ध का वातावरण छाया हुआ है परिस्थिति गर्म है इस परिस्थिति में भगेलू जब शिवनाथ सिंह के वहाँ हल चलाने जाता है तो वह अपमानित होता है इसलिए वह काम छोड़ देता है । इस विरोध का परिणाम केवल खाली पेट रहना पड़ता है । इस परिस्थिति में उसे घटियाँ सोचने पर मज़बूर हो जाता है और अपनी पत्नी को अनाज़ लेने भेजता है पर इस भूल पर पछताकर सूरजमुखी को समझाकर वापस ले आता है और इस निर्णय के कारण उसकी भेंट मौत से हो जाती है । जिसके गुन्हेगार शिवनाथ सिंह थे जिन्होंने रिश्वत देकर सारा इल्ज़ाम हरिहर चमार पर लगाकर अपने आपको मुक्त कर देते है । इस प्रकार अषाढ़ का एक दिन में हुई बारिश से पूरा परिवार तहस-नहस हो जाता है ।

❒ कमीज़

कहानीकार - नरेन्द्र मौर्य

'कमीज़' कहानी में एक शिक्षित व्यक्ति चाहकर भी किसी मज़बूर की मदद करने में असहायता प्राप्त करता है, जिसे चाहने पर भी उसकी मदद नहीं कर सकता ।

रामा एक दलित व्यक्ति है जों भैंस चराने की नौकरी करता है । बाढ़ के कारण गलती से मालिक की भैंस का बच्चा रह जाता है उसे ढूंढकर लाने का हुकम वह सर आँखों पर रखकर अपनी जान से खेल जाता है । इस बलिदान के बदले में उसके निःसहाय परिवार को केवल मालिक की ऐसी दया को भुगतना पड़ता है जो मालिक कहते है - **"देख रज्जों (रामा की पत्नी) जन्म-मरण भगवान के हाथ में है । फिर भी अब तू आई है तो दस-पंद्रह किलो गेहूँ ले जा ।"**[40]

इस वाक्य के द्वारा लेखकने दलित व्यक्ति का जीवन और उसके परिवार के दर्द की किंमत कितनी सस्ती है वह स्पष्टतः दिखाया है । रामा का स्वप्न अधूरा रहा बल्कि उसके छोटे भाई की शिक्षा को अधूरा छोड़कर अपने भाई की तरह वह भी मालिक का गुलाम बन जाता है और पूरा परिवार भी उस परिस्थिति में जीने के लिए प्रवृत्त होता है। पर जब लेखक वहाँ जाते है तो परिस्थिति कुछ ओर थी जो इस प्रकार है - **"रज्जो आंगन में बैठी थी । उसके इर्द-गिर्द बच्चे बैठे थे । मुझे देखकर श्यामू (रामा का पुत्र) ने कहा "माँ आज भी नदी में पानी है । यदि काका आज बह जाएगा तो छोटे**

भैया मुझे भी कमीज़ लाकर देंगे ।"[41] इस प्रकार पूरे परिवार की दयनीय परिस्थिति में कुछ किलों अनाज और पुराने कपड़े की प्राप्ति कितनी महंगी है उसका अंदाजा लगा सकते है ।

❒ पन्ना धाय का दूसरा बेटा :

कहानीकार - रघुनाथ प्यासा

रघुनाथ प्यासा ने इस कहानी में ज़मीदार के बेटे द्वारा नौकर पर किए हुए अत्याचार द्वारा नौकर को मारने यहाँ तक जान लेते हुए दिखाया है। ज़मीदार के बेटे की धमकी से एक भाई अपने दूसरे भाई के खूनी को खूनी साबित करने में हिचकिचाता है यहाँ तक उसकी माँ भी स्वयं को जीवित रखने के लिए अपने बेटे के खून पर जरा सा शोक भी प्रकट नहीं करती । कहानी में वकील के सामने जब डिप्टी अपने बेगुन्हाई की बात कहता है और ज़मीदार का बेटा गुन्हा करके निर्दोष घुम रहा है इस बात से वकील को अवगत कराता है जिससे वकील भी आश्चर्य में पड़ जाता है । लेखक के द्वारा अंकित वाक्य - **"जिस ज़मीदार परिवार की गुलामी में डिप्टी की माँ ने अपनी तमाम जिंदगी गवा दी, उसके बड़े भाई धीम्माने जिस खानदान की वंशवेल बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी उसी रज़वाडे के चिराग को जब डिप्टी बचाने के लिए पहुँचा तो गलती ये हो गयी कि इस बार वह स्वयं बच गया ।"[42]**

उपर्युक्त वाक्य के द्वारा शोषितवर्ग कि परिस्थिति कितनी दयनीय होती है उसका सच्चा निर्देश किया है और दलित व्यक्ति अपने मालिक को बचाते हुए अपनी परवाह न करके नमक का रूण अदा करता है और इस बलिदान का ज़मीदार या उसके बेटे पर कोई असर नहीं होता वह गुन्हगार होते हुए आज़ाद होकर स्वतंत्र माहोल में घुमता रहता है जिसका सच्चा चित्रण दिखाकर दलित व्यक्ति स्वयं को नि:सहाय और अकेला महसूस करता है ।

❒ सर्प-दंश :

कहानीकार - रामदास मिश्र

'सर्प-दंश' कहानी में लेखक ने प्राणी और मनुष्य के दंशने की क्रिया के आधार पर उच्चवर्ग के दंश ने की क्रिया से एक दलित व्यक्ति किस तरह

मौन रहकर, हारकर अंत में मौत को प्राप्त करता है और परिवार के सदस्य नि:सहाय खड़े रह जाते है ।

गोकुल अपने परिवार को कई दिनों से भूखा देख रहा था इसलिए वह प्रधानजी के खेतों में से मक्का की बालियाँ लाने जाता है जहाँ स्वयं काम किया था वैसे हक्क से तो वह उसकी ही बाल्तियाँ है ऐसा मानता है । पर वहाँ तो केवल प्रधानजी की सरमुखत्यारशाही ही चलती है । गोकुल जब मक्का की बालियों की चोरी करने जाता है तो साँप के काटने पर खेत में पड़ा रहता है पर जब वह अपने नि:सहाय परिवार की परिस्थिति देखकर वह जीने के लिए अपने आपको तैयार करता है । लेकिन रात को प्रधानजी के बुलाने पर वहाँ प्रधानजी जैसे साँप का शिकार बन कर अपनी जान गवा देता है । अपने पिता की इस प्रकार से हुई मौत को देखकर गोकुल के बेटे को दलित नेमा की याद आती है पर वह अपने आपको विवशता का शिकार पाता है यहाँ तक - **“हरिजन टोली के थोड़े से लोग दलित आक्रोश लिये खड़े थे और प्रधान के आदमी थाने पर रपट लिखवाने जा रहे थे कि गोकुल सांप काटने से मर गया ।”**[43]

❐ बिच्छूधास :

कहानीकार - श्रीविलास डबराल

‘बिच्छूघास’ कहानी में लेखक ने समाज को अंधविश्वास का अस्वीकार करके सच्चाई का स्वीकार करते हुए समाज की दयनीय परिस्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया गया है ।

कहानी का पात्र दूर्गादत्त एक उच्च्व जाति का है पर अपने वालिद की बात का स्वीकार करके मूसा को अछूत मानता है और गलती से मूसा के छूने पर वह हेड मास्तर साहब से मूसा को बिच्छूघास की मार भी खिलाता है पर उम्र के बढ़ने के साथ एवम् बुद्धि का विकास होने पर मूसा की होटल में भेंट हुई मुलाकात से बिच्छूघास के ददोड़े की वेदना मूसा को नहीं पर स्वयं भुगत रहे है और दोनों के बीच हुए संवाद में दुर्गादत्त कहते है - **“कुत्ता मुझ पर उछला तो मेरी रोटियाँ नहीं छुआई, तुमसे छुआ गयी। हमारी रोटियों की पोटली पर से छिपाड़े गुजरते थे तो कुछ नहीं और तुम्हारे छूने पर रोटियों में जैसे जहर उतर आता था । यानी तुम कुत्तों और छिपाड़ों से भी गये गुजरे । क्या यह अन्याय नहीं ?”**[44]

लेखक ने दूर्गादत्त के द्वारा समाज की मानसिक स्थिति का पर्दाफाश किया है क्योंकि समाज को मनुष्य और प्राणी के बीच अंतर न मानकर केवल वर्णव्यवस्था का विरोध करने की सलाह दी और इस सच्चाई का सामना करने का अनुरोध किया है ।

❒ **छिपे हुए हाथ :**

कहानीकार - सच्चिदानंद धूमकेतु

"छिपे हुए हाथ" कहानी में लेखक ने छंगुरी के पात्र द्वारा समाज को सच्ची परिस्थिति से अवगत कराया है कि किस प्रकार दलित व्यक्ति चाहकर भी सुख की प्राप्ति का अनुभव अपने परिवार के साथ नहीं कर सकता वह इस घटना के बदलाव से विमुख न होकर उच्च वर्ग की निम्न मानसिकता का शिकार बनकर अपने परिवार को नष्ट करने का केवल कारण मात्र बनकर पछताता है ।

छंगुरी गाँव से शहर जाकर आर्थिकस्तर पर खड़ा रहने की क्षमता रखता है पर जब वह गाँव आता है तो अपने भाई और अपनी पत्नी के अनैतिक संबंध की जूठी बातों को सच्च मानकर अपने भाई का खूनी बन जाता है । इस प्रकार वह ज़मीदार की चाल का शिकार बनता है और बड़े आसान तरीके से ज़मीदार उसकी ज़मीन हड़पने में कामयाब हो जाते है । इस प्रकार तहसीलदार द्वारा फेंका गया मोहरा शतरंज के चौकोर खाने में जम कर बैठ जाता है और वह छंगुरी के परिवार को नष्ट करने में बड़ी चालाकी से अपने हाथों के कमाल को छूपाकर बड़ी आसानी से छंगुरी को गुन्हागार बनाकर अपना काम निकाल लेते है ।

❒ **कामरेड का सपना :**

कहानीकार - बलराम

कहानीकार बलराम ने प्रस्तुत कहानी में भारतवर्ष में होनेवाले बदलाव के कारण सामान्य प्रजा किस प्रकार अपने हक्क से विमुक्त कर दी जाती है उसका जीवंत दृश्य दिखाने की कोशिश है ।

ललई पंडित और सरजू ठाकुर के द्वारा कामरेड की हत्या हुई है पर थानेदार के हाथ में पांच हज़ार रुपया थमाने के बाद वह हत्या न बनकर मुठभेड़ का मामला बन जाता है । कामरेड कल्ला कहानी का चेतना-सभर चरित्र है जो राज्यसरकार द्वारा दिए गए हक के लिए अनपढ़ बेबस लोगों को एकत्रित करके उनके हक्क से अवगत कराकर उन्हें अपने अपने हक्क के लिए लड़ने की ताकत देते है । कहानी में दलित व्यक्ति के निरूपण के द्वारा भारत

के गाँवों की परिस्थितियों का जीवंत दृश्य दिखाया है । लेखक ने कामरेड के पात्र द्वारा बताया है कि - **"लड़ाई सवर्णो और हरिजनों की नहीं है । लड़ाई अमीरों और गरीबों की है ।"**[45] ठुनगु के चरित्र द्वारा गरीब व्यक्ति ब्याज के देते हुए अंधा होकर जैसे कुए में डूबता रहता है इसका जीवंत वर्णन दिखाया है ।

कामरेड के विजय प्राप्त करने पर कामरेड को अकेला पाकर कामरेड कल्ला और कामरेड धन्ना पर हुमला करके कामरेड कल्ला को मौत के घाट उतार देता है । इस घटना के कारण समग्र जनता जागृत होकर जुलूस निकालती है और उसमें सबसे आगे झंडा लिए चल रही - **"वह युवती कोई ओर नहीं, कामरेड कल्ला की बेटी चंद्रावती थी, पिता की हत्या की मातमी मुद्रा से पूर्णतः मुक्त, किसी सैनिक-सी तनी हुई ।"**[46]

लेखक ने चंद्रावती के पात्र द्वारा दलित वर्ग के हुए शोषण के विरूद्ध हुए अत्याचार पर आवाज़ उठाते हुए बताकर समाज में चेतना का प्रकाश फैलाया है ।

❑ हरिजन सेवक :

कहानीकार - मधुकर सिंह

'हरिजन-सेवक' कहानी में लेखक ने गांधीजी के आदर्शों को बताकर उसके स्वीकारने की चेष्टा पर दलित वर्ग को कितनी बड़ी किंमत चुकानी पड़ती है । यहाँ तक एक स्वातंत्र सेनानी भी आज़ाद भारत में स्वयं को गुलाम समझता है ।

मुंशी रामशरणलाल जिसे लेखक ने मास्साब के नाम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है । वह गांधीजी के आदर्शो पर चलनेवाला समाज के पिछड़े वर्ग के लोगों को साक्षर बनाने का कार्य करते है पर खूलेआम दुलार मुद्रा करके प्रेम प्रदर्शित करते हुए दिखाए गए है । ज़मीदार द्वारा जब ज़मीन हडपकर उस पर मज़दूरी करवाकर उनका शोषण किया जाता है तब उसका विरोध करके लड़ने के लिए दलित वर्ग शहर जाकर मज़दूरी करते है । यह बात ज़मीदार को खटकती है जिसकी सजा दलित बच्चों को पीटकर, बहू-बेटियों के साथ छेड़खानी करके उनका उपभोग करके पटक देना खुलेआम नंगा करके घूमाना यही उनका काम होता है । वह किसी भी प्रकार से अपने सस्ते मज़दूर गँवाना नहीं चाहते इसलिए बम फेंकवाकर पुलिसवालों के साथ मिलकर शोषितों को

नक्सलवादी बनाकर जेल भेज देते है और कहते है - **"इन्हें छोड़कर और कौन ऐसा काम कर सकता है ? गांधीजी ने इन्हें हरिजन बनाकर सिर पर चढ़ा दिया ।"**[47] मास्साब के चरित्र द्वारा आज़ाद देश की परिस्थिति का चित्रण इस प्रकार किया है - **"देश के लिए तीन साल तक जेल में रहा । अब जेल वाले कहते है कि कोई रेकार्ड नहीं है । प्रधानमंत्री की लालसा है कि सभी स्वतंत्रता-सेनानियों को पेंशन दें और जेल के अधिकारी बोलते है कि घूस दो तो सर्टिफिकेट बनाएगें ।"**[48]

जिससे गांधीजी के विचारों को अपनानेवाले स्वातंत्रसेनानी भी पुलिस की लालसा का शिकार बनता है । और ज़मीदारों की सरमुखत्यारशाही का शिकार दलित लोग बनते है ऐसी परिस्थिति दिखाकर आज़ाद भारत की परिस्थिति की सच्ची पहचान करवाई है ।

❑ बयान :

कहानीकार - रमाकांत

'बयान' कहानी का शीर्षक ही बयान का निर्देश करके मनुष्य में छीपी वेदना के चितकार का बयान करता है ।

दुलारु के चरित्र द्वारा लेखक ने गरीबवर्ग की परिस्थिति से समाज को अवगत कराया है । एक असहाय लड़की की आबरु को बचाने में देनेवाला बयान दुलारु के लिए महत्वपूर्ण नहीं है उसे उसकी कोई फिक्र नहीं है उसे तो केवल भरपेट किए भोज की सुखद अनुभूति का बयान करने में व्यस्त बताया है । थानेदार भी उसकी बातों से तंग आकर चले जाते है और केस को बंद कर देते है तब मातादीन गुस्सा होकर दुलारु को कहता है तुझे जूठा बयान देने के लिए कितने रुपए मिले की अमीन साहब की महतारी के मरनभोज की बात को इतना महत्व देता है तब वह कहते है - **"ऐसा बखान करने लगा जैसे खाना न खाया हो तुने..... अेब खाना तो लोग रोज़ ही खाते है..... ।"**[49] उसके उत्तर में दुलारु प्रश्न करता है - **"हुई, क्या ऐसा भी कभी हो सकता है कि लोग रोज़ खाना खाते है। रोज़ तो सिर्फ भूख लगती है । लेकिन खाना....."**[50]

इस वाक्य के द्वारा लेखक ने समाज के ऐसे वर्ग को हमारे सामने रखा है जो भरपेट भोजन तो दूर की बात है वह ठीक वक्त भोजन से विमुक्त रहते है ।

❑ उठे हुए हाथ :

कहानीकार - मधुकर गंगाधर

'उठे हुए हाथ' कहानी में स्त्रीशक्ति का समाज पर कैसा असर होता है और शक्ति के प्रभाव से एक छोटा बच्चा भी वीर योद्धा बन कर चट्टान की तरह सीना ताने खड़ा हो जाता है ।

राधो महतो एक अछूत लड़की को अपनी हवस का शिकार तो बनाकर निश्चित हो जाता है पर बंसती एक घायल शेरनी की तरह उसका बदला लेती है और इस काम में समाज भी उसका साथ निभाता है । कहानी में अजबलाल मास्टरने बंसती घायल है और उसका बच्चा निहत्था खड़ा ज़मीन को देख रहे सिक्के को देखता है तो वह कहते है कि -

"बेटे यह सिक्का मुझे दे दो, इस पर तेरी माँ का लहू है । उससे हम साथियों को लड़ने की ताकत मिलेगी ।"[51] लेकिन उस लड़के ने सिक्का देने के बदले उसे मुट्ठियों में भींच लिया और बोला - **"मैं किसी को नहीं दूंगा । मैं इससे बंदूक खरीदूंगा..... और महतो..... महतो....."[52]**

इस वाक्य में बच्चे की विद्रोह की भावना एवम् बदले की भावना स्पष्टत: दिखाई देती है जो समाज को चेतावनी भी देता है ।

❑ शवयात्रा :

कहानीकार - ओमप्रकाश वाल्मीकि

'शवयात्रा' कहानी में दलित व्यक्तिको जीवित रहने के लिए हंमेशा परिस्थितियों से जूझते रहकर झूठे आडंबरों का स्वीकार करना पड़ता है ऐसे चरित्रों के द्वारा कहानी के अन्य चरित्रों से तुलना कि जाए तो उच्चवर्ग के व्यक्ति अपनी मनमानी करने के लिए असुर बनकर बेबस-लाचार लोगों पर अपनी हकूमत को ठोंस करते रहते है ।

सुरजा एक दलित व्यक्ति है जो अपनी मातृभूमि को किसी भी हालत में छोड़ने को तैयार नहीं दूसरी तरफ उसका बेटा जो शिक्षित होकर शहर में आराम से नौकरी करके अपने परिवार के साथ सुख से रहता है जो चाहता है कि उसके पिता भी उसके साथ शहर में बस जाए पर पिता अपनी मातृभूमि को छोड़ना नहीं चाहते और गाँव में ही पक्का मकान बनाने को कहते है । बेटा भी अपने पिता की आज्ञा को मना नहीं कर सकता और उसका इंतजाम करता है पर दलित व्यक्ति तो अपने लिए सोचने को बाध्य है उसे तो रामजीलाला प्रधान की इज़ाजत

के बिना प्रक्का मकान बनाने की बात भी नहीं सोच सकता । प्रधानजी के डर से मकान बनानेवाले कारीगर भी सुरजा को मना कर देते है । इस विवाद के बीच में कल्लन की बेटी बहुत बिमार हो जाती है ओर उसे अस्पताल या डॉक्टर की ज़रूरत पड़ती है पर दलित के घर आने के लिए डॉक्टर मना कर देता है और सिर्फ दवाई देता है जिसका कोई भी असर न होने से कल्लन शहर के अस्पताल जाने के लिए सोचता है पर निम्न जाति का होने के कारण कोई उसकी मदद नहीं करता । कल्लन उसे गोद में उठाकर भागता है पर रास्ता लंबा ही लंबा लगता है । आखिर में कल्लन अपनी बेटी से हाथ धो बैठता है । वापस वह गाँव की ओर भागता है वहाँ आकर अपने आपको सिर्फ निम्न व्यक्ति ही पाता है और अपने परिवार के चारों व्यक्ति ही उसकी बेटी की शवयात्रा में जुड़ते है । इस घटना से कल्लन सोचता है कि दलित व्यक्ति का जीवन पशु से भी बदतर है और कहता है - **"कल्लन को लगा इंसान की 'जात' ही सब कुछ है ?"**[53] कल्लन का प्रश्न जैसे लेखक पूरे समाज से पूछते हो ऐसा लगता है जिसका उत्तर समाज से मांगते है ।

❐ अब नहीं नाचब :

कहानीकार - राम निहोर विमल

'अब नहीं नाचब' कहानी के द्वारा समाज में फैले हुए जातिवाद का विरोध दिखाते हुए समाज को चेतावनी दी है कि अब युग बदल गया है बीसवीं सदी के आगमन से युग का सूर्योदय होकर गाँव की अछूत झोंपड़ी के अँधेरे को हटाकर प्रकाश की किरणों को फैला रही है ।

कहानी तीन हिस्सों में बटी हुई है पर कथानक संक्षिप्त ही लगता है। कहानी में कन्हई भगत चमार जाति का है और समाज के रिवाज़ों के कारण अपने घर आए समधी के स्वागत में कुछ अनाज की जरूरत है इसलिए वह लेने जाता है पर शेरसिंह, विद्यासागर, पंडितजी के बीच हुई चर्चा में कन्हई को अनाज न देने का निर्णय होता है क्योंकि शुद्र को गेंहूँ जैसे अनाज खाने की योग्यता नहीं होती ऐसा मंतव्य उच्चवर्ग का है । कन्हई अनाज के बदले में वहाँ उससे काम करने को कहते है । कन्हई घर बैठे महेमान को छोड़कर उनका काम भी कर देता है । शेरसिंह बड़े अचरज से कहते है कि कुठिला के अंदर गेहूँ बोलता है कि - **"शुद्र के घर हरगिज नहि जइबे, भले कुठिला में सड़-धुन जइबे ।"**[54] इस बात को सुनकर पूरा दलित समाज इस अपमान के बदले की बात ठान लेता है और सारे समाज में बात फैल जाती है । शुद्रों ने संगठन बनाकर निर्णय लिया कि अब उनकें खेतों में हम हल नहीं चलायेगें,

उनकों हमसे माफी मांगनी पड़ेगी और निर्णय लिया कि - **"जब तक बाभन-क्षत्रिय लोग अपनी गलती मानकर, माफी मांगने के साथ ही चमारों को गेहूँ देने को राजी न हो जाए ।"**[55]

इस प्रकार शेरसिंह को जुकाकर अपना हक्क हासिल करते हैं । लेखक ने जातिवाद का विरोध करके अपनी लड़ाई स्वयं लड़ने की ताकत सारे समाज को परिचित कराया है ।

❐ जीवनसाथी

कहानीकार - प्रेम कपाड़िया

'जीवनसाथी' कहानी में एक सुखी परिवार किस तरह अपने ही रक्षणकर्ता के हाथों का खिलौना बनता है और जाति की जानकारी लगने से रक्षक किस प्रकार भक्षक का रूप धारण करता है ऐसे पुलिस ऑफिसर की मूर्खता के कारण गुन्हगार को प्रोत्साहित किया जाता है और उसका परिणाम एक सुखी परिवार भुगतता है क्योंकि वह केवल निम्न जाति के है ।

रेखा और प्रेम एक दूसरे से प्रेम करते है और शादी करते है । दोनों शहर से दूर होकर अपना बसेरा भी बनाते है पर वहाँ पर भी जाति का दूषण उनका पीछा नहीं छोड़ता और सबकी नज़रों में तुच्छ व्यक्ति गिने जाते है । घर के पास खड़े मवाली बीच रास्ते में रेखा का हाथ पकड़कर जबरदस्ती करके कहते है - **"चल बे चमार । दलितों की बीवी हमारी भी बीवी होती है ।"**[56]

इस व्यवहार की फरियाद जब प्रेम लिखवाने जाता है तो पुलिसवाला उसकी जाति जानकर उसे नगणय मानकर रिपोर्ट दर्ज करने से इन्कार कर देता है । इस प्रकार मवाली को बढ़ावा मिलने पर वो उन्हें अपनी हवस का शिकार बना देते है । इस घटना से प्रेम पागल होकर पुलिस और अपने आप पर गोली चलाकर दुनिया से आज़ाद हो जाता है ।

लेखक मानते है कि हमारा समाज प्राचीनकाल से लेकर आधुनिककाल तक गुण को न देखकर केवल जाति के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन करते है और निर्दोष व्यक्ति उसका शिकार बनता है और अपना सुख चेन गँवा देता है और सुखी परिवार नष्ट हो जाता है ।

☐ दाग दिया सच

कहानीकार - रमणिका गुप्ता

"दाग दिया सच" कहानी में जातिव्यवस्था के कारण दलित व्यक्ति पर होनेवाले अत्याचारों के विषय में लेखिका ने व्यंग्य एवं वेदना प्रकट की है ।

कहानी के चरित्र अलग-अलग जाति के है और दोनों प्रेम करते है, शादी भी कर लेते है । एक कुर्मी की लड़की है तो लड़का चमार है । गाँव के लोगों का विरोध होने के कारण महावीर मालती के कहने पर गाँव से भाग जाते है । कुर्मी जाति के लोग एक होकर महावीर के परिवार को बंदी बनाकर मारने को तैयार है और इस भय के कारण महावीर का भाई अपने भाई का पता बता देता है । वह न चाहकर भी अपने परिवार को बचाने के लिए अपने भाई की बलि चढ़ा देते है क्योंकि वह सोचता है कि - चारसों घर में कुर्मी की बस्ती में दस घर रविदासों के और पच्चीस तूरी लोगों के है तो मुकाबला करने में सक्षम नहीं है ऐसा सोचकर महावीर और मालती को गाँव ले आता है । गाँव के लोग महावीर और मालती को जानवर की तरह पीटकर मालती को नंगा करके जांधों में दाग दिए, महावीर को पत्थर से कुचल दिया । इस प्रकार दोनों की हत्या कर दी । इस सदमें से महावीर का पिता धोकर पागल हो जाता है और कहता है - **"हाँ ! वो मनुष्य नहीं जात थे । मनु की बनाई जात । जात जो मरने के बाद ही जाती है । वो हिन्दू थे - मनुष्य नहीं ।"**[57]

इस वाक्य के द्वारा लेखिका स्पष्टतः समाज की जातिव्यवस्था के दूषण पर प्रहार करके समाज को सोचने पर मज़बूर करते है कि मनुष्य् कैसे अपनी मानवता का धर्म भूल गया है ?

☐ आतंक

कहानीकार - राजेशकुमार बौद्ध

"आतंक" कहानी में दलित नारी पर होनेवाले अमानवीय अत्याचार को देखकर किस प्रकार समाज मूक बनकर तमाशा देखता रहता है तभी उसी समाज की एक अबला नारी उसका प्रतिकार करके दंड भी देती है जो काबिले तारीफ़ है ।

कहानी में चमन एक ठाकुर का लड़का है और राखी के बेटे को गाली देता है, कपड़े फाड़ देता है क्योंकि भली-भाँति जानता है कि वह दलित है । राखी का बेटा उसका सामना करता है इस हिंमत को बहुत बड़ा गुन्हा

समज़कर चमन ठाकुर राखी को नंगा करके सारे गाँव में घुमाता है पीटता है। उस पर बलात्कार किया जाता है यहाँ तक कि उसे जींदा जलाया जाता है और यह तमाशा सारा गाँव बूत बनकर देखते रहते है कोई उसका विरोध नहीं करते क्योंकि चमन ठाकुर के सामने आवाज़ उठाने का नतीज़ा राखी पर हुए अत्याचार को दोहराना ही होगा । परंतु राखी की देवरानी बिमला का आक्रोश बढ़ने पर वह घायल शेरनी फूलनदेवी और झलकारीबाई का रूप धारण करती है और राखी की लाश को उठाने से पुलिस को साफ इन्कार कर देती है । उसके पति पर भी चमन ठाकुर इस बात से अत्याचार करते है । पुलिस से की हुई जबरदस्ती में बिमला होशियारी से बोडीगार्ड की रिवोल्वर छीनकर भवानीपुर थाने में सात कत्ल में अपने आपकों गुन्हगार पाती है तभी वह सोचती है कि - **"जुल्म करनेवाले से जुल्म सहनेवाला ज्यादा गुन्हगार होता है ।"**[58]

उसे लगता है लाज शर्म तो जिस्म ढके रहने तक ही होती है । औरते नंगी हो या ढकी वह हंमेशा सबला ही होती है । इस प्रकार की मानसिकता का स्वीकार हरेक स्त्री और दलितवर्ग को करना चाहिए तभी वह शिर उठाकर मान से जीवित रह सकते है ऐसा लेखक कहानी के माध्यम से कह सकते है ।

❐ बलात्कारी

कहानीकार - रतन वर्मा

'बलात्कारी' कहानी से न्यायालय में किस प्रकार असत्य को ही स्वीकार किया जाता है और ठाकुर के हुकम को सराहकर एक दलित व्यक्ति की सच्चाई का विरोध करके उसे गुन्हागार साबित करके सज़ा भी दिलाने में न्यायालय की विजय ही सूचित करके दलित का दमन किया जाता है ।

दलित व्यक्ति अपने बेटे की जिद् को मानकर ठाकुर साहब से गिड़गिड़ाता है क्योंकि एक व्यक्ति को पढ़ने का अधिकार नहीं होता । जहाँ दलित पढ़ने जाते है वहाँ पर भी वह धृणा का पात्र बनता है । बिल्टुआ दलित है पर वह अपने पर हुए अत्याचार का प्रतिकार करता है और हेड मास्तर के सिर पर ईंट मार देता है । उसका पिता उसकी शिक्षा छुड़वाकर ठाकुर साहब से लाखों मिन्नते करने के बाद उनके वहाँ नौकरी पर लगा देता है । बचपन में ही उसने देखा था कि किस प्रकार उसकी माँ ठाकुर की वासना का शिकार रोज़ बनती थी पर उसका प्रतिकार करने के बजाय वह ईमानदारी से नौकरी करता है । बिल्हू की पत्नी सनेही जब ठाकुर की वासना

का शिकार होती है तो वह अपने आप पर काबू न रखकर ठाकुर की बहू के साथ जबरदस्ती करता है और चोरी-ड़कैती के जुर्म में कैंद भुगतता है क्योंकि सच्चे गुन्हा को बताना ठाकुर की बदनामी होगी । इसी बीच सनेही पर हुए अत्याचार को जानकर वह मन ही मन ठान लेता है कि - **"हवेलीवालो को बता देना चाहता था, वह किसी की इज्जत से खेलना सिर्फ ठाकुर नहीं जानते बल्कि 'छोटकन' भी जानते है ।"**[59]

बिल्टू की ऐसी सोच के कारण बिल्टू ठाकुर की बेटी पर बलात्कार करके शादी के लिए इक्ठा हुए लोगों के सामने बेटी को पटक देता है । जिससे वह सच्चे जुर्म में सज़ा काट सके और इस प्रकार अपनी पत्नी सनेही का बदला लेता है इस निर्णय से सनेही और स्वयं को खुश पाता है उसके मन में संतोष का भाव भी जागृत होता है क्योंकि वह समाज को बताना चाहता है कि हरेक व्यक्ति की इज्जत होती है कोई खेल नहीं ।

❑ षडयंत्र

कहानीकार - विपिन बिहारी

'षडयंत्र' कहानी पूर्णत: शीर्षक के अर्थ को साकार करती है । कहानी में जाति और निम्न जाति के बीच होनेवाले संघर्ष की कथा है । उच्च जाति के शिक्षित लोग किस तरह निम्न जाति के लोगों का शोषण करते रहते है । निम्न जाति को उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षक के दिए हुए ज्ञान से शोषितवर्ग प्रतिकार करके स्वयं अपनी दिशा चुनकर स्वयं ही अपना स्थान निश्चित करते है ।

कहानी में सरकारी स्कूल है जिसे न चलाकर सरकार की तनखा मुफ्त में खानेवाले लोग किस प्रकार दलितों का शोषण करते है । स्कूल का इंस्पेकशन आता है इसलिए वह अपनी नौकरी बचाने के लिए गाँव से छात्रों को एकत्रित करते है । इन्सपेकटर की कमज़ोरी से भलीभाँति परिचित होने के कारण उसे भी खुश करके स्कूल अच्छी तरह से चलता है ऐसा रिपोर्ट बनाते है । गाँव के दलित बच्चे इंस्पेकशन के बाद भी आते है पर उच्च जाति के शिक्षक को कतई पसंद नहीं की निम्न जाति के लोग पढ़-लिख लेगें तो अपने ऊपर हावी होकर राज करेगें । इसलिए वह उन्हें पढ़ाने से कतराते है यहाँ तक की एक छोटी-सी बच्ची सिरिया गोडाइन की बेटी निमिया को अपनी हवस का शिकार बनाते है पर दूसरे शिक्षक की चेतावनी के कारण वह छुप जाते है क्योंकि दुबें जानता है की उनके क्रोध से कोई बच नहीं सकेगा इसलिए अपने आपको बचाकर भागते

है कभी-कभी आते है । इस घटना के कारण धीरे-धीरे स्कूल की संख्या कम हो जाती है और एक दिन उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए एक हरिजन शिक्षक 'धनसेर राम' के समझाने से फिर से स्कूल शुरु हो जाता है । उनका मंतव्य है - **"न्याय लड़ने से मिलता है मांगने से नहीं । नहीं लड़ियेगा तो न्याय क्या बहुत कुछ नहीं मिलेगा ।"**[60] तभी से स्कूल चलने लगी पर मिश्रा, पांडे, दुबे के षडयंत्र से 'धनसेर राम' पर कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि आज पूरा गाँव उनके साथ है केवल उनके एक वाक्य के कारण - **"जब तक आप शिक्षित नहीं होईयेगा आप गूंगे है, बहरे है, अपंग है, अंधे है । ब्राह्मणों ने शिक्षा के बल पर ही समाज को सदियों से बेवकूफ बनाये रखा । जैसे चाहा अपनी मनमानी थोपता रहा । हम लोग को शुद्र बनाये रखा । तरह-तरह के नियम-उपनियम प्रतिपादित किए आज भी हम लोग शुद्र ही बने हुए है इसलिए कि हम लोगों के बीच शिक्षा का घोर अभाव है ।"**[61]

वे नहीं चाहते कि दलित वर्ग शिक्षित हो । लेखक ने जैसे अपने मन की बात 'धनसेर राम' के मुख से कहकर समाज में फैली जाति व्यवस्था का प्रतिकार करके लोगों को जागृत करने का प्रयास किया है ।

❐ इंकलाब जिन्दाबाद

कहानीकार - सत्यप्रकाश

सत्यप्रकाश जी ने आज़ादी के माहोल का निर्देश करते हुए समाज को सच्चाई से अवगत कराया है कि भारत के उच्चवर्ग के नामी लोग अभी भी गुलामी की कैद भुगत रहे है उनकी मानसिकता एक होकर अंग्रेजों से लड़ना नहीं पर अंदर ही अंदर खत्म होने की भावना है । वह दलितों का उपयोग केवल शोषण करने के लिए ही करते है । इसलिए वह नाम, शोहरत कमाने के लिए भारतवासी नहीं पर दलित व्यक्ति का बलिदान देकर लोगों के सामने सच्चे देशभक्त बनते है । जंटाशंकर और मुखियाँ उच्चजाति के व्यक्ति होने से उनकी मानसिकता ऐसी है कि वह निम्न जाति के लोग आगे चलकर अपनी प्रगति न कर सकें इसलिए वह किसी के जीवन को भी दाव पर लगा देते है जिसमें उसकी सोच इस प्रकार होती है - **"अगर बथुआ कल सरकारी स्कूल की इमारत पर तिरंगा फहराने में असफल रहा तो हम छोटी जात में यह संदेश पहुँचाने में सफल रहेगें कि स्वतंत्रता की लड़ाई या अंग्रेजी सरकार से लोहा लेना या कि संघर्ष करना इन लोगों के बश की बात नहीं है ।"**[62]

गांधीजी के आदेश को मान देकर स्कूल पर झंड़ा लहराने के लिए वह सुमरू चमार का लड़का बथुआ को चुनते है क्योंकि उसके बलिदान से वह स्वयं की नामना चाहते है । इस प्रकार से वह दलित युवक को मारकर अंग्रेजों से पुरस्कार प्राप्त करते है और अपने देशवासियों की नज़रों में सच्चे स्वातंत्र सेनानी का बहुमान पाने में कामयाब होते है । अंग्रेज भी भारतियों की इस सोच के कारण "फुट डालों और राज़ करों" की मानसिकता को मानकर अपने कार्य में सफलता को प्राप्त करते है ।

❏ इशारा

कहानीकार - स्वरूप - चंद्र

'इशारा' कहानी के प्रारंभ में ही लेखक ने कहानी के चरित्र से परिचय इस प्रकार किया है - "मद्धे पहलवान जाति का भंगी था "[63] इस वाक्य से स्पष्ट निर्देश होता है कि दलित व्यक्ति का जन्म हंमेशा शोषण को सहने के लिए ही होता है ।

मद्धे पहलवान का शोषण उसके उस्ताद ही करते थे उसने पहलवानी में जीते पुरस्कार वह हड़प लेता था यहाँ तक वह पहलवान को पेट भर पाए उतना उसका शोषण करता था । देश विभाजन के बाद वह अपना स्वयं का अखाड़ा खोलता है पर जाति के कारण वह असफल होता है और लोग कहते है - **"भाई अब तो भंगी भी पहलवान बनने की नकल कर रहे है ।"[64]**

अंत में बेकारी के कारण वह अपने जातिगत धंधे का स्वीकार करके परिवार को पालता है । धंधे की मज़ाक करनेवाले और जाति का अपमान करनेवाले बनिये से भी भीड़ जाता है और सफल होता है और कहता है कि वह अपने बेटे को पहलवानी में पारंगत करता है पर जाति के कारण उसका पुत्र अपात्र घोषित होता है इसलिए वह अपने क्रोध पर काबू नहीं रख पाता इस दौरान उसका परिवार सामाजिक, आर्थिक रूप से खत्म हो जाता है । उसे केवल एक ही रास्ता नज़र आता है और वह बदला लेने के लिए नरेन्द्रसिंह का खून भी करता है और बेटे कर्मा को बचाकर उसे अच्छा जीवन जीने की सलाह देता है ।

इस कहानी के माध्यम से लेखक कहते है - **"एक दलित, वह भी भंगे के लिए इस देश में 1950 तक कोई दूसरा धंधा सम्भव नहीं था ।"[65]**

इस वाक्य के द्वारा समाज की सोच का सच्चा निर्देश किया है

जिसमें दलित समाज के व्यक्ति की केवल उपेक्षा ही उपेक्षा थी और प्रश्न उठता है कि हमारा देश आज़ाद है या गुलाम ?

❒ अपना गाँव

कहानीकार - मोहनदास नैमिशराय

मोहनदास नैमिशराय की दलित कहानी 'अपना गाँव' में अस्सी बरस का हरिया अपनी बहू कबूतरी को जमींदार के बेटे द्वारा नंगा घुमाए जाने से सन्न हो जाता है लेकिन पथराता नहीं ।

वह इस भाग्य में लिखा मानकर भी चुप नहीं बैठता । बेटे को शहर से बुला भेजता है । लोगों को थाने भिजवाता है । पुनः थाने का जुल्म झेलते हुए भाई और बेटे को देखता है, फिर भी हिम्मत हारता नहीं हरिया । बिरादरी की पंचायत बैठती है । औरते भी शामिल है । **"उनकी बियरबानी (औरत) को भी वैसे ही नंगा करके घुमाएँ", इस प्रस्ताव को हरिया रोक देता है यह कहकर - "हमारी और उनकी बियरबानी क्या अलग-अलग है ?"**[66] हरिया विवेक नहीं गंवाता हरिया । "फसल जला दो । एक आवाज़ आई । अन्न को भी कोई तबाह करता है ?" हरिया के भीतर का अन्न उत्पादक बात काट देता है हरिया अस्सी बरस की उमर में भी हिंमत न हारकर कहता है - **"तो हम नया गाँव बसाएँगें ।" अन्ततः हरिया ने अपना फैसला दे ही दिया था । "नया गाँव और अपना गाँव ।"**[67]

बूढ़े जिस्म से भी विद्रोह की भाषा उभर रही है । इस दूसरी दुनिया के लोगों को सचमुच एहसास होने लगा है कि वे गुलाम है, इसलिए वे अब गुलाम न रहने का संकल्प लेने लगे हैं ।

❒ सपना

कहानीकार - ओमप्रकाश वाल्मीकि

ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखित कहानी 'सपना' मनुष्य की मानसिकता का कच्चा चिट्ठा खोलकर हमारे सामने रख देती है । एक उच्च वर्ण का व्यक्ति ऋषि जो आधुनिक विचार का होते हुए स्वयं ब्राह्मण होने के बावजूद वह संघर्ष करता है और अस्पृश्यता का विरोध करता है । दलितों द्वारा मंदिर निर्माण में विशेष पहलकदमी करने के बाद जब मंदिर तैयार होता है तो अनुष्ठान के वक्त व्यक्ति की जाति आडे आ जाती है और उनका स्थान

जाति के अनुसार जूतों, चप्पलों के आसपास निश्चित करने पर ऋषि के सख्त विरोध कष्टप्रद होता है ।

कहानी में मिलों तक फैला जंगल साफ करके कारखाने का निर्माण हुआ था । मध्यप्रदेश, बिहार और यू.पी. के मज़दूरों ने रात-दिन काम करके कारखाने की इमारतें खड़ी कर दी थी । जिसमें स्कूल, अस्पताल, बाज़ार, डाकघर, खेल के मैदान, कल्ब, सिनेमाघर आदि सभी सुविधाएँ जुटाई गई थी। गजानंद सदाशिव शिरोडकर प्रोजेक्ट अधिकारी थे जो बहुमुखी प्रतिभा के अधिकारी थे । शाम के वक्त पत्नी के साथ सड़क पर दूर तक टहलना शिरोड़कर की ख़ास आदत थी । टहलते-टहलते कॉलोनी से दूर हैवे तक निकल जाते थे । राष्ट्रीय सड़क मार्ग और शिरोड़कर के बंगले के बीच लम्बा-चौड़ा विस्तृत मेदान ख़ाली पड़ा हुआ था जिसे देखकर शिरोडकर के मस्तिष्क में कई प्रकार के विचार आते वह सोचते वहाँ बड़ा सा कॉलेज हो या कोई शोध संस्थान तभी पत्नी लंबे समय से उनकी सोच के बारे में देखे हुए सपने में सहाय करके कहती है कॉलोनी में सबकुछ है... लेकिन कोई मंदिर नहीं है। इस सपने को सच्च करने के लिए शिरोडकर ने समिति बुलाकर मंदिर निर्माण का काम शुरु किया । इस कार्यकर्ता में सर्वधर्म, सर्वजाति के लोग थे । मंदिर की प्रतिमा के प्राणप्रतिष्ठा में आमंत्रित तिरुपति के स्वामी आदित्याचार्य ने छूआछूत के भेदभाव की बहस छेड़कर कड़ी आलोचना की । तब ऋषि ने इस बात पर आक्रोश व्यक्त करते हुए नटराजन से कहा - **"तो यह बात है... मिस्टर नटराजन यह ज्ञान आपको ख़ून-पसीना बह रहा था, इस मंदिर को खड़ा करने में, तब आप नहीं जानते थे... कि वह एस.सी. है । तब आपने क्यों नहीं कहा कि जो एस.सी. है वह मंदिर के काम में हाथ न बटाये । इसके चुने-गारे में अपने जिस्म का पसीना न मिलाये । क्यों नहीं आपने ऐलान किया कि जो ईट किसी एस.सी. ने बनाई है या पकाई है, ट्रक में चढ़ाई है या उतारी है वे ईंटे इस मंदिर में नहीं लगेगी...[68] ऋषि ने पूरी शक्ति से विरोध किया ।**

गौतम जैसे अछूत के साथ किया गया व्यवहार दिखाकर लेखक ने ऋषि के आधुनिक विचारों को सराहकर सामाजिक अस्मिता को उजागर करने का प्रयत्न किया है । ऋषि उच्च्व वर्ण का होते हुए भी दलितों के उद्धार के लिए संघर्ष करता बताया है । ऋषि के आक्रोश से नटराजन अवाक् होकर ऋषि को कहता है कि तुम ब्राह्मण होने पर भी गौतम का साथ दे रहे हो, तुम समझने

की कोशिश क्यों नहीं करते । उसका जवाब देते हुए ऋषि कहता है - "हाँ ब्राह्मण हूँ... तो क्या इसलिए गौतम को पंडाल में सबसे पीछे बैठने के लिए बाध्य करूँ... नहीं नटराजन जी.... इस मंदिर को खड़ा करने में उसका भी हाथ है.... यह मंदिर उसका भी है... वह वहाँ से नहीं उठेगा, इतना समझ लीजिए नटराजन जी ।"[69] ऋषि ने कड़े शब्दों में ऐलान किया । यह सब सुनकर नटराजन के पीछे बैठे रामलोचन उपाध्याय ऋषि का विरोध करते हुए कहते है - "अरे, यह मंदिर उसका कैसे हो गया । ज्यादा ही पूजापाठ का शौक है तो अपना मंदिर बना ले अलग से । किसी ने रोका है । यह हमारा है । हम पूजापाठ अनुष्ठान अपने ढंग से करेंगे । उसमें किसी शुद्र या मलेच्छ का प्रवेश निषेध है ।"[70]

कहानी के अंत में ऋषि और गौतम को दंगा और तोड़-फोड़ करने के आरोप में पुलिस ने गिरफ़तार कर लिया । इस कहानी के माध्यम से ओमप्रकाश वाल्मीकि ने पूरे भारत में दलितों के ओमप्रकाश मंदिर प्रवेशनिषेध की समस्या को उठाया है ।

(आ) गुजराती दलित कहानियाँ

कहानी	लेखक
❒ बदलो	दलपत चौहान
❒ सोमली	हरिपार
❒ दायण	हरीश मंगलम्
❒ नकलंक	डॉ. मोहन परमार
❒ रखोपाना साँप	अरविंद वेगडा
❒ कुळदीपक	शैलेषकुमार क्रीस्टी
❒ सूरज ने कहो उगे नही	राघवजी माधड
❒ रामराज्य	जोसेफ मेकवान
❒ मारे चा पीवी नथी !	मंगल राठोड
❒ सरनामु	बलदेव पटेल
❒ जात	दशरथ परमार
❒ रेशनालीस्ट	डॉ. कल्याण वैष्णव
❒ रोटलो नजराई गयो !	जोसेफ मेकवान
❒ लोहीनी लागणी	डेनियल मेकवान
❒ सगपण	प्रज्ञा आ. पटेल
❒ थळी	डॉ. मोहन परमार
❒ लाखु	मधुकांत कल्पित
❒ ढोल वाग्यो	प्रो. एम.वी. परमार
❒ मारण	रमेश देवमणी
❒ ढोलनी दांडीए	शैलेष एम. परमार
❒ कदाच	स्वप्निल मेहता
❒ डंख	वशराम दाफडा
❒ वळगाड	मावजी महेश्वरी
❒ टेस्टट्यून बेबी	प्रवीण गढवी
❒ वादळ साथे वातो करती पाईलट पंड्या	मनीष जानी
❒ दाढ़	मनहर रवैया
❒ जीत	इन्दु राव
❒ चबरखी	चंद्राबहन श्रीमाली
❒ जटायु	बलदेव पटेल

गुजराती दलित कहानियाँ :

❑ बदलो

कहानीकार - दलपत चौहान

दलपत चौहान कृत 'बदलो' कहानी का शीर्षक व्यंग्यात्मक एवं ध्वन्यात्मकता स्वयं स्पष्ट दिखाई देता है । इस दलित कहानी के द्वारा लेखक ने उच्चवर्ण और निम्नवर्ण की तुलना करके दर्शाया है कि वर्ण के आधार सोचना गलत है क्योंकि केवल वर्ण मनुष्य की पहचान नहीं होती उसके कर्म ही उसके वर्ण का प्रतिबिंब कराते है ।

कहानी के प्रथम दृश्य में दिखाया है कि भूख से तड़पते हुए माधुसंग की मदद गोकुल करता है तो दूसरे दृश्य में कुछ विरोधाभास महसूस होता है जिसमें माधुसंग का बेटा वेजेसंग शराब के नशे में धूत बनकर हेवान बनकर गोकुल को जानवर की तरह पीटता है केवल कारण यह था कि गोकुल खड़ा होकर उसे मान देने में सक्षम न था इसलिए वह कहता है -**"स न दियोर आ पडी ऐट ल नेच हूता, नकर चेवा खाटले हूता... हूता... डोडवो हलावताता ? दियोर ढेडा, ओनथी ज सीधा ।"**[71]

इस घटना को देखते ही लगता है कि मनुष्यता और हेवानियत कौन से पात्र में निहित है । कहानी में वजेसंग की हेवानियत देखते है तो प्रश्न उठता है कि मनुष्यता ऊँचेवर्ण में निहित है यह सच नहीं पर गोकुल के चरित्र पर दृष्टि करते है तो दलित जाति का होने के बावजूद भी उसमें मनुष्यता का पूर्णतः दर्शन होता है जो वजेसंग में नहीं । इसलिए तुलना के आधार पर देखे तो वजेसंग अछूत है गोकुल नहीं !

❑ सोमली

कहानीकार - हरिपार

हरिपार लिखित 'सोमली' कहानी स्त्रीमुक्ति आंदोलन की दृष्टि से नारी शक्ति का प्रतीक स्वरूप है । सोमली, उसका पति, बेटा, बहू आदि पर होनेवाले सरपंच के अत्याचार से समाज को वाकेफ करवाती हुई सोमली अदालत में कहती है - **"आज़ादी सेने ते फक्त उजळियात कोम माटे से: अमारा माटे नथी । जेने मळी ओहे ते लोको खूस ओहे ! गामडामां अरजिनवास अने आदिवासीओनां झूंपडामां खरी आज़ादी हुं से ते देखाई ।"**[72]

इस सच्चाई को बताते हुए उसके ऊपर हुए अत्याचार का ब्यौरा देते हुए सरपंच ने उसे और उसके परिवारवालों को किस प्रकार अपनी हवस का शिकार

बनाया और उसके बदले में बहू को उसी घटना का पुनरावर्तन न हो इसलिए सोमली सरपंच को मौत के घाट उतार देती है, जिसमें न्यायाधीश का फेंसला सचे अर्थ में 'सत्यमेव जयते' है । जो इस प्रकार है - **"सोमली अने ऐना कुटुंब पर थयेला अत्याचार जोता हुं ऐम मानुं छुं के सोमली नी जग्याए कोई बीजी बाई होत तो तेणे पण ते ज कर्युं होत के जे सोमलीए सरपंचनुं कर्युं ते । समाजना साधनसंपन्न उजळी गणाता लोको, गरीब, गमार, अभण, हरिजन, आदिवासीओने रंजाडवा कोई पण मोको जतो नथी करता, ऐ आपणी आज़ादी माटे काळो धब्बो छे ! आज़ादी पछी पण समाजनो अमुक वर्ग गुलाम तरीके ज जीवे छे ऐ पण आपणा माटे करुण कथनी छे ।"**[73]

❑ दायण

कहानीकार - हरीश मंगलम्

हरीश मंगलम् कृत 'दायण' कहानी एक दलित नारी बेनीमा की है जिसमें छुआ-छूत के जमाने में सवर्ण स्त्री पशी को बेनीमा पशली कहकर अपनी साहजिकता दिखाते है जो सहर्ष स्वीकृत भी है । इस स्वीकार का कारण केवल उनका पेशा जो माँ का दर्जा दिलाने में हिंमत और मदद करता है । पशी को माँ का दर्जा देनेवाले बेनीमा ही है, इसलिए पाठक का ध्यानाकर्षित होता है । ऐसी बेनीमा जो लोगों की सेवा के लिए अपने महत्वपूर्ण हज़ार काम की परवा किए बिना दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहती है ऐसी बेनीमा को समाज किस तरह 'अछूत' कह सकते है । एक तरफ पशी जिसे बेनीमा की काबिलियत के कारण माँ का पूजनीय स्थान प्राप्त हुआ है ऐसी पशी जब अहेसान फरामोश हो जाती है और अपने फूल से नादान बेटे को कहती है - **"जो जे कीकला....बेनीमा ने अडतो !!!"**[74] इस वाक्य को नज़र अंदाज करनेवाले विशाल परोपकारी हृदयवाले बेनीमा जवाब में कहते है - **"हारु बै, हुं जाऊ ताण ।"**[75] ऐसी स्वस्था बताकर लेखक ने कहानी को चरमसीमा पर पहुँचाकर प्रश्न उठाया है कि इसमें समाज की बताई वर्णव्यवस्था के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन क्या सहीं है ? समाज किस पात्र को अस्पृश्य मानेगा ? पशी को या बेनीमा को जिसमें मानवता पूर्णतः भरी है । लेकिन पशी जो मातृत्व धारण करने से पहले व्यथित पशी दोनों में अंतर है क्योंकि पशी भलीभाँति जानती है की कीकला ने जब पृथ्वी पर पहली साँस बेनीमा के हाथ पर ली थी पर समाज की वर्णव्यवस्था मनुष्य को मनुष्य न बनाकर अंधकारमय वातावरण में ले जाता है ।

❐ नकलंक

कहानीकार - मोहन परमार

'नकलंक' कहानी में मोहन परमार ने वर्तमान परिप्रेक्ष को ध्यान में रखते हुए सूक्ष्म मनोव्यथा और सामाजिक संवादिता को केन्द्र में रखकर उर्ध्वगामी व्यक्तित्व का परिचय दिया है । सामान्य रूप से हम किसी व्यक्ति के चरित्र का आधार उसकी जाति, कुल या गोत्र के हिसाब से करते है ऐसी ही सोच उच्चवर्ग के मन में होने के कारण उन्हें तो दलितों का कोई चरित्र नहीं होता ऐसा मानकर वह उन पर मानसिक और शारीरिक अत्याचार भी करते रहते है ।

इस कहानी की नायिका दिवा मन में छात्रावास्था के समय कांति के प्रति आकर्षित थी उसे वह भूल नहीं पाती है इस स्थिति से कांति भी वाकेफ है पर मौका मिलने पर भी वह उसका दुरुपयोग नहीं करता । उसे लगता है कि देह की वासना से बढ़कर समाज की अस्मिता को उजागर करना ही उसका प्रयत्न है तो दूसरी तरफ मुखी के भाई सेंधा ने दीवा को अपनी वासना का शिकार बनाकर अपनी कुलीनता को दिखाकर समाज को प्रश्न किया है अछूत कौन है ? जाति या व्यक्ति ? इसका मुँह तोड़ जवाब कांति का जीवन और आचरण है जो क्षणिक सुख के सामने अपने समाज की प्रतिष्ठा को देखता है और सोचता है कि - **"कदाच आ गामनी शांति गणाय तेना कारणरूपी हुं तो नहीं बनुं ने ?"**[76]

वहाँ मुखी के भाई की मनोदशा कितनी निम्न है उसे भी लेखक ने दिखाने का प्रयत्न किया है । सिर्फ निम्न जाति के लोगों में कलंकित होना लिखा नहीं है जिसके मनमें किसी भी प्रकार की बुराई स्वार्थ और अनीति का विचार भी न हो ऐसे निष्कलंक चरित्र सिर्फ दलितों में ही उपलब्ध है ।

❐ रखोपाना साँप

कहानीकार - अरविंद वेगड़ा

'रखोपाना साँप' कहानी वर्णभेद की समाजव्यवस्था की अगनज्वाला में जलनेवाले दलितों की दयनीय और व्यथित कथा का निरुपण किया गया है । एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं को देवता मनवाने के लिए मज़बूर करके अपनी सच्चाई को दिखानेवाला जीलुभा इस कहानी में एक भक्षक के रूप में है । इस कहानी का दूसरा पात्र वीरजी जो पिता के कर्ज़ को चुकाने के लिए जीलुभा की गुलामी करता है । वीरजी की इस परिस्थिति का शिकार स्वयं तो है ही पर उसकी पत्नी रूड़ी और उसकी माँ भी है इस कहानी में दिखाई गई

परिस्थिति सदियों से दलित वर्ग सहते आए है । रात-दिन मज़दूरी करके कर्ज चुकाते चुकाते उसका जीवन भी नर्क समान बन गया है । रूडी नववधू के रूप में हमारे सामने आती है इसलिए वह मनमें कुछ सपने लिए आती है पर ससुराल आते ही वह भी जीलुभा की गुलामी का शिकार बनती है और उसके सपनें चकनाचूर हो जाते है । जीलुभा उसके अप्रतिक सौंदर्य को अपनी वासना के ज़हर से दस लेते है जो साँप से भी झहरीला दिखाया गया है ।

कहानी के अंत में वीरजी के अंतकाल के बाद का दयनीय दृश्य इस तरह है - **"वीरजीना कपाळ पर हाथ मूकी वीरजीनी मा रडतां-रडतां बोली रही हती, मारा वीराने शुं आभडी गयुं ?"**

काया ने संकोरती रूडी हळवे-हळवे खाटला पासे आवी, एटलु ज बोली शकी -

"रखोपाना साँप"[77]

❐ कुळदीपक

कहानीकार - शैलेषकुमार क्रीस्टी

'कुळदीपक' कहानी में दलितनारी की विवशता को दिखाया गया है। स्वयं को बेचकर अपने पुत्र के लिए दवाई के प्रबंध की कोशिश में वह अपने कुल के दीपक को स्वयं ही बुझाने का कारण बनती है । स्वयं को मारकर अपने पुत्र को जीवंत रखने का प्रयास ही उसके पुत्र के मृत्यु का कारण बन जाती है । बेटे की बीमारी के इलाज के लिए स्वयं को बेचनेवाली दलितनारी सवली की कहानी का अंत उसके बेटे के मृत्यु के कारण करुण बन जाता है जिसमें लेखक ने स्त्री की विवशता को दिखाया है कि उसका पति मुंबई में रोज़गार के लिए गया है उसे याद करती उसके इंतज़ार में वह घर के दीपक को बचाने के लिए विवश होकर ऐसे नशे में धूत हेवान के हाथों अपने आपको सोंपकर पछताती है । उसे डर है कि वह अपने आपको न बेचती तो उसका कुलदीपक बूझ जाएगा उसीको प्रज्वलित करने की कोशिश में वह स्वयं को जला देती है । लेखक ने ऐसी विवश स्त्री के चरित्र द्वारा समाज के उस अमीर वर्ग पर अंगूलिनिर्देश किया है जो अपनी हवस को संतोषने के लिए किसी माँ को भी विवश कर सकते है ऐसे व्यक्ति समाज में मुखौटा पहनकर अपनी वाह-वाह करवाते रहते है ।

❒ सूरज ने कहो उगे नहीं

कहानीकार - राघवजी माधड

राधवजी माधड कृत 'सूरज ने कहो उगे नही' कहानी में सवर्णो के द्वारा हुए अत्याचार का बहिष्कार करनेवाले एक व्यक्ति की वेदना को प्रस्तुत किया है । वशीया एक दलित व्यक्ति है जिसे सरकार द्वारा ज़मीन मिली है पर ज़मीदार उसे हथिया लेना चाहता जिसका वशीया डंटकर मुकाबला करता है और कहता है - **"जमींदार आवे छे... जुऐ छे । पण हवे मडदांने वीजळीनी बीक शेनी ?"**[78]

कानून की सहायता मिलने पर वशीया ने जो अपने खेत में कड़ी मेहनत और लगन से तिल लहराते हुए देखता है और खुश होता है किंतु समाज के ठेकेदार उसमें आग लगाकर अंधकार का साम्राज्य फैलाते है तब वशीया की परिस्थिति इस प्रकार होती है -

"नईई... नईई... तेनाथी छानीफार चीस नखाई जाय छे । गांडानी जेम आखा खेतरमां दोडवा लागे छे । एक छोडवाने बूझाववा फूंक मारे ! पोते दाझे.... भागे.... दोडे.... बराडा पाडे..... सळगताने बाथ भीडे.....

अने तळ सळगे ऐ पहेला वशीयो सळगी जाय छे । फसडाई पडे छे... जमीन माथे ।"[79]

इस परिस्थिति को देखते हुए लेखक ने सूरज को न उगने के लिए उपालंभ दिया है ।

❒ **रामराज्य**

कहानीकार - जोसेफ मेकवान

'रामराज्य' कहानी में जोसेफ मेकवान ने राजनीति पर करारा व्यंग्य किया है जो मुखी से लेकर मंत्री के द्वारा होनेवाले अत्याचार की कथा है । मुखी एक छोटी सी बात के लिए करमला को पशु से भी हिन समझकर उसे भरे बाज़ार में जानवर से भी बदतर तरीके से पीटकर जूता उसके मुँह में डालकर उसे कस्बे तक मारते ले जाते है केवल उसका दोष था कि उसके बनाए हुए जूते से मुखी के पैरों में चोट आई थी ।

दूसरी घटना में गाय की हत्या करके अंगूठी निकालते वक्त करमला उस मौके का फ़ायदा लेकर मुखी के अत्याचार का विरोध करते हुए मुखी को

चेतावनी देकर उसका बदला लेते हुए कहता है - **"ते दा'डे ते मन मोंमा ख्राहडुं घलायु' तु न' ऊ तारा जेवा नपावटय नई थव, तु मोंमा तैणां ले !" मुख्रीऐ मोंमा तरणा लीधा । 'अ'व वातनी वात हामरी ले । वेंटीनी जेमळ तथ टीप्यों ऐ वात बारसलाख्र मारा पेटमां घरबई रे'शे । धरपत्यं राख्रजे, गामधणीनी आबरू न ऐट्य अकबंध रे'वा जोवे, ऐ रे'रो !"**[80] गाय को मौत के घाट उतरनेवाले मुखी को उसी प्रकार मारता हुआ ले जाता है ।

तीसरे दृश्य में बाढ़ के आने पर सवर्ण लोगों की नज़र टीले पर बिगड़ती है तो उसको भी करमला बड़े हिम्मतपूर्वक विरोध करता है जिसमें सरकार द्वारा लगाई हुई कँाटे की दिवार को हटा देता है और अंतिम समय में इस प्रकार सरकार और मुखी का विरोध करते हुए दुनिया से दूर चलने की तैयारी करता है जिसका परिणाम उसके बेटे भुगतते है और वह स्वयं भी । सरकारी रोक का विरोध करने के अपराध में पुलिस उसके तीनों बेटों को गिरफ़्तार करके ले जाती है और वह - **"न छते दीकरे परभार्यानी कांधे चडी ने करमलो स्मशान सीधावतो हतो ने ऐनी पाछळ 'राम क्यो, भई राम झीलातु हतु त्यारे कूंड तूट्याना समाचार सांभळी उजळियात तालीओ लेता हता : आनु नाम रामराज्य !"**[81]

लेखक का व्यंग्य है की एक दलित व्यक्ति अपनी रोज़ी की लड़ाई में स्वयं की आहुति देता है यहाँ तक उसका परिवार भी कम नहीं उतरता पर उच्चवर्ण अपनी मनमानी कर ही लेते है भले ही किसी व्यक्ति का कुछ भी नुकशान हो जाए ।

❑ मारे चा पीवी नथी !

कहानीकार - मंगल राठोड

"मारे चा पीवी नथी !" में मंगल राठोड ने जीवा के माध्यम से नवयुग की हवा में साँस लेनेवाले एक स्वाभिमानी व्यक्ति के विद्रोह की अभिव्यक्ति है ।

गाँव के दरबार (बापु) के बेटे की शादी की ख़ुशी में स्वयं के घर पर नहीं पर अपने नोकर भीखा के घर चाय पिलाने की व्यवस्था से जीवा ख़फ़ा है इसलिए जीवा उस निमंत्रण का अस्वीकार करके अपने समाजबंधु को बताता है कि - **"दरबार ना दीकरा ना वेविशाळ थयानो प्रसंग होय ने आख्रा गामना**

लोकोने, वाणिया, बामण, राजपूत, सई सुथार, सोनी, मोची, लुहार, कुंभार, कडिया, कारीगर ऐ सौने पोताने त्यां बोलावीने चा पीवडावी ने मों मीठा कराव्या ने आपणने ज केम ना बोलाव्या ? शुं आपणे माणस नथी ? शुं आपणे हिंदू नथी ? आपणी ज साथे आवो भेदभाव केम ? आपणने बधाने चा पीवडाववी ज होय तो ऐने बोलावे ने प्रेमथी, सन्मानथी चा पीवडावे... आपणे त्यां दीकरा - दीकरीओना शुभ काम होय छे ने आपणे बोलावीए छीअे तोय ए लोको आपणे त्यां आवता नथी । ने अेमने त्यां आपणने बोलावता नथी ।"[82]

इस प्रकार अपने विरोध के कारण को बताकर अपने समाजबंधु के सामने खुला रास्ता छोडता हुआ कहता है - "**जे प्रजा एक रकाबी चा पण जती करवा माटे तैयार न होय पोताना स्वमान खातर, ए प्रजा शुं करी शकवानी ?**"[83]

इस प्रकार चाय न पीकर सामाजिक अस्मिता को उजागर करते हुए बापू की शान ठिकाने लाने का सफल प्रयत्न किया गया है ।

❐ सरनामु

कहानीकार - बळदेव पटेल

बळदेव पटेल कृत 'सरनामु' कहानी में जातिवादी मानसिकता के शिकार बने हुए शिक्षित समाज का पर्दाफाश किया है । कहानी की नायिका 'आरती' एक उच्चकुल की स्वतंत्र विचारवाली अपना भला-बूरा समझनेवाली, अपनी जिंदगी का निर्णय लेने में सक्षम होते हुए भी जातिवाद का शिकार होकर एक तेजस्वी विद्यार्थी 'अरूण' को सिर्फ जाति के कारण अपनी विद्वता से वंचित कर देती है और उसे अपने घर पढ़ने आते हुए रोककर मना भी कर देती है ।

'आरती' को जब पता नहीं था की 'अरूण पंडया' एक दलित बच्चा है तो उसके इतज़ार में आँखे बिछाई रहती थी यहाँ तक कि 'अविनाश' जो उसकी ही जाति का होने के बावजूद शादी के प्रस्ताव को भी ठुकरा देती है । लेकिन जब उसे सच्चाई का पता चलता है और वो अरुण का पता पूछती है तो अरुण कहता है - "**हाँ मेडम ! अमे ब्राह्मण तो खरा ज ! पण अ... मे... अमे वणकरों ना गरोड़ा ब्राह्मण ।**"[84]

इस वाक्य से आरती की मानसिकता के कारण कहानी एक नया मोड़ लेती है और इसी मोड़ के आधार पर लेखक समाज के शिक्षित वर्ग की

घटियाँ सोच पर प्रहार करते है कि किस प्रकार एक निर्दोष बालक वर्णव्यवस्था का शिकार बनकर अपनी प्रगति से वंचित रह जाता है ।

❒ जात

कहानीकार - दशरथ परमार

'जात' कहानी में दशरथ परमार ने धार्मिकवाद और जातिवाद दोनों को लेकर अपना विचार प्रकट किया है । गाँव की धार्मिक प्रवृति में जिस जाति का विशेष प्रदान है उसे जाति के कारण उस उत्सव से बेदखल कर दीया जाता है यहाँ तक उनके द्वारा बनाएँ हुए मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाने का हक दरबार का है इस बात का विरोध करते हुए कनुभै कहते है - **"मंदिर आपणुं ने नेजो ए लोको चडावी जाय ए केम चाले ?"**[85]

इस बात को सहमति देते हुए सभी एक होकर इस रिवाज़ का विरोध करते है जिस प्रकार भूतकाल में किया था । लेखक ने इस विरोध में दोनों जाति के विरोध होने के बावजूद भी समय को देखते हुए "हम सब एक है" की भावना को जागृत किया है और मुट्ठी की ताकत को निर्देशित करके हमें अवगत कराया है कि हम एक होकर कोई भी विकट परिस्थिति का सामना कर सकते है । एकता के बल पर वचन की लाज बच जाती है एवम् समाज में फैले जातिवाद का प्रश्न भी खत्म हो जाता है क्योंकि भूतकाल में घटित घटना के आधार पर उच्च जाति के लोग उनका विरोध करने में अपने आपकों सक्षम नहीं समझते पर कुशलतापूर्वक सही फेंसले के द्वारा जीत को हांशिल करने की जयकार भी धार्मिक बोल में -

"जोयु काका । अंते गमे तेम तोय जात तो आपणी एक ज ने ?" पछी खभे रहेला नेजा सामु जोयुं वहेली सवारना सूरजना किरणों पडवाने लीधे नेजाना विविध रंगो एकबीजामां भळी जता हता । पाछळ टोळामांथी को'क बोल्युं : **"बोलो, रामापीर की......."**[86]

इस प्रकार समाज को जागृत करने का लेखक का सुंदर प्रयत्न है ।

❒ रेशनालीस्ट

कहानीकार - डॉ. कल्याण वैष्णव

डॉ. कल्याण वैष्णव निर्मित 'रेशनालीस्ट' कहानी में गुरु और शिष्य के माध्यम से समाज को एक नयी दिशा का निर्देश किया है । कहानी का नायक 'किशोर' ग्राम्य परिवेश से आया हुआ एक दलित लड़का है । एक शिक्षक

समाज को दिखाना चाहते है कि शिक्षक का कर्तव्य केवल विद्यार्थी को सच्ची दिशा दिखाना ही है जो काम डॉ. महेता करते है । डॉ. मेहता के पात्र द्वारा लेखक ने समाजव्यवस्था का शिकार किशोर है पर डॉ. महेता के प्रयत्न से वह बच जाता है । डॉ. मेहता उसकी जाति को नहीं उसकी काबेलियत एवं योग्यता को सराहते है । 'किशोर' की भूतकाल की बातों के आधार पर लेखक ने दिखाया है कि किस प्रकार वाणी स्वातंत्र्य का अधिकार और कला का अपमान सहकर किस प्रकार जीते है इसका जीवंत चित्रण प्रस्तुत करने में भी कामयाब हुए है - **"बालुजी" के शब्द - "बंध करो ल्यों आ तायफो... मनअ.... पूछया वना आ ढोल च्यम वगाडयो.... अल्या.... मारी रजा लीधा वना तु खेल हो ना कर.... तु गामनो धणी थई ज्योस्... आज तो आ तलवार थी तन... कापी ना खावोसे एटले फरी आयंकन खेल थाय नहिं ।"**[87]

इस वाक्य के आधार पर "बालुजी" की तानाशाही का अंदाजा लगा सकते है और 'भीखले' के भागने की क्रिया से ज्ञात होता है कि निम्न जाति के व्यक्ति का शोषण किस हद तक होता है कि केवल ढोल बज़ाना वह भी खेल दिखाने के लिए जिससे वह अपने परिवार का पालन कर पाए पर इसके लिए उसे मोत की सजा भी मिल सकती है पर हमारा समाज मूक और अंध बनकर तमाशा देखते रहते है पर डॉ. महेता जैसे व्यक्ति ही मानवता को जीवंत रखते है ।

❑ रोटलो नजराई गयो !

कहानीकार - जोसेफ मेकवान

जोसेफ मेकवान द्वारा लिखित कहानी में शहर की शान-सोकत के कारण एक गरीब बालक किस प्रकार अपने आपको संभालने में नि:सहाय होकर गुन्हा की राह को चुनने के लिए मज़बूर हो जाता है ।

'रघु' एक गरीब परिवार का लड़का है जो अपने परिवार को भविष्य में सुखी करने के लिए शहर की स्कूल में जाता है पर गरीब परिस्थिति होने के कारण वह स्कूल में सभी बच्चों के हास्य और धृणा का पात्र बनता है । उसके टीफीन में रखी मोटी रोटी (रोटलो) उसकी गरीबी का सीधा प्रतिबिंब बनता है और बच्चों के हास्य का पात्र बनता है और बच्चे उसे कहते है - **"दूर हठ ! आघो खस... तु अमारी बरोबरीनो नथी । तु अमारी वच्चे शानो आवे ? तारो गंधातो रोटलो जोईने अमने बकारी चडे छे ।"**[88]

रघु और बच्चों के टिफिन में रखी चीजों और पकवानों से मोहित होकर चोरी करने के लिए विवश हो जाता है किए हुए गुन्हा की सज़ा में मिन्टु के पप्पा प्रिन्सीपाल से रघु को स्कूल से रस्टीकेट करने की सलाह देते है ।

यहाँ पर हमारा सुखी संपन्न वर्ग के व्यक्ति तुरंत गरीबों को सजा देने के लिए उत्सुक होते है पर उस व्यक्ति ने यह गुन्हा किस मज़बूरी में किया है उस पर विचार न करके गरीब रघु को गुन्हागार बनाने की कोशिश में लगे रहते है ।

❒ लोहीनी लागणी

कहानीकार - डेनियल मॅकवान

"लोहीनी लागणी" कहानी में लेखकने समाज में फैला जातिवाद का आतंक पूरे समाज में है । जिसे रोकने का प्रयास नाकामयाब हुआ है । लेखक ने अपनी कहानी में "जेठा" के पात्र द्वारा मानव हृदय के अंदर छूपे भाव को प्रकट करके समाज की वर्णव्यवस्था पर व्यंग्य किया है ।

कहानी का मुख्य चरित्र 'जेठो' एक दलितवर्ग का गर्म खूनवाला नवयुवक है जो उच्चवर्ण के लोगों द्वारा किए हुए अपमान को संघर्ष करके सामना करता है । 'कुबेर की बेटी' 'मंगु' 'दिलपा' की हवस का शिकार बनते-बनते रह जाती है क्योंकि वह हिंमतपूर्वक उसके पंजे से छुटकर पूरे परिवार समेत गाँव छोड़कर जाने का निर्णय लेते है । पर उसी रात दरबार के लोग अपना बदला लेने के लिए कस्बे को जलाने के लिए आते है तब 'जेठों' हिंमतपूर्वक उनका सामना करने को तैयार हो जाता है और इस हिंमत को देखकर पूरा कस्बा भी इस लड़ाई में उसका डंटकर मुकाबला करके साथ देने के लिए तैयार हो जाते है । 'जेठा' इस घटना के बाद ठान लेता है कि अब वह अपना शोषण नहीं होने देगा बल्कि वह 'भलसंग' की बहन 'संतोक' का अपहरण करेगा । तभी उसके मित्र दिनिया द्वारा कहा गया यह वाक्य - **"जेठा ! हलकुं एटले हलकुं ! आ लोही क्यारेय भारे नहीं थाय ।"**[89]

पर जेठा उसकी बात न समझकर उसका विरोध करके अपने इरादे को दृढ़ कर देता है और उस पल के इंतजार में रामपुरी छुरी की धार को रोज़ छुकर अपमान की आग से तेज़ करता है उसे मौका मिलने पर 'जेठा' कुशलता से कार्य पूर्ण करने जाता है पर 'संतोक' पर दो अनजाने व्यक्ति की हवसभरी

आँखे पड़ने से संतोक 'जेठा' की मदद लेने के लिए विश्वासपूर्वक उसका सहारा लेती है जेठा भी उसके विश्वास को निभाते हुए घायल हो जाता है और अपने गाँव की इज़्ज़त को बचा लेता है । तभी दिनिया से बात करते समय जेठा कहता है - **"दिनिया ! तु हाचो ! आमेय आपणु लोई अलकु ते अलकु ज बीजुं थायेय शुं !"**[90]

इस संवाद के द्वारा लेखक स्पष्ट करते है कि इस घटना में अगर कोई उच्चवर्ग का व्यक्ति होता तो संतोक की जगह कोई दलित स्त्री होती तो उसे बचाना तो दूर की बात है वह तो उन हवसखोरों का साथ देता क्योंकि उनका खून तो भारी होता है इसलिए मंगु को हवस का शिकार बनाने की कोशिश की गई । वह कभी अपना निर्णय नहीं बदलते वह काम तो केवल हलके खून के दलित व्यक्ति ही कर सकता है वही किसी की जींदगी बचा सकते है ।

❒ सगपण

कहानीकार - प्रज्ञा. आ. पटेल

'सगपण' कहानी में दीन-हीन लाचार व्यक्ति किस प्रकार परिस्थिति का शिकार बनता है और उस पर हुए जुल्म के कारण अपना सारा जीवन सजा के रूप में भुगतता है ।

कहानी का पात्र 'रूडिया' 'मणकी' दोनों के बीच पवित्र प्रेम था । मणकी का पिता भी उस प्रेम को विवाह के बंधन में बांधने को उत्सुक था पर तकदीर को कुछ ओर ही मंज़ूर था । मणकी और रूडिया दोनों पिक्चर देखने जानेवाले थे उसी दिन अस्पताल के डॉक्टर द्वारा मणकी उनकी हवस का शिकार बनती है जिसमें उसकी मोत हो जाती है । इस घटना के आघात से रूडिया अपने आप पर काबू नहीं रख सकता और पागल हो जाता है । मणकी के पिता भी रूडिया की इस परिस्थिति के कारण अपने आपको स्वस्थ रखकर रूडिया का लालन-पालन करने में ही अपना जीवनमंत्र ढूंढ लेते है पर उन्हें अफसोस तो तब होता है जब वह नर्स शारदा से बात करते है तो कहते है - **"तमे, तमे बधांए मने रोकयो... दवाखानानी आबरुना नामे, मारी छोडीनी ने मारी आबरुना नामे.... मने छेतर्यो...।"**[91]

इस वाक्य में मणकी के पिता की वेदना है और स्पष्ट दिखाया है कि

निर्दोष और गरीब लोगों को किस प्रकार उनकी नि:सहाय परिस्थिति के कारण दबोचा जाता है जिसकी पीड़ा वह स्वयं ही भुगतते है ।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

❐ थळी

कहानीकार - डॉ. मोहन परमार

डॉ. मोहन परमार रचित कहानी 'थळी' के माध्यम से वर्णव्यवस्था और स्त्रीशोषण के विषय को प्रस्तुत किया है । कहानी की नायिका 'रेवी' एक दलित नारी है । 'मानसिंह' एक सवर्ण है जो अपनी बहादुरी को दिखाकर रेवी पर धमकी द्वारा उसे डरा कर उसे अपनी हवस का शिकार बनाता रहता है । 'रेवी' भी उसकी धमकी और शैतानीपन से तंग होकर हिम्मतपूर्वक मानसिंह के प्रस्ताव का अस्वीकार करने के लिए वह जूठी चाल चलकर मानसिंह को अपनी इज्ज़त बचाने के लिए विवश कर देती है जिसमें वह कामयाब होती है इस प्रकार वह स्वयं की इज्ज़त की रक्षा करती है तथा डर के मारे मानसिंह कहता है -

"तुं रयी हरिजन अनअ अने रया बापु !

छीं. छीं. छीं मारा घरमां तुं ना शोभे...."[92]

इस वाक्य के द्वारा स्त्रीत्व की तुलना करके बताया है की जब स्त्री का उपभोग करना हो तो वर्णव्यवस्था से मुँह फेर लिया जाता है पर जब स्त्री को सम्मान देने की नौबत आती है तो वर्णव्यवस्था का प्रश्न तुरंत उठता है इस पर लेखक का धारदार व्यंग्य है । रेवी का पात्र अबला नारी न रहकर जुल्मों का हिंमत से सामना करके बड़ी चालाकी से अपनी रक्षा का रास्ता खोल देती है ।

❐ लाखु

कहानीकार - मधुकांत कल्पित

'लाखु' कहानी के द्वारा मधुकांत कल्पित ने वर्णव्यवस्था और स्त्रीशोषण के विषय के आधार पर दिखाया है कि उच्च वर्ग के पुरूष बड़ी आसानी से स्त्री का शोषण करते है पर कभी स्त्री अपने नसीब और हिंमत से उसका सामना करके उसके चुगंल से बच जाती है ।

'रमतुडा' के पात्र द्वारा लेखक ने उच्चवर्ग की सोच से हमें परिचित करवाने की कोशिश की है कि जब स्त्री का उपभोग करना होता है तो उस स्त्री को केवल एक वस्तु के रूप में देखा जाता है वहाँ उस स्त्री को वर्ण के

आधार पर अनदेखा किया जाता है । कहानी में अंकित इस वाक्य के द्वारा स्पष्ट हो जाता है - **“चेवी वात कर स गांडी ? आम अडये ते अभडाई जवातु असे ?”**[93]

इस वाक्य के द्वारा हमें पता चलता है कि किस प्रकार दलित नारी का शोषण होता है और इस प्रकार के शोषण से बचने के लिए ‘काळी’ काळी न रहकर रणचंडी का रूप धारण करके असुर का संहार करने के लिए अवतरित हुई हो इस प्रकार वह ‘रमतूडां’ को सबक सिखाती है ।

❏ ढोल वाग्यो

कहानीकार - प्रो. एम.वी.परमार

प्रो. एम. वी. परमार की कहानी ‘ढोल वाग्यो’ में दलितवर्ग की दयनीय परिस्थिति से हमें अवगत कराया है । केवल एक सामान्य और निर्थक बात के आधार पर उच्चवर्ग के लोग किस प्रकार ऊँचाई से गिरते है । उसका जीवंत चित्रण दिखाकर समाज की वर्गव्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाया है । उनके द्वारा की हुई घटियाँ हरकत के कारण एक दलित व्यक्ति अपनी खुशी को भोगने के लिए बहोत बड़ी किंमत चुकाता है ।

‘मंगल’ की शादी में पूरा दलित समाज खुशहाल था सभी लोग इस सुखी पल को जीना और भोगना चाहते थे । अबालवृद्ध सभी मंगल की शादी को मंगलमय बनाने में अपनी ताकत से सहयोग दे रहे थे पर निम्नवर्ग के लोगों को अपनी खुशी व्यक्त करके उस पल को भोगने का कोई अधिकार नहीं होता उन्हें तो केवल दबोचा ही जाता है । केवल शादी में ढोल बजाने की सामान्य बात को लेकर वरसंग अपने साथीदारों के साथ आकर कहता है - **“हुं बोल्यो अल्या भगतडा ! लगन ! तमार वळी लग्न हेनुं नं अवसर चेवो ? कनं पुसीनं ढोल वगाड्यों...? बोल ! भोयं भेगो थई जवुं संअ ।”**[94]

इस प्रकार वरसंग की तानाशाही से उस बात को लेकर बड़ी हिंसा का स्वरुप धारण करके पूरे समाज में आक्रंद का वातावरण छा जाता है इस घटना से लेखक के मन में प्रश्न उठता है कि - दलित लोगों को कब चेन से जीने का अधिकार मिलेगा ?

❏ मारण

कहानीकार - रमेश देवमणि

रमेश देवमणि कृत कहानी ‘मारण’ में पूजनीय पात्रों के द्वारा कहानी

को नाट्यात्मक रूप देकर दलित अपने प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार से प्राप्त करने के लिए संघर्ष का सामना करता है उसका हूबहू चित्रण दिखाया है ।

'मारण' कहानी का मुख्य चरित्र 'दशरथ सोलंकी' एक दलित पात्र होने से उसके पतन का मार्ग हंमेशा खुला ही रहता है वह तेज़स्वी विद्यार्थी होते हुए भी निराशा की गर्त में डूबता जाता है और मृत्यु से उसकी भेंट होने के बाद स्वर्गलोक का साक्षात्कार करता है तब त्रिदेव के दर्शन करके वो स्वयं को धन्य समझता है और उसके स्वर्ग में जाने के विरोध से देवगण के मन में प्रश्न उठता है और इस प्रश्न के उत्तर में दशरथ आचार्य, द्रोण, द्रोपदी, कृष्ण, राम आदि पात्रों से तर्कगत प्रश्न से सभा को निःशब्द कर देता है । गांधीजी पर व्यंग्य करके अपनी वेदना को प्रदर्शित भी करता है, तब त्रिवेद भी उसे सहयोग देने में असमर्थ होते है और इस बात की स्पष्टता इस वाक्य द्वारा होती है - **"पकड़ो... पकड़ो.... एम करतां द्रोण, राम, कृष्ण अने द्रोपदी दोड़या अने एमणे त्वरित दशरथ ने पकड़ी लीधो थोडीवार पहेला दशरथे पोताना विरोध करेली कान भंभेरणीनी दाझ काढता होय तेम ए चारे भेगा मळीने ऐन पीस्यो... दबाव्यो.... असहाय अवस्था मां अणे मदद माटे चीस पाड़ी पण आजुबाजु बचावनार कोई जणातु नहीं ।"**[95]

इस घटना के आधार पर लेखक ने दशरथ के पात्र द्वारा समाज को निर्देश किया है कि वर्णभेद की समस्या का शिकार ऐसे पूजनीय लोग भी है जिसे दूर करने का विचार एक दलित व्यक्ति नहीं कर सकता । दशरथ के प्रश्नों के द्वारा उसकी हिंमत को सराहने की कोशिश तो कर ही सकते है ।

❑ डंख :

कहानीकार - वशराम दाफडा

वशराम दाफडा रचित 'डंख' कहानी में दलित व्यक्ति की दयनीय परिस्थिति बताकर उच्चवर्ण की तानाशाही और धर्मगुरु के अंधविश्वास के कारण दलित व्यक्ति की स्थिति का चित्रण दिखाया है ।

'मंगा' कहानी का प्रमुख पात्र है जो एक दलित है इसलिए उसके भाग्य में गरीबी और बेबसी परछाई की तरह साथ ही है । मंगा की पत्नी मीणा प्रस्ववेदना से त्रस्त थी और बच्चे के जन्म के बाद उसके पेट की अग्नि को शांत करने के लिए 'मंगा' अपना 'रावणहत्था' लेकर रोटी की खोज में

निकलता तो है पर उसकी तकदीर एक ऐसे दाता के आंगन में खड़ा कर देती है जो करूणता से कोई संबंध नहीं रखता ऐसे 'बापु' को हाथ जोड़कर रोटी की याचना करता है और दाता उसे उसके बदले में 'रावणहत्था' का संगीत सुनाने को कहते है देर रात तक वह बज़ाता रहता है और संगीत के साथ अपनी पीड़ा को सुनाता है पर वहाँ सब बहेरे और निर्दयी लोग पर कोई असर नहीं होता वह अपनी मनमानी करते रहते है । अंत में उसे रोटी तो मिलती है पर तुरंत ही उसकी अस्वस्था के कारण वह जब मंदिर जाता है तो पूजारी की चापलूसी का शिकार होकर लहलूहान भी हो जाता है और पूजारी के ऐसे वाक्य से घायल भी होता है - **"हाय हाय ! अछूते चोरों वटलावी दीधो । भगवान रामजीने अभडावी दीधा !"**[96]

जिससे लोग क्रोधित होकर उसे 'घायल'कर देते है । मंगा ऐसी पीड़ा से त्रस्त होकर अपनी पत्नी के पास पहुँचता है तो पत्नी और उसके बच्चे को मृत पाता है । तभी लेखक ने स्वतंत्र साम्राज्य पर स्वतंत्र व्यक्ति किस प्रकार गुलाम बनकर अपनी पीड़ा से त्रस्त है । रेडियों पर बजनेवाला गीत **'वंदे मातरम्'** को बुलंद आवाज़ में दबी हुई दलित व्यक्ति की आवाज़ को लेखक ने सांकेतिक रूप देने का प्रयास किया है ।

❐ ढोलनी दांडीए :

कहानीकार - शैलेश एम. परमार

शैलेश एम. परमार कृत 'ढोलनी दांडीए' में दलित जाति के दोनों पात्रों द्वारा आंतरिक विरोध की बात को स्पष्ट करते हुए समान भावना रखकर एकता का निर्देश किया है ।

कहानी का नायक 'मंगा' एक सफाई कामदार है और शादी के दिनों में ढोल बज़ाकर अपने परिवार को पालता है । 'अमृत' एक पढ़ा-लिखा दलित युवक है जिसकी शादी के शाहीभोजन की खुशबू से आकर्षित होकर सोचता है कि आज मेरा परिवार भरपेट अच्छा खाना खा सकेगा पर उसी पल कल्पना सृष्टि से जागकर पानी पीने की घटना से हुए अपने अपमान से सभी की नज़रों का धृणापात्र बनता है और अमृत के द्वारा हुए अपमान के घूंट को पीकर वह फिर से अमृत के कहने पर ढोल बज़ाता है और खाना लेकर घर

भी जाता है पर अपने अपमान को भूल नहीं सकता और भूखे पेट बैठकर व्यथित होकर सोचता रहता है जो अमृत ने वाक्य कहा था -**"मारा हाळा, ओळगणा, जात-कजात जोया वगर ग्लास ने अडयो ।"**[97]

उसे बार-बार यह वाक्य सुनाई देता है । इसी बात से मंगु को गुस्सा तो आता है पर उसे देखनेवाली धृणाभरी नज़रों को याद करके निर्णय लेता है कि वह ढोल बजाने नहीं जाएगा पर अपनी दीनता के आगे वह फिर से मज़बूर हो जाता है क्योंकि बारात निकलते समय अच्छी कमाई कर सकता है ऐसा सोचकर वह निर्णय बदलकर वापस काम पर लग जाता है । 'मंगा' जब ढोल बजाकर पैसे बटोरता है तो अमृत करता है - **"मारी हाळी मांगणनी जात कीधी एटले थई रह्युं । तेम मेलशे ज नहीं ।"**[98]

इस प्रकार फिर से हुए अपमान से उसे बूरा लगता है पर जब चौधरी के आगमन से सभी बाराती गूंगे बन जाते है और चौधरी गुस्से में कहता है - **"हाहरां हलकाओ गाममां रहेवु भारे पडी जशे आवा तायफा कर्या तो ।"**[99]

चौधरी के इस वाक्य द्वारा हुए अपमान से मंगा को शांति होती है और चौधरी ने उसके अपमान का बदला लिया हो ऐसा महसूस करते हुए खुश होकर ढोल बजाता रहता है ।

❒ कदाच :

कहानीकार - स्वप्निल मेहता

स्वप्निल मेहता कृत 'कदाच' कहानी में राजनीतिक हलचल में दलित व्यक्ति अपने रक्षक के हाथ का खिलौना मात्र बनकर अपना सबकुछ गँवा देता है ।

इस कहानी का नायक 'अमला' और नायिका 'जड़ी' दलितवर्ग के है किसी कारणतः उनका घर जल जाता है और उसी घटना के निकट ही चुनाव का माहोल होने से 'गंगुभा' दया की वर्षा अमला पर जम कर बरसती है । इस प्रकार अमला पर जम कर बरसती है । इस प्रकार अमला गंगुभा के हाथ का मोहरा बनकर उन्हें चुनाव जीताने में काफी मददरूप होता है । गंगुभा भी उसका उपयोग करके उसे निर्दोष 'मास्तर मनसुख' पर जूठा आरोप लगाकर स्वयं को भगवान के पद पर प्रस्थापित करने में कामयाब होते है । इस प्रकार

स्वयं को बचाकर मास्तर के गुस्से का शिकार अमला को बना देता है परिणामत: मास्तर अमला का घर जला देता है पर इस बार अमला निश्चित होकर बैठा रहता है क्योंकि वह भूतकाल की रहम नज़रों की आशा के आधार पर गंगुभा का इंतजार करता है पर वह जूठा साबित होता है जब वह गंगुभा से सहायता माँगने जाता है तो गंगुभा कहते है - **"ओ हाळा अमला तुं वळी च्यारनो अमरतभाई थई ज्यों हाळा तूरी ।" "ऐम कहीने अमराए एक जोरदार हडसेलो मार्यो के अमलो दूर जईने पडयो ।"**[100]

इस प्रकार अमला को मारकर अपमानित करके वहाँ से निकाल देते है। तब अमला और जड़ी की आंखे खुल जाती है और सत्य सामने आकर खड़ा हो जाता है पर अमला की आंखें मुडकर गंगुभा की सहायता करने की आशा उसके मन में 'कदाचित' प्रश्न उपस्थित हो जाता है ।

❒ वळगाड :

कहानीकार - मावजी महेश्वरी

मावजी महेश्वरी कृत 'वळगाड' कहानी में अंधश्रद्धा के शिकार बनते हुए मासूम और गरीबों की वास्तविक जिंदगी का चित्र खींचा गया है ।

कहानी की नायिका 'लखमी' की अस्वस्थता के कारण माता-पिता अंधश्रद्धा के शिकार होकर, वछराम की बात मानते है तो 'लखमी' उसका विरोध करती है । क्योंकि वछराम भूवा द्वारा उसका शारीरिक शोषण हुआ था। इस बात से अंदर ही अंदर घुटन महसूस होने लगती है । लखमी पर कुछ भूत-प्रेत की छाया है ऐसा कहकर भूवा उसके काम में लगता है तो लखमी एक देवी का रूप लेकर जैसे असुरों का संहार करने के लिए प्रगट होती हो इस प्रकार से वछराम के हाथों से झंझीर लेकर कहती है - **"कोई जोगणी खप्पर लई आवी चडी होय ऐम लखमी उभी थई गई, नजीक बेठेला पाछळ हठवा लाग्या. हुं कोण छुं ऐम ? तने खबर नथी हुं कोण छुं ? लखमीना गळामांथी तीणी त्राड नीकळी । तेणे एकाएक बेय सांकळो भेगी करी वछरामना माथामां झींकवा मांडी । वछराम अणधार्यो हुमलो खाळी न शक्यो ।"**[101]

इस प्रकार लखमी ने देवी स्वरूप धारण करके वछराम को झंझीरों से मारकर बदला लेती है । इस प्रतिशोध के बाद वो पूर्णरूप से स्वस्थता प्राप्त

करके अपना बदला लेती है और इस कहानी के द्वारा लेखक ऐसे ढोंगी संन्यासी, भूवा से हमें चेतावनी देकर अंधश्रद्धा का विरोध करने का आहवान करते है ।

❒ टेस्टट्यूब बेबी :

कहानीकार - प्रवीण गढवी

'टेस्टट्यूब बेबी' कहानी का शीर्षक पूर्णतः आधुनिकता की पहचान कराता है । इसे 21वीं सदी के स्वतंत्र माहोल की कहानी कह सकते है । लेखक ने यहाँ पर जातिवाद, युवावर्ग और माता-पिता पर करारा व्यंग्य किया है जो केवल अपनी सोच के द्वारा अपने बच्चों के भविष्य का निर्णय करते है ।

कहानी की नायिका 'रीमा' जिसे प्रेम करती है वह लड़का बुट-चंपल के व्यापारी का बेटा होने के कारण उसके पिता की नज़रों में वह रीमा के लिए योग्य वर नहीं है इसलिए रीमा भी अपने प्रेम का गला घुंटकर, दिल पर पत्थर रखकर पिता के निर्णय का स्वीकार करके प्रेम की निशानी को भी मीटा देने में उनका सहयोग देती है । शादी के बाद जब रीमा मातृत्व को धारण करने में निष्फल होती है तो वह अपने आपको कोसकर भूतकाल में कि हुई भूल में माता-पिता की साँझीदार बनकर जो गुन्हा किया था उसकी सजा भुगत रही है और अपने आपको और अपने सुखी जीवन को बरबादी के मोड़ पर खड़ा देख रही है । असीम की मम्मी द्वारा टेस्टट्यूब बेबी के विषय में बातचीत के दौरान प्रश्न उठता है - **"ना पण तुं डॉक्टरने पूछ । ऐ कई नातनां छे ? जेवी तेवी हलकी नात ना चाले । छोकरुं कुसंस्कारी थाय ।"**[102]

इस वाक्य के द्वारा लेखक ने बहोत विचारपूर्वक व्यंग्य किया है कि आधुनिक युग में भी मनुष्य अपनी मनःस्थिति को नहीं बदल सकता ऐसा समाज को सूचित करते है ।

❒ वादळ साथे वातो करती पाइलट पंडया

कहानीकार - मनीष जानी

प्रस्तुत कहानी में ब्राह्मण कुल की युवान बेटी पाइलट बनी है इसीलिए पूरा समाज गर्वानुभव करता है एक मेगेझिन के पत्रकार, फोटोग्राफर

के आगमन से पूरा गाँव इकट्ठा हुआ है । पाइलट लीला जो कहानी की नायिका है उसका इन्टरव्यूह लेते समय रघु से भूतकाल की बातों पर चर्चा होने पर लीला अपनी सहेली रमा को पहचान लेती है । जब गाँव की और रास्ते की बात पर चर्चा होती है तो वहाँ पर जातिवाद का बड़ा प्रश्न उपस्थित होता है । रघु के चरित्र के आधार पर लेखक ने रघु के इस वाक्य से दलित वर्ग की स्थिति का वर्णन किया है जो इस प्रकार है - **"हुं तो आठ वरसनो त्यारथी ज मुंबई मामाना घेर पहोंची गयेलो । क्यारेक ज सारा-नरसा प्रसंगे गाममां आवतो - पण पछी तो मारा बा-बापूजी ने आखुं कुटुंब ज मुंबई आवी गयुं..... आ गामना जुलमथी त्रासीने..... बाकी आई एम सोरी ! तमने कंई मादुं लाग्युं होय तो । अने जुओ, खास वात ऐ के आ में जे सवालों तमने गाम विशे पूछया ऐ कंई तमारा इन्टरव्यू मां नहीं छपाय डोन्ट वेरी ।"**[103]

रघु की हकीकत जानने के बाद रघु जब अंतिम फोटोग्राफ ले रहा था तभी लाभशंकर को बूरा लगता है कि उसने एक निम्नवर्ग के व्यक्ति को घर में चाय पिलाई ऐसा डर दादाजी के पसीना पोछने की क्रिया से चाय के कप को स्थिर नज़र से देखते रहने पर संपूर्ण कहानी का भाव प्रकट होता है कि शिक्षित होने पर भी अविकसित दिशा का संकेत है । आसमान में उड़नेवाली पायलट के मन में भी सामाजिक वर्ण-व्यवहार की मानसिकता स्थित है ।

❏ दाढ़ :

कहानीकार - मनहर रवैया

'दाढ़' कहानी में मनहर रवैया ने अमीरवर्ग की विकृत सोच और आज़ादी का दुरूपयोग का सच्चा चित्रण खड़ा किया है । अमीरवर्ग हंमेशा गरीबों को मज़ाक समझकर या खिलौना बनाकर उनसे खेलते ही रहते है जिसके परिणाम में गरीबवर्ग को हंमेशा दबोचा जाता रहा है ।

'नानको' कहानी का नायक है वह अपने वर्ग की स्त्रियों की रक्षा के लिए लालाजी से टकरा जाता है पर थोड़ी सी लालच के कारण वो पुलिस की मार भी खाता है और स्वयं को गुन्हा मानने को मज़बूर भी किया जाने पर स्वीकार भी करता है । दूसरी ओर 'कमली' जो नानका की पत्नी और कहानी

की नायिका है वह पूरी हिंमत से वासनाग्रस्त लालजी को हिंमतपूर्वक उसका मुकाबला करके उसे कहीं का नहीं छोडती और नानका से कहती है - **"ल्यो आ तमारी छरी ने क्यांक भोमां भंडारी आवो । तमारे कांई करवानी जरूर नथी । जेने तेने डंख मारता फरतो जे भोंरींग हतो ने, ऐनी ज़ेरीली दाढ तो मैं क्युंनी काठी लीधी से हवे ऐ बाडो साप च्यांय बारी निकळवा जेवो नथ रीओ ।"**[104]

इस कहानी के पात्र नानका और कमली दोनों के विरोधाभास द्वारा लेखक ने समाज में रहे अमीरवर्ग द्वारा गरीब वर्ग का शोषण किस प्रकार किया जाता है उसका जीवंत चित्रण निरूपित किया है ।

❏ जीत :

कहानीकार - इन्दु राव

इन्दु राव लिखित 'जीत' कहानी में जातिवाद के आधार पर उठनेवाले विरोधाभास और उसे निम्न बताने कि बात को मुख्य रूप से उभारा गया है । कहानी का नायक 'हीरा' जाति से 'चमार' है और पढ़ने में काबिले तारीफ है। उसके संस्कार भी अच्छे-अच्छे को नत मस्तक करने में मज़बूर कर देते है ।

हीरा के बचपन की घटना पर नज़र करे तो निम्न जाति के कारण हीरा अंतिम पंक्ति में बैठने के लिए मज़बूरर हो जाता है पर निमेष को एक बात कहकर उसे अपनी करनी पर शरमींदा भी करता है - **"भाई, तुं शायेब जोडे झघडो न कर । तुं अहीं ज बेस । हुं छेल्ली पाटलीए बेसुं छुं । पण मन मारी जाति विशे कोई घसातुं बोल ए जरीक्य नहीं गमतुं । एमेय माणस छीए न..... ।"**[105]

कहानी में गरीबवर्ग की परिस्थिति को दिखाकर हमें बताया की दलित नारी की वेदना से अवगत कराया है कि वह किस प्रकार अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए उसके मालिक से लेकर मुकदम की वासना का शिकार बनना पड़ता है ।

'हीरा' हीरालाल डॉक्टर बनता है तो शिक्षित और उच्च वर्ग के डॉक्टर शिक्षित और संस्कारी गिने जानेवाले लोग किस प्रकार अपनी गंदी चाल चलकर निम्न और गरीब वर्ग को शिकार बनाते है । जब पुलिस 'हीरा' को गिरफ्तार करने के लिए आते है तो बस्ती के लोगों के विश्वास और हीरा की निपुणता के

कारण पांचा का बच्चा ठीक हो जाता है । इस घटना के आधार पर लेखिका हमें कहना चाहती है कि शिक्षित वर्ग भी अपने स्वार्थ के कारण अपने संस्कार छोड़कर निम्नजाति के लोगों पर अत्याचार करने के लिए तैयार ही रहते है ।

❒ चबरखी :

कहानीकार - चंद्राबहन श्रीमाळी

चंद्राबहन श्रीमाळी लिखित 'चबरखी' कहानी में अनुसूचित जाति के प्रति शिक्षित वर्ग एवं बालमानस पर विद्रोह एवं अवरोध का भाव प्रकट होता हुआ दिखाया है । अनुसूचित जाति को सरकार द्वारा मिलनेवाली स्कोलरशिप पर स्कूल का क्लार्क एवं शिक्षक के विचारों से तीनों दलित युवती का अपनी सहेली से हुए अपमान को सहना उनका विरोध करके आधुनिक सोच को निरुपित किया है ।

कहानी के प्रारंभ में ही चपरासी द्वारा लाई गई चबरखी से वर्गशिक्षक के मुँह पर धृणा का भाव प्रकट होता है वैसे ही जैसे क्लार्क द्वारा दी हुई सूचना में अपने वालिद को बुलाने की बात पर किया गया व्यंग्य है - **"भणवा माटे सरकार तमने स्कोलरशिप आपे छे, समज्यांने । तमारा बापाओं तो सरकारनां जमाई छे !"**[106]

इस वाक्य को सुनने के बाद बालमानस पर कैसा प्रभाव पड़ेगा उसका लेखिका ने सुंदर वर्णन किया है ।

तीनों विद्यार्थियों की अनुपस्थिति में वर्ग शिक्षक की बात और सलाह को मानकर सहेली द्वारा किए गए अपमान पर लेखिका प्रश्न उठाती है कि क्या यह आधुनिक समाज की नींव है पर तुरंत परिस्थिति के बदलाव के द्वारा छोटा बालमानस भी इस विषय पर सोचकर फिर से अपनी सहेलियों को अपनाकर समाज को नयी राह भी चींधती है ।

❒ जटायु :

कहानीकार - बलदेव पटेल

बलदेव पटेल द्वारा रचित कहानी 'जटायु' शोषण के विरूद्ध एक दलित द्वारा खेली हुई जंग की कहानी है । समय के साथ-साथ दलित भी स्वयं के हक, स्वमान के विषय में जागृत होकर शोषण का विरोध करने की बात को समर्थन देनेवाली कहानी है ।

कहानी में तीन पीढ़ी की बात है गाँव में प्याऊ, मंदिर, धर्मशाला में दान देकर पूरे गाँव में स्वयं की वाह-वाह करवानेवाले मुखी शंकरदा के विषय में सभी परिचित है । लेकिन किसी की भी हिंमत शंकरदा के सामने आवाज़ उठाने की नहीं थी । शंकरदा के वहाँ काम करनेवाला मोती की पत्नी रूपली के साथ शंकरदा के अवैध संबंध होने से धनिया का पिता शंकरदा ही थे । लोग इस बात को जानते हुए भी होठ पर चुपकी लगाकर अंदर ही अंदर चर्चा करते रहते पर शंकरदा के मुँह पर बोलने की किसीको हिंमत नहीं थी । धनिया नाज़ायश ओलाद होते हुए भी जायश ओलाद थी । समाज ने रूपली का पति मोती के नाम का लेबल लगाया हुआ था और उसमें भी शंकरदा का गाँव पर आधिपत्य सभी को स्वीकार्य था ।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि मोती को यह शोषण स्वीकार्य था । क्योंकि शंकरदा के द्वारा ही - **“आ रीते अफसरोनां व्यक्तिगत परिचयमां आवतां मोती पण जमीनथी वेंत अध्धर चालतो । तेना समाजमां पम तेनी शेह पडती ऐना वासमां ऐ अग्रेसर नेता जेवो थई गयो तो । वासने समाज तेनो पडयो बोल झीली लेने ।”**[107]

उच्च्व जाति के शंकरदा के संपर्क के प्रभाव से ही मोती को मान-सन्मान मिलता था । वैसे तो मोती ने स्वयं अपने शोषण का स्वीकार किया था । इसलिए शंकरदा के प्रति कोई रोष नहीं था । समयचक्र के साथ मुखियाँ से बदलकर पंचायती राज आता है जिसमें शंकरदा का बेटा मनोरदाने राजनीति को संभाला पर वह नाकामयाब हुआ और खेती करने लगा जो उसके पुत्र अजय ने संभाल लिया । इस ओर धनिया का पुत्र माना ने खेत मज़दूर को लेकर खेती जोतने का काम संभाल लिया था ।

तीसरी पीढ़ी भी शंकरदा के खेतों में मज़दूरी का ही काम करती थी। मानो बुनकरवास में से मज़दूर ले जाता जिसमें लाडु सौंदर्यवान होने से अजय के आकर्षण का केन्द्र थी । शंकरदा की तरह अजय भी स्त्री को उपभोग की चीज़ समज़ता था । मौका पाते ही लाडु के सौंदर्य से अभिभूत होकर अजय ने लाडु को कमरे में खींचकर ले गया पर दरवाज़ा तोड़कर मानो वहाँ खड़ा हो गया अजय माना को अपनी हेसियत दिखाते हुए कहता है - **“माना, भलो थईने तुं अहीं थी जतो रहे । मारे लाडुने भोगववी छे । ऐ कई तारी सगी नथी ।”**[108]

तो उसके सामने दलित माना का जवाब है - "**सुं बोल्या अजेयभाई सगी । रामायणनी सीता नो जटायु शुं सगो हतो । कशुं नहीं । छतां रावण ने रोकता-रोकता खपी गयो । अत्यारे हुं पण जटायुं थईने तमारी सामे उभो सुं । जोऊ सुं तमें केवी रीते लाडुना चीरहरण करो सो ।**"[109] मानो इस प्रकार लाडु को बचाकर अजय को फेंक देता है माना की लाठी अजय को लगते ही खून निकलने लगता है और मानो, लाडु घर की ओर चले जाते है ।

माना शोषण का विरोध करनेवाले 'जटायु' के रूप में है । शंकरदा द्वारा किया गया शोषण मोतीने भुगता था पर मानो उसका विरोध करता है । वर्षो से जिसकी गुलामी की थी उसमें उन्हें केवल दु:ख-दर्द, अत्याचार से छुटने के लिए संघर्ष तो करना ही पड़ता है जिसके परिणामत: अजय माना को मनाने की कोशिश में नाकामयाब होता है ।

रामायण के मिथक के आधार पर 'जटायु' के पात्र के रूप में माना को दिखाकर यहाँ समयचक्र के बदलाव में जटायु को जो निष्फलता सीता के रक्षण में मिली थी वह सफलता माना प्राप्त कर लेता है । इस विरोधाभास को प्रतीकात्मक निर्देश करते हुए लेखक प्रशंसा के पात्र ठहरते है जिन्होंने 'जटायु' कहानी में शोषण के सामने हिंमतपूर्वक आवाज़ उठाने की बात को प्रस्तुत किया है ।

(घ) हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का विश्लेषण :

(1) अपमानबोध :

अपमानबोध की बुनियाद पर ही दलित साहित्य का निर्माण होता है। वह चाहे कहानी, उपन्यास, कविता हो पर उसमें अपमानग्रस्त व्यक्ति, समाज को प्रमुख स्थान प्राप्त होता है । अपमान से पीड़ित वर्ग चाहकर भी अपनी कमज़ोर और दबी आवाज़ को उठाने में सक्षम नहीं है ।

हिन्दू समाज के सवर्ण समुदाय ने ऐसी दृष्टि बना रखी है जिसमें दलितों के प्रति उपेक्षा और विरोध ही नहीं बल्कि धृणा के भाव मौजूद है । सवर्ण समुदाय के लोकमत में दलित समुदाय के प्रति जो तिरस्कार और अपमानबोध है । उनकी अभिव्यक्ति दलितों के नामकरण में भी होती है । आम तौर पर सवर्णो के नाम भारतीय संस्कृति की अभिजात परंपरा से जुड़े

होते है । जबकि दलितों के नाम उनकी दीन-हीन और अपमानजनक स्थिति का द्योतक होते है । जैसे - लक्ष्मी - लछमिनिया, सुखी - सुखिया ।

हमारे समाज की सामाजिक व्यवस्था पर गौर करें तो हमें शर्म की अनुभूति होती है कि ईश्वर की बनाई दुनिया में एक गर्भ जो अभी जन्म नहीं लेता उसके अवतरण पर भी सामाजिक व्यवस्था अपना पहरा देकर उस अंकुर को अपमानित करके उसका शोषण करने के लिए सदा निशाना ताके तैयार रहते है । वह गर्भ हो या कोई वृद्ध व्यक्ति भावना एवं व्यवहार में कोई अंतर नहीं है ।

दलित कहानियों का हरेक पात्र वह हिन्दी कहानी हो या गुजराती कहानी दोनों के पात्र अपमानित होकर ही अपने उद्देश्य को प्राप्त करते है । उसे पशु से भी बदतर मानकर वह हंमेशा धृणा और तिरस्कार का पात्र बनता रहता है । दलित व्यक्ति का अधिकार किसी भी चीज़ पर नहीं वह चाहे "पानी" ही क्यों न हो उस पर केवल हक सवर्ण का ही होता है । उसकी जरूरत को अनदेखा करके उनकी अवहेलना करके उसे अपमानित करके उसे पशु से भी निम्न स्थान पर बिठाकर उसका तिरस्कार करके अपमान करके उसे मनुष्य होने पर जैसे प्रश्नचिह्न हो ऐसा व्यक्त कराते है । दलित कहानियों में लेखक ने अपने चरित्रों के माध्यम से इस विषय को निरूपित करते हुए दलित समाज की पीड़ा से अवगत करने का प्रयास किया है ।

मैंने अपने शोधकार्य में ऐसी कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन करके दलित कहानियों में व्यक्त सामाजिक परिवेश, अपमानबोध और मानवगरिमा को चरितार्थ किया है । ताकि मानवीय अस्मिता का उचित रूप में मूल्यांकन किया जाय और दलित साहित्य की अपनी पहचान से इन्सानियत को परखा जाए ।

हिन्दी दलित कहानियाँ :

लटकी हुई शर्त :

इस कहानी में जुट्ठी पतल न उठाने की शर्त को लेकर जिस प्रकार पूरा समाज विरोध करता है उसमें अपमानबोध का मुख्य आशय नज़र आता है। केवल मनुष्य दलित होने के कारण उनका सारा समाज अपमान करता रहता है जिसका शर्त के आधार पर भी उस समस्या का निवारण नहीं होता ।

एक और अंत :

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने एक मासूम को अपनी जाति के कारण किस प्रकार घृणा का पात्र बनता है जिसमें एक छोटा बच्चा जो अभी तक संपूर्ण दुनिया की जानकारी भी नहीं रखता ऐसे मासूम को कई बार अपनी दादी से अपमानित होकर मज़बूरी में बालमज़दूरी करने पर पिता की बेबशी का स्पष्ट चित्र खड़ा भी हुआ है और इस अपमान से बचने के लिए पिता उसे शिक्षित बनाने के लिए कटिबद्ध बताए गए है पर उस कार्य में पिता स्वयं को निहत्था पाता है । इस कहानी में डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर के उद्देश्य को प्रकाशित करके शिक्षित बनने का इशारा भी किया है जिससे स्वयं को अपमान से बचा सके ।

एक और सीता :

इस कहानी में ठाकुर के द्वारा बेबस लोगों पर अत्याचार करके उसको अपमानित करके सीता का यौनशोषण किया जाता है । सीता भी अपने अपमान का बदला गंडासा लेकर ठाकुर को चेतावनी देकर ठाकुर को अपनी सीमा दिखला देती है ।

आदमी :

कहानी में टानों अपने बच्चों के बारे में सोचकर वह भी अपने पति का हाथ बढ़ाकर वह भी मज़दूरी करने जाती है पर जंगलबाबू की हरकतों से भलीभाँति परिचित है इसलिए उनकी बूरी नज़रों से होनेवाले अपमान को पीकर वह अपने भविष्य के उज़ाले को देखते रहने की चाहत रखती है जिसमें स्वयं को असहाय और खत्म कर देती है ।

अस्वीकृति :

लेखकने विक्रम के चरित्र द्वारा दिखाया है कि किस प्रकार शिक्षित, बुद्धिजीवी व्यक्ति का अस्वीकार एक उनके जैसे ही समानतावाले पात्र का केवल जाति के आधार पर उसका अपमान करके अपनी अस्वीकृति दिखाकर उसका अपमान करने में कामयाब होते है ।

अषाढ़ का एक दिन :

कहानी में दलितों को सरकार योजना के आधार पर दी गई ज़मीन को हड़पकर कहानी का पात्र भगेलू जब शिवनाथ सिंह के वहाँ हल चलाने जाता है तो वह अपमानित होता है । जिसके कारण उसमें विद्रोह की भावना जागृत होती है ।

कमीज़ :

इस कहानी के पात्र रामा, रज्जो, हरपल अपमान सहते है यहाँ तक अपनी जान भी दे देते है । जिसकी किंमत केवल पंद्रह किलो गेहूँ है इस दृश्य को दिखाकर लेखक ने दलित व्यक्ति का किस प्रकार कितनी हद तक अपमान होता है वह दर्शाया है ।

पन्ना धाय का दूसरा बेटा :

ज़मीदार के बेटे द्वारा नौकर को धमकी देना, उस पर अत्याचार करना, उसका अपमान करके उसे गुन्हगार बनाकर स्वयं स्वतंत्र घूमते दिखाकर नौकर के बलिदान एव नमक का ऋण अदा करनेवालों का केवल अपमान ही है ।

सर्प-दंश :

गोकुल के पात्र द्वारा दिखाया है कि किस प्रकार एक मज़बूर व्यक्ति अपनी मज़बूरी को दूर करने के लिए चोरी करता है पर जब प्रधानजी द्वारा बुलाया जाता है तब उसका अपमान करके साँप की तरह दंश कर उसे मौत के घाट उतारा जाता है ।

बिच्छूघास :

अंधविश्वास को मानकर एक कोमल बालमानस का अपमान करके उसे सज़ा देकर शिक्षित व्यक्ति की कर्तूत को दिखाकर समाज की मानसिकता का पर्दाफाश किया है ।

छिपे हुए हाथ :

छंगुरी ने गाँव में ज़मीदार के द्वारा होनेवाले अत्याचार एवं अपमान से परिचित होता है इसलिए शहर जाकर आर्थिक स्तर पर स्वयं को ऊपर उठाता है पर गाँव में ज़मीदार के हाथों का शिकार बनकर अपने भाई और अपनी पत्नी के संबंधों का अपमान करने के लिए ज़मीदार के हाथों का खिलौना बनकर रह जाता है ।

कामरेड का सपना :

ललई पंडित और सरजू ठाकुर की मिली भगत के द्वारा एक दलित युवक की निष्ठा का अपमान करके स्वयं को पुरस्कृत करके स्वतंत्र भारत की आज़ादी का अपमान करने की चेष्ठा दिखाई है ।

हरिजन सेवक :

गांधीजी के आदर्शो और आज़ाद भारत की परिस्थिति को दिखाकर

समाज के ठेकेदार किस प्रकार दलित वर्ग का शोषण करके उसे अपमानित करते है जिसे अपमानित करनेवाले तो आज़ाद भारत के अधिकारी द्वारा हुए अपमान को दिखाने का प्रयास है ।

उठे हुए हाथ :

राघो महतो अछूत लड़की को अपनी हबस का शिकार बनाते है और स्त्रीत्व का अपमान करते है जिसमें बच्चों की मानसिक स्थिति विद्रोह का रूप ले लेती है ।

शवयात्रा :

दलित व्यक्ति को जीवीत रहने के लिए हंमेशा परिस्थितियों से जूझते रहना पड़ता है । वह सही होने पर भी उसे अपमान तो सहना पड़ता है वह विरोध करता है तो उसकी सज़ा केवल मृत्यु ही होती है । दलित व्यक्ति हंमेशा अपमानित होता है और सज़ा भुगतता रहता है ।

जीवनसाथी :

कहानी में केवल जाति के कारण निम्न व्यक्ति असामाजिक तत्वों द्वारा अपमानित होते है जिसका विरोध पुलिस न करके उसकी तरफ़दारी करते दिखाये है ।

दाग दिया सच :

केवल जाति के कारण ही उनको अपमानित किया जाता है यहाँ तक की मालती को नंगा करके जांघ में दाग देकर स्त्री का अपमान किया जाता है । इस घटना को दिखाकर मानवता का अपमान हुआ हो ऐसा महसूस होता है ।

आतंक :

बच्चों की शरारत एवं झगड़े के कारण दलित स्त्री का स्त्रीत्व छीनकर उसे अपमानित करके उसके उपर अत्याचार किया जाता है । इस प्रकार से स्त्री का और जाति का अपमान करने पर मानवता का ही अपमान होता है ।

बलात्कारी :

उच्चवर्ण की इज्ज़त का अपमान हो उसे बचाने के लिए उच्चवर्ग बिल्टुआ को किस और गुन्हों में गिरफ़्तार कराते है पर बिल्टुआ भी अपने इस अपमान का बदला लेने के लिए सही रूप से वहीं गुन्हा करके गिरफ्तार होने में बदले की ही भावना है ।

षडयंत्र :

मुफ्त में तनख्वा खानेवाले शिक्षक इंस्पेक्शन में गाँव के बच्चों को इस्तमाल करते है पर इंस्पेक्शन के बाद बच्चों को अपमानित करके भगा देते है । यहाँ तक छोटी बच्ची का यौनशोषण करके हवस का शिकार बनाते है । इस प्रकार शिक्षण का भी अपमान किया जाता है ।

इंकलाब जिन्दाबाद :

इस कहानी में राजनैतिक धरातल पर रचना की गई है बथुआ की देशभक्ति का अपमान किया गया है । क्योंकि वह दलित है उसे पुरस्कार का हक न देकर उसे मौत के मुख्न में धकेलकर उच्चवर्ग की मानसिकता भी दिखाने का प्रयत्न किया गया है ।

इशारा :

मद्धे पहलवान जो दलित है उसे हरपल अपमान से गुजरना पड़ता है यहाँ तक की वह विजय तो प्राप्त कर लेता है पर अपने उस्ताद से दलित होने के कारण शोषित भी होता है । जीवन के हर मोड़ पर वह अपमानित होता जाना है । इसके कारण वह विद्रोही भी बन जाता है ।

अपना गाँव :

हरिया की बहू कबूतरी को नंगा घुमाने से हरिया को जैसे अपने पुरूषत्व का अपमान हुआ हो उससे वह सन्न हो जाता है पर इस प्रकार अपमानित होने पर वह अपने समाज और व्यक्तित्व को उपर उठाकर आज़ाद बनकर अपना गाँव बसाने का ठान कर विद्रोही बन जाता है ।

सपना :

ऋषि द्धारा विरोध करने पर मि. नटराजन के मुँह पर चूपी आ जाती है पर वास्तविकता वहीं की वहीं थमी रहती है । मंदिर का निर्माण जैसे युद्धभूमि में पलट जाता है । जिन्होंने मंदिर बनाने में इतनी महेनत की उसी का अपमान करते हुए उन्हें अपने निम्न सोच पर शर्म नहीं आती । ऋषि को इस विरोध के परिणाम में गिरफ़्तार होना पड़ता है । यहाँ इस कहानी में विरोध दलित व्यक्ति नहीं पर दलित के अपमान का बदला उच्च जाति के ऋषि द्धारा दिखाया गया है ।

गुजराती दलित कहानियाँ :

बदलो :

बदलो कहानी में गोकुल की अच्छाई का बदला वजेसंग की हेवानिहत दोनों के विरोधाभास से कौन किस प्रकार से अछूत की गिनती में आते है वह दर्शाते हुए गोकुल को अपमानित बनकर चूपचाप सहते हुए दिखाया गया है । गोकुल का गुन्हा केवल इतना ही है कि वह वजेसंग को मान देने के लिए खड़ा न हो पाया ।

सोमली :

सोमली उसका पति, बहू पर होनेवाले अत्याचार के द्वारा हमें पता चलता है कि दलित वर्ग किस प्रकार अपमानित होता है तभी अपने अपमान का बदला लेने के लिए कोई बड़ा गुन्हा करने के लिए भी कटिबंध हो जाता है ।

दायण :

पशी को माँ का दर्जा देनेवाली बेनीमा जब पशी अपने बेटे को बेनीमा को छू न जाए ऐसी सूचना देती है तो बेनीमा का अपमान होता है ऐसी अहेसान फरामोश पशी को या सेवाभावी बेनीमा दोनों में से अछूत कौन है निर्णय कर पाना मुश्किल है ।

रखोपाना साँप :

जीलुभा एक रक्षक होते हुए भी अपने मज़दूर का शोषण करता है । पिता के कर्ज को चुकानेवाला बेटा, माँ, बहू को साँप की तरह दंश कर विश्वास का अपमान करता है ।

कुळदीपक :

स्त्री की परिस्थिति ऐसी है उस पर किसी भी प्रकार प्रहार हो वह अपने आपको दूसरे के लिए खिलौना बनने के लिए तैयार हो जाती है । अपने बेटे को बचाने के लिए वह स्वयं अपने आपको निलाम कर देती है । इस प्रकार पुरूषों के हाथ वह अपमानित होती रहती है ।

सूरज ने कहो उगे नहीं :

वशीया एक महेनतू किसान होने से वह सरकार से मीली ज़मीन पर फसल उगाता है पर ठेकेदार द्वारा आग लगाने पर पूरी फसल खाक हो जाती है यहाँ वशीया की महेनत का अपमान होता हुआ दिखाया गया है ।

रामराज्य :

छोटी सी भूल का इतना बड़ा अपमान होने से करमला भी गाय की हत्या की घटना से फ़ायदा उठाकर अपने अपमान का बदला लेता है और मुखी को भी उसी तरह मारता हुआ ले जाता है । समय आने पर मुखी की चाल का शिकार होकर उसके बेटे गिरफ़्तार होते है और करमला दूसरे के कंधे पर सवार होकर स्मशान जाता है ।

मारे चा नथी पीवी ! :

दरबार के बेटे की शादी की ख़ुशी में नौकर भीखा के घर चाय पिलाने की व्यवस्था का जीवा चाय न पीकर विरोध करके अपमान का बदला लेता है ।

सरनामु :

अरूण पंडया दलित वर्ण से है तो आरती एक शिक्षक होते हुए भी अंधविश्वासों में घिरकर अपने घर आने से मना कर देती है जिसमें बच्चे का तो अपमान हुआ ही है पर शिक्षण का भी अपमान होता हुआ दिखाई देता है ।

जात :

रामापीर के मंदिर की स्थापना दलित वर्ग ने की है पर दरबार उन्हें अपमानित करके पहला अधिकार स्वयं का बताकर दलितवर्ग का अपमान करते है पर दलित वर्ग के समूह से डरकर वह कुछ करने में नाकामयाब हो जाते है । इस प्रकार प्रत्याघात के द्वारा उनका भी अपमान होता हुआ बताया है ।

रेशनालीस्ट :

डॉ. महेता ने एक दलित युवक को भूतकाल से न तोलकर न उसका अपमान करके उसके वर्तमान को प्रमुख माना है । तो दूसरे दृश्य में दलित युवक का पिता जो अपनी कला का प्रदर्शन करके रोज़ी-रोटी कमाना चाहता है उसे दबोच कर मोत की सज़ा देनेवाले बालुजी के द्वारा कला का अपमान करते हुए दिखाया है ।

रोटलो नजराई गयो ! :

स्कूल में रोटी ले जानेवाला रघु अपनी गरीब परिस्थिति के कारण कई बार अपने दोस्तों से अपमानित होता है यहाँ तक की उसके इस अपमान को दूर करने के लिए वह चोरी भी करता है । रोटी न ले जाकर माँ को सोचने पर मज़बूर करता है । इस प्रकार अपमानित रघु को गुन्हागार बन दिया जाता है ।

लोहीनी लागणी :

जेठा जोशीला युवक है इसलिए अपने समाज के किसी भी व्यक्ति का होनेवाला अपमान न सहकर उसे बदला लेने का ठान लेता है पर उसके खून की ताकत स्त्री पर होनेवाले अत्याचार का मुँह तोड़ जवाब देने में नाकामयाब होता है तभी हमारे मन में अपमानित वर्ग के एक व्यक्ति की भावनाओं का परिचय हो जाता है और अछूत की व्याख्या स्पष्ट हो जाती है ।

थळी :

मानसिंह द्वारा यौनशोषण का शिकार रेवी का अपमान होता है तो रेवी अबला नारी न रहकर हिंमतपूर्वक उसके अपमान का बदला लेकर स्वयं की इज़्ज़त की रक्षा करके अपनी आज़ादी का रास्ता चुन लेती है ।

लाखु :

रमतुडा की सोच यह है कि स्त्री हाथ का खिलौना है पर काळी की बात सुनकर रमतुडा उसे मान देकर चालाकी से शोषण करता है काळी अपने इस अपमान से बचने के लिए रणचंडी का रूप धारण करके उसे सबक दिलाती है ।

ढोल वाग्यो :

मंगल की शादी में ढोल बजाकर दलित वर्ग ने कोई बड़ा गुन्हा किया हो ऐसा समझकर वरसंग उनका अपमान करता है । यहाँ तक उसकी तानाशाही हिंसा का स्वरूप धारण करके मंगल की शादी को अमंगल अवसर में पलट देता है ।

मारण :

दशरथ सोलंकी एक स्वर्गस्थ है जो स्वर्ग में जाकर भी पृथ्वी की तरह अपमानित एवं प्रताड़ित होता है । त्रिदेव भी उसे सहयोग देने में असमर्थता दिखाकर उसके वर्ण का कैसा अपमान होता है उसका चित्र दिखाया है ।

डंख :

मंगा की दयनीय परिस्थिति है कि उसकी पत्नी प्रस्ववेदना के बाद पेट के अग्नि को शांत करने के लिए बापु के वहाँ रोटी मांगता है । मुफ्त में नहीं पर अपनी कला का प्रदर्शन करने पर निर्दयी लोगों के बीच अपमानित होता

है और रोटी के साथ उन लोगों का अत्याचार भी सहता है । वह घायल होकर मंदिर जाता है तो वहाँ पर भी अपमानित होकर अछूत व्यक्ति को दबोचा जाता है और अंत में पत्नी और बच्चे को मृत पाता है ।

ढोलनी दांडीए :

मंगा अपने परिवार की भूख को शाही भोजन से तृप्त करने की कोशिश में लगा है वह शादी में ढोल बजाता है पर 'अमृत' के द्वारा अपमानित होता है जो दलित वर्ग से है । इस प्रकार हुए अपमान को सीने में दबाकर वह अपने परिवार के विषय में सोचता है पर बार-बार अपमान होने पर जैसे ईश्वर ने उसकी वेदना महसूस की हो इस प्रकार चौधरी द्वारा किया हुआ । अमृत के अपमान से उसकी तृष्णा शांत हो जाती है ।

वळगाड :

लखमी का अंधश्रद्धा के कारण होनेवाला यौनशोषण और पीड़ा के कारण एक स्त्री के अपमान को देवी का स्वरूप धारण करके वछराम भूवा को सबक सिखाकर अंधश्रद्धा का विरोध करने की चेतावनी दी है ।

टेस्टट्यूब बेबी :

रीमा के प्रेम का अपमान होने से रीमा की प्रतिक्रिया निष्क्रिय रही पर जब अपने बच्चे की बात आती है तो वहाँ पर भी व्यक्ति का मूल्य न समझकर वर्ण का मूल्य दिखाकर ईश्वर की रचना का भी अपमान होता हुआ दिखाया है ।

वादळ साथे वातो करती पाईलट पंडया :

ब्राह्मण कुल की शिक्षित, उच्च स्थान पर बिराजमान पाईलट, लीला समाज के खोखले बंधनों से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाई । दादाजी कि क्रिया का विरोध न करके अछूत व्यक्ति का अपमान होता हुआ वह चुपचाप देख रही हैं ।

दाढ़ :

नानको जवामर्द और हिंमतवाला युवक है जो अपने वर्ग की स्त्रियों की रक्षा करता है पर लालच के कारण वह अमीर लालजी का साथ देता है

पर उसे गुन्हगार साबित करके उसका अपमान करने पर वह मुकाबला करने के लिए तैयार रहता है पर उसकी पत्नी कमली भी यौनशोषण का शिकार न बनकर लालजी का काम तमाम कर देती है ।

जीत :

अछूत होने के कारण हीरा को अंतिम पंक्ति में बिठाकर शिक्षित वर्ग द्वारा अपमानित होता हुआ दिखाया है । निमेष के स्वच्छंद व्यवहार से एक शिक्षक का अपमान होता हुआ वह नहीं देख सकता और वह निमेष को अपनी करनी के लिए शरमींदा होने का एहसास भी करता है । हीरा जब डॉक्टर बनता है तो उच्चवर्ग के डॉक्टर की धोखेबाजी का शिकार तो बनता है पर उसका समाज और उसकी काबेलियत उसे अपमानित होने से बचा लेते है ।

चबरखी :

शिक्षित वर्ग द्वारा अनुसूचित जाति की लड़कियों का जो अपमान दिखाया है वह शर्मनाक है जिसमें सही रास्ता दिखाने वाले पथदर्शक ही अंधेरा कर दे तो बालमानस के ऊपर क्या असर होगा इसका जवाब उनके अपमान के बदले में उच्चवर्ग की कन्याओं के स्वतंत्र विचार व्यवहार की सराहना करके शिक्षित वर्ग का अपमान किया गया है ।

जटायु :

'जटायु' शीर्षक को देखकर ही तुरंत रामायण की कहानी का स्मरण होता है । यहाँ जिस प्रकार रावण ने सीता हरण करते समय जटायु को अपमानित किया था उसी प्रकार कहानी के चरित्रों में भी ऐसे संवाद होता है और विरोधाभास है कि रामायण में जटायु की मृत्यु होती है पर कहानी में जटायु अपना और अपनी जाति के अपमान का बदला हिंमतपूर्वक लेता है । लाडु कि इज़्ज़त बचाकर अजय को अपनी औकात दिखाता है ।

(2) मानवगौरव

अक्सर हमने देखा है कि दुर्बल व्यक्ति को सबल के द्वारा दबाया जाता है और पीड़ित किया जाता है । दूसरे शब्दों में कहें तो "जिसकी लाठी उसकी भेंस" इसी सहज प्रवृत्ति और प्रकृति के कारण मानवगौरव की रक्षा का प्रश्न खड़ा होता है । वैदिक मान्यता धर्मग्रंथों के आधार पर वेद यदि भारतीय सभ्यता

और संस्कृति भी सबसे पुराने ग्रंथ है और शूद्रों का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और मानसिक शोषण भी इस समाज व्यवस्था में उतना ही पुराना है ।

वैदिक मान्यता, धर्मग्रंथों के आधार पर शूद्रों पर अधिक से अधिक अत्याचार करना ही धर्म माना जाता है । अछूतों के सम्पर्क से दूर रहता है, उनसे घृणा करता है वह उतना ही कट्टर धार्मिक माना जाता है । यह नियम धर्मशास्त्रों को ईश्वर की वाणी माना जाता है, इसलिए अछूतों पर ज्यादा अत्याचार करनेवाला ईश्वर का प्रिय भक्त माना जाता है ।

अस्पृश्यता का अभिशाप दलितों को मानव की संज्ञा से नीचा गिरा देता है । दलित व्यक्ति का इस प्रकार गिरना समाज को प्रश्न पूछता है कि क्या उच्च जाति और निम्न जाति के मनुष्य के शरीर सौष्ठव, क्रिया, व्यवहार क्या अलग होता है जैसा हरेक पशु-पंछी का होता है दोनों मनुष्य के एक नाक, दो आँख, दो हाथ-पैर, सोचनेवाला मस्तिष्क, धड़कने के लिए एक दिल होता है फिर भी इतना तिरस्कार किस प्रकार हो सकता है । एक मनुष्य दूसरे की परछाई से किस प्रकार अपवित्र हो सकता है जो पशु से पंछी से नहीं होता पर जब दलित व्यक्ति का उपभोग करना हो तो वह व्यक्ति न रहकर जैसे कोई वस्तु हो गई हो वैसे ही अस्पृश्य व्यक्ति को स्पृश्य मानकर अपना मतलब निकालते वक्त उनकी गरिमा और बुद्धिचातुर्य कहाँ जाते है ।

डॉ. बाबा साहब अम्बेड़कर ने भी इस प्रश्न का उत्तर पूरे समाज से पूछा है कि - दलित व्यक्ति को सिद्ध करना पड़ेगा कि वह पहले एक मनुष्य है जिसका स्वीकार समाज को भी करना पड़ेगा ।

दलित व्यक्ति का जन्म जैसे जीवन जीने के लिए नहीं बल्कि पीड़ा भुगतने के लिए ही हुआ हो वह अपने माथे पर कलंक लेकर जन्मा हो ऐसा हर क्षण महसूस करता है । इस पीड़ा से बाहर निकालकर हमारे समाज-सुधारक ने परिश्रम करके हमें उनके ऋणी बना दिया है । उन्होंने समाज को उन्हें मानवगौरव दिलाने के लिए अथाध प्रयत्न करके दलित व्यक्ति को दलित नहीं पर एक मनुष्य की तरह व्यवहार करने का निर्देश किया है ।

मेरे इस शोधकार्य में मैंने इसी विशेष महत्वपूर्ण विषय का हिन्दी दलित कहानी - गुजराती दलित कहानी के विश्लेषण द्वारा मानवगौरव को उजागर करने का प्रयास किया गया है ।

हिन्दी दलित कहानियाँ :

लटकी हुई शर्त :

गंगाराम प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हुए भी बाबूओं के घर पर भोज में पतल पर से उठाया जाता है क्योंकि गंगाराम अछूत है । बाबूओं की हंमेशा मदद करता है पर बाबूओं उसका स्वीकार एक मनुष्य के रूप में न करके अछूत व्यक्ति के रूप में ही करते है जिसका विरोध अपनी शर्त रखकर करता है ।

पच्चीस चौके डेढ़सौ :

चौधरी द्वारा सूद गिने जाने पर पच्चीस चौके डेढ़ सौ गिनकर दलित व्यक्ति का शोषण किया जाता है । जब पिताजी की डांट सुनकर सुदीप स्कूल में पच्चीस चौके डेढ़ सौ बोलता है तो शिक्षक भी अपनी मानवता भूलकर उसे अपशब्द बोलकर अपनी सही पहचान करवाते है । पर जब शिक्षित होने पर अपने पिताजी से सच्चाई बताकर चौधरी की कपटता का पर्दाफाश करता है तो तभी प्रश्न उठता है कि चौधरी सुदीप के पिता को मानव न समझकर पशु से भी बदतर समझता होगा जैसा उसने व्यवहार किया है ।

एक और अंत :

नन्हुआ की माँ दलित थी इसलिए टुनरा की मौसी टुनरा के बेटे के साथ भी अछूत की तरह व्यवहार करती है । नन्हुआ जैसे मानव न होकर केवल अछूत ही है । इस बात को गहराई से समझकर टुनरा उसे शिक्षित करने का ठान लेते है जिससे वह अपने बेटे को आदमी बनाकर समाज के सामने लड़ने की ताकत प्राप्त हो जिससे समाज भी उसे कोई प्रश्न पूछने के काबिल न होंगा । इसलिए ही बाबासाहब अम्बेड़कर की सूझ है कि शिक्षित बनों तभी अछूत को मानव समझ समाज स्वीकारने को मज़बूर हो सकेगा ।

एक और सीता :

कहानी की नायिका सीता ठाकुर की हवस का शिकार होती है तब वह अछूत नहीं रहती पर एक चीज़ बन जाती है । ठाकुर की ऐसी हरकत का ज़वाब अपने हाथ में गंड़ासा लेकर ठाकुर को लक्ष्मणरेखा से रोकने का सूचन करके दिखा देती है कि वह एक मानव है खिलौना नहीं ।

आदमी :

कारिया, ओरांव अपनी शादी-सुधा जिंदगी में खुश है पर जंगलबाबू

की हवस भरी निगाहों से सब कुछ तहसनहस हो जाता है । जंगलबाबू का शोख है कि मज़दूर स्त्री का यौनशोषण करके अपनी प्यास बुझाना । यहाँ मज़दूर वर्ग मानवी न रहकर केवल उनके शौक का विषय बन जाते है । जिसका वह भरपूर लाभ उठाते समय किसी के जीवन को बर्बाद कर देते है ।

अस्वीकृति :

विक्रम बुद्धिजीवी, शिक्षित दलित युवक होने से उसका बहिष्कार करके उसे केवल अछूत मानकर उसको लेखक की बेटी के वर के रूप में अस्वीकृति दी जाती है । जिसका मुख्य कारण केवल उसे एक आम आदमी न समझकर सिर्फ अछूत ही माना जाता है ।

अषाढ़ का एक दिन :

भगेलू अपने परिवार की परिस्थिति को देखकर शिवनाथ सिंह के वहाँ हल चलाने जाता है पर वहाँ उसका अपमान होता है और वह काम छोड़ देता है । इस प्रकार शिवनाथ सिंह सरकारी ज़मीन हड़पकर दलितों को भूखे पेट मरने के लिए छोड़ देते है । इस मुसीबत से बचने के लिए वह पत्नी को वस्तु समझकर शिवनाथ सिंह के वहाँ भेजता है पर परिस्थिति बदलकर उसकी भेट मृत्यु से हो जाती है । इस प्रकार शिवनाथ सिंह के लिए दलित वर्ग मानव न होकर सिर्फ वस्तु ही है ।

कमीज़ :

रामा अपने मालिक की भेंस को बाढ़ में से बचाने के लिए मालिक का हुकम मानकर अपनी जान गवाँ देता है । ऐसा हुकम देकर मालिक की सरमुखत्यारशाही से स्पष्ट हो जाता है कि रामा मनुष्य नहीं पर पशु से बदतर है । उसके जान की किंमत दस-पंद्रह किलो गेहूँ ही है जो परिवार की सहायता के रूप में दिया जाता है । इस प्रकार मानवता का अपमान होता हुआ दिखाई देता है ।

पन्ना धाय का दूसरा बेटा :

ज़मीदार के बेटे द्वारा नौकर पर हुए अत्याचार में एक भाई दूसरे भाई के खूनी को खूनी साबित करने में नाकामयाब होता है । इस षडयंत्र पर पुत्र गँवाने का शौक माँ को नहीं है । वह भी ज़मीदार के दबाव में आ जाती है । इस प्रकार ज़मीदार का बेटा भी स्वतंत्र घुमता है और यह सच्चाई वकील को पता चलती है तभी प्रश्न उठता है कि ज़मीदार अपने नौकर को मानव न समझकर अपने द्वारा किए हुए गुन्हों को भुगतनेवाला केवल व्यक्ति है ।

सर्प-दंश :

गोकुल अपने परिवार की भूख मिटाने के लिए महेनत के बदले में मक्का की बालियाँ लेने जाता है पर संयोगावश सर्प दंश के कारण वह वहाँ पड़ा रहता है । इस बात का पता चलने पर प्रधानजी गोकुल को बुलाकर चोरी करने की सजा देता है जैसे किसी साँप ने दंश लिया हो । प्रधानजी जैसे ईश्वर हो इस प्रकार गोकुल को सज़ा देकर गोकुल मानव न हो पर कोई पशुतुल्य समझकर अपना शिकार बना लेते है ।

बिच्छूघास :

मूसा के छूने से दूर्गादत्त की शिकायत पर हेड मास्तर उसे बिच्छूघास से मारते है जैसे कोई पशु को भी न मारता हो पर होटल में हुई मुलाकात में दूर्गादत को अपनी भूल का स्वीकार करके उसे एक मनुष्य के रूप में स्वीकार करता है ।

छिपे हुए हाथ :

ज़मीदार ज़मीन हड़पने के लिए छिगुंरी को मोहरा बनाता है जैसे वह मनुष्य नहीं खेल का मोहरा हो । तहसीलदार छिंगुरी की पत्नी और भाई के अनैतिक संबंध की बात करके उसे गुन्हा करने के लिए मज़बूर कर देते है ।

कामरेड का सपना :

ललई पंडित और सरजू ठाकुर के द्वारा कामरेड की हत्या होती है जिसे रिश्वत देकर थानेदार को मुठभेड़ का मामला बनाकर दलित व्यक्ति की आहुति दे देते है । उनके लिए गरीब व्यक्ति केवल रास्ते के पत्थर के समान ही है जिसे बड़ी आसानी से दूर किया जाता है । चंद्रावती के चरित्र द्वारा मानवगौरव की झांकी दिखाई देती है ।

हरिजन सेवक :

मुंशी रामशरणलाल गांधीवादी होने के कारण पिछड़े वर्ग को शिक्षित बनाने की कोशिश में है । ज़मीदार द्वारा किए हुए अत्याचार का विद्रोह करने पर उन्हें नक्सलवादी मानकर उन पर अत्याचार किया जाता है जिसमें ज़मीदार के साथ पुलिसवालों की मिली भगत जानकर स्पष्ट हो जाता है कि दलित वर्ग को केवल शोषण करने का साधन माना जाता है न कि मानव समझकर व्यवहार किया जाता है । स्वतंत्र भारत में भी स्वातंत्र सेनानी को सिपाही के रूप में न समझकर केवल रिश्वत बटौरने का साधन माना जाता है ।

उठे हुए हाथ :

राघो महतो अपनी हवस संतोषने के लिए एक अछूत लड़की का शिकार करता है लेकिन अपनी ही जाति की लड़की के हुए अपमान का बदला बस्तीवाले बदला लेकर राघो महतो को बता देते है कि वह अछूत लड़की भी वही मानव की कोटी में आती है जिसका एक निर्दयी द्वारा शोषण हुआ है । बसंती का बेटा इस प्रकार अपनी माँ का बदला लेने का निर्णय करता है इसी में वह पौरूषत्व की झाँकी दिखाई देती है ।

शवयात्रा :

सूरजा अपनी मातृभूमि न छोड़कर वही पर बसकर अपना पक्का मकान बनाने का सोचकर बहोत बड़ी भूल करता है । क्योंकि उसे ऐसा सोचकर अपने लिए मुश्किल खड़ी की है । रामजीलाल की इज़ाजत के बगैर उसे स्वतंत्र रुप से सोचने का अधिकार नहीं है इसलिए वह मानव न होकर पशु से भी गिरा हुआ दिखाई देता है ।

अब नहीं नाचब :

कन्हई भगत चमार होने के कारण शेरसिंह, विद्यासागर, पंडितजी द्वारा अनाज न मिलने पर अपमानित होता है और अपने महेमानों द्वारा सहानुभूति का पात्र बनता है । उसके इस प्रकार हुए अपमान का बदला सारा समाज लेकर कन्हई भगत एक मनुष्य है जिसका स्वीकार उन्हें करना ही पड़ेगा ऐसा व्यवहार करके अपने समाज के व्यक्ति और समाज को गौरव देने के लिए मज़बूर करके उनको बताते है कि हम भी मनुष्य है ।

जीवनसाथी :

रेखा और प्रेम दलित दंपती है जिसका असामाजिक तत्व द्वारा अपमान होता है । रेखा को गंदी नज़रों से देखा जाने पर पुलिस से फरियाद करने पर पुलिस सच्चाई का साथ न देकर गुंडो का साथ देकर स्पष्ट दिखाया गया है कि वह केवल खिलौना ही है जिसे जब चाहे खेल सकते है या तोड़ सकते है । रेखा उन गुंडो का शिकार बन जाती है और तभी इस दुःख में व्यथित होकर प्रेम पागल बनकर पुलिस पर और अपने आप पर गोली चलाकर साबित कर देते है कि हमें मनुष्य की तरह ही देखा जाय ।

दाग दिया सच :

मालती और महावीर प्रेमविवाह करके अपने गाँव से दूर चले जाते है पर परिवार पर दबाव होने से वह चाहकर भी उनकी रक्षा नहीं कर सकते ।

महावीर और मालती पर किए अत्याचार को देखकर हमें सोचने के लिए मज़बूर कर देते है कि क्या सच में मालती और महावीर मनुष्य है जिसके साथ इतना बूरा व्यवहार हुआ । जिन्होंने उन पर अत्याचार किया है वह मानव है या असुर यह तय कर पाना कठिन है ।

आतंक :

बच्चों की लड़ाई को बड़ा गुन्हा मानकर ठाकुर जिस प्रकार राखी को सज़ा देता है तभी पूरा समाज मूक बनकर देख रहा है । तभी प्रश्न उठता है कि समाज और ठाकुर मनुष्य है जिन्हें संवेदना नहीं होती है । पर विमला का प्रतिकार देखकर पता चलता है कि अभी मानवता जींदा है ।

बलात्कारी :

बिल्टु को गलत जुर्म में गुन्हगार बनाकर ठाकुर अपनी इज्जत तो बचा लेते है पर उनकी नज़रों में दलित की कोई इज्जत नहीं है क्योंकि वह मनुष्य न होकर पशु से भी बदतर है पर बिल्टु अपनी पत्नी का बदला लेकर ठाकुर को बता देते है कि दलित भी मनुष्य है उनकी भी इज्जत है । कहानीकार ने नायक को खुले आम अपराध करके ठाकुर को अपनी पहचान कराने का साहस बटोरा है ।

षड़यंत्र :

सरकारी स्कूल की मुफ़त में तनख़ाखानेवाले शिक्षक जरूरत पड़ने पर दलित व्यक्ति को मान देते है और काम खतम होने पर धुत्कार देते है । दलित की बेटी को हवस का शिकार बनाने की कोशिश करके उनकी हेवानियत दिखाने में कामयाब होते है । एक शिक्षत आदर्श सोचवाले शिक्षक की बातों को जानकर दलित समाज 'अप्पो दीपो भव' की भावना जागृत होती है और संगठन के द्वारा अपने मानव होने का अधिकारों को प्राप्त करने में सफल होते है ।

इंकलाब जिन्दाबाद :

बथुआ को अग्रस्थान देकर जंटाशंकर और मुखियाँ की मिली भगत के कारण एक मासूम दलित युवक बलि बनता है । दलित युवक को प्रोत्साहित और अग्रस्थान देकर वह स्वयं को महान बनाकर एक दलित युवक से धोका करके उसकी जान देकर पुरस्कार प्राप्त करने में कामयाब होते है । तभी हमें लगता है कि उनके हिसाब से वह दलित युवक नहीं पर पुरस्कार प्राप्त करने का साधन मात्र है ।

इशारा :

पहलवान को मिले पुरस्कार को उसके उस्ताद द्वारा हथियाकर मद्धे पहलवान शोषण होता है । वहाँ रोज़गार करता है तो वह पर भी उसे जिल्लत का सामना करना पड़ता है। वह अपने हुनर से आर्थिक स्तर पर खड़ा होना चाहता है तो जाति के कारण वहाँ पर मात खाता है । इस प्रकार दलित व्यक्ति को उपर उठने के लिए कई संघर्ष करना पड़ता है क्योंकि समाज उसे मनुष्य न समझकर मूल्यहीन वस्तु ही मानते है ।

अपना गाँव :

जमींदार द्वारा किए हुए शोषण का विरोध करके बड़ी हिम्मत से मुकाबला करता है । जमींदार एक दलित व्यक्ति को मनुष्य न समझकर एक दलित स्त्री को नंगा घूमा सकते है । महेनत से उगाई हुई फसल को जला सकता है । इसमें ज़मीदार किस प्रकार मनुष्य माना जाएगा ।

सपना :

मंदिर के निर्माण में जिन्होंने महेनत की उन्हीं लोगों को अपमानित करते हुए उन्हें जूतों की रखवाली का काम देना वह कहाँ का न्याय है । मंदिर और ईश्वर सबका है ऐसा कहनेवाला ऋषि और सच्ची परिस्थिति से सबको अवगत कराते-कराते वह गिरफ़्तार हो जाता है । ऋषि की एक ही इच्छा है मनुष्य को मनुष्य ही माना जाए !

गुजराती दलित कहानियाँ :

बदलो :

गोकुल भूख से तड़पते माधुसंग की मदद करता है तो माधुसंग का बेटा वजेसंग दूसरे दृश्य में गोकुल को शराब के नशे में धूत बनकर हेवान की तरह पीटता है । गोकुल के खड़े न होकर उसे मान न देने पर वजेसंग मानव न रहकर राक्षस बनकर गोकुल को पीटता है । यहाँ पर गोकुल और वजेसंग दोनों में से मनुष्य कौन है वह निर्णय कर पाना आसान है ।

सोमली :

सरपंच के शोषण का भोग सोमली के साथ पूरा परिवार बनता है । सरपंच अपनी हवस का शिकार सोमली को बनाता है पर सोमली उसका विरोध करके उसे मौत के घाट उतार देती है । सोमली के साथ न्याय करके सच्चे अर्थ में न्यायाधीश ने मानवमूल्य का महत्व दिखाया है ।

दायण :

बेनीमा सेवाभावी औरत है जिसने पशली को मातृत्व प्रदान करने में मदद की थी जिसका ऋण भूलकर अपने बेटे को बेनीमा को न छूने की सलाह देकर अहेसान फरामोशी को प्रदर्शित किया है । इस घटना को देखकर तुरंत निर्णय हो जाता है कि मानव कौन है ।

रखोपाना साँप :

वीरजी अपने पिता के कर्ज को उतारने के लिए जीलुभा की गुलामी सहता है पर जीलुभा व्यक्ति को केवल शोषण करने का यंत्र मानकर गोकुल, रूडी, माँ सभी का शोषण करता है । रूडी का यौनशोषण करके गोकुल साँप की तरह दंश लेता है यहाँ पर जीलुभा की कौन सी मानवता दिखाई गई है । वह प्रश्नचिन्ह समान है ।

कुळदीपक :

कुळदीपक को बचाने के लिए एक मज़बूर औरत अपने शरीर का बलिदान तो करती है पर वह नाकामयाब होती है । नशे में धूत हेवान के हाथ का शिकार बनकर वह अपने कुळदीपक को मृत ही पाती है । इस मज़बूर स्त्री को माँ न समझकर अपने हवस को संतोषने का केवल यंत्र माननेवाले मानव को क्या मानव कहा जायेगा ?

सूरज ने कहो उगे नहीं :

वशीया सरकारी ज़मीन पर महेनत से फसल उगाता है पर ठेकेदार उसकी फ़सल को जलाकर खाक कर देता है । ठेकेदार एक दलित व्यक्ति की तरक्की नहीं चाहता और वह ईर्ष्या के मारे निम्न व्यक्ति का इस प्रकार शोषण करके स्वयं असुर बन जाता है ।

रामराज्य :

मुखी को जूते की चौट लगने से करमला को जानवर की तरह भरे बाज़र में पीटकर मुँह में जूता डालकर अत्याचार करते है । यहाँ करमला की स्थिति पशु से भी बदतर है । गाय की हत्या करके अंगूठी निकालना वहाँ पर भी मुखी का चहेरा स्पष्ट दिखाई देता है । बाढ़ आने की स्थिति में सवर्णो की नज़र टीले पर होने से करमला हिंमतपूर्वक अपने टीले की रक्षा करता है पर अंत में बेटे की गिरफ़्तारी के कारण वह दूसरों के कंधे पर सवार होकर स्मशान जाता है । इसमें मुखी को मानवताविहिन दिखाकर निम्न व्यक्ति पशु से भी गिरे हुए लगते है ।

मारे चा पीवी नथी ! :

दरबार के बेटे की शादी की ख़ुशी में नौकर के घर चा पिलाने की व्यवस्था दरबार करता है क्योंकि दलित व्यक्ति को घर बुलाना नहीं चाहते । जिसका विरोध जीवा को करते दिखाकर स्वयं एक मनुष्य है और दलित के गौरव को दिखानेवाली कहानी है ।

सरनामुं :

आरती के पक्षपाती बर्ताव से स्पष्ट हो जाता है कि एक शिक्षित व्यक्ति भी अंधविश्वासों का शिकार है । और वह अपने मानव होने के अहेसास को भूलकर केवल अछूत व्यक्ति का अस्वीकार करती है । वह शिक्षित होते हुए भी दलित को मनुष्य न समझकर उससे मुँह मोड़ लेती है ।

जात :

दलित वर्ग द्वारा मंदिर का निर्माण हुआ है । लेखक माँ की मनोकामना पूर्ण करने के लिए आए है पर जब उन्हें सच्चाई का पता चला तो उन्होंने इसका विरोध करके दोनों वर्ग के लोगों को एक करके दरबार की अग्रता का विरोध करके अपने समाज को और दरबार को दिखाते है कि हम भी मनुष्य है ।

रेशनालीस्ट :

गुरु और शिष्य का संबंध दिखाकर मानव को मानवगौरव दिलाने की कोशिश तारीफ़ के काबिल है । बालुजी की तानाशाही को दिखाकर हमें स्पष्ट रुप से एक दलित व्यक्ति की व्यथा का निर्देश किया है जिससे बालुजी की अत्याचारी नीति का पर्दाफाश किया है । गुरु के कर्तव्य को दर्शाते हुए एक श्रेष्ठ मनुष्य की पहचान करवाई है ।

रोटलो नज़राई गयो ! :

एक बालक जो गरीब है और उच्च शिक्षा के लिए आता है जिसके लंचबोक्स में रोटी होने से सभी के मज़ाक का पात्र बनता है जिसके कारण वह चोरी करने के लिए मज़बूर होकर चोरी करके गुन्हगार बन जाता है । अमीरवर्ग उसे सज़ा दिलाकर उसकी भावना को समझे बगैर उसे सज़ा देने के लिए उत्सुक है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को न समझकर बहोत बड़ी भूल करता है वह सच्चाई से हमें अवगत करवाकर गरीब को मानव समझने का अनुरोध किया है ।

लोहीनी लागणी :

अपनी हवस को संतोषने के लिए किसी भी दलित स्त्री का शोषण किया जाने पर जेठा उसका प्रतिकार करने के लिए उत्सुक है पर परिस्थिति बदलने पर कुबेर की बेटी मंगु की तरह भलसंग की बहन 'संतोक' जब इस प्रकार शोषण होने पर जेठा ही उसकी मदद करता है तब मनुष्य दलित व्यक्ति है या उच्च वर्ण का है वह स्पष्ट हो जाता है ।

सगपण :

मणकी को हवस का शिकार बनाकर डॉक्टर जो शिक्षित है उसकी मानवता पर घृणा होती है और रुडिया की विरह वेदना के कारण पागल होने की स्थिति में मणकी के पिता की देखभाल से मज़दूर, अनपढ़ व्यक्ति की मानवता गौरव लेनेवाली है ।

थळी :

दलित स्त्री को यौनशोषण का केवल साधन माननेवाले मानसिंह का हिंमतपूर्वक विरोध करके रेवी ने दिखाया है कि वह भी मनुष्य है जिसका उपयोग साधन के रूप में कोई हवसखोर नहीं कर सकता ।

लाखु :

दलित स्त्री का यौनशोषण करने के लिए तैयार रमतूडा के पात्र द्वारा अछूत स्त्री को हवस के लिए छूना अपवित्र न समझकर उसकी शोषणनीति से परिचित करवाया है । काळी भी अपना बचाव करके रमतूडा को दिखा देती है कि वह मनुष्य है कोई साधन नहीं ।

ढोल वाग्यो :

मंगल की शादी में ढोल बजाना बहोत बड़ा गुन्हा हो ऐसा माननेवाले वरसंग ने जिस प्रकार अत्याचार किया उससे स्पष्ट होता है कि एक दलित व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है । वह हंमेशा परतंत्र ही बनकर अत्याचार को सहते हुए मंगल अवसर को अमंगल करने में वरसंग की तानाशाही दिखाई देती है ।

मारण :

दशरथ सोलंकी दलित होने के कारण तेजस्वी होते हुए भी कामयाब नहीं होता । मृत्यु के बाद त्रिदेव के दर्शन से धन्यता का अनुभव तो करता है पर अछूत होने के कारण स्वर्गलोग में भी उसका अस्वीकार होता है । यहाँ तक उस पर अत्याचार होने पर अपने आपको असहाय और अकेला पाता है । मृत्युलोक और स्वर्गलोक की अछूत के प्रति घृणा समान ही है क्योंकि दोनों स्थान पर अछूत को मानव समझने पर बाध लगाया जाता है ।

डंख :

प्रस्ववेदना से त्रस्त और बच्चे के आने के बाद की भूख को शांत करने के लिए मंगा रावणहत्था के सहारे रोटी की तलाश में बापू के वहाँ जाता है पर वहाँ वह केवल मनोरंजन का साधन ही बनकर रह जाता है । मंदिर के द्वार पर अस्वस्थ होकर गिरता है तो पूजारी और लोगों के द्वारा पीटा जाता है । अंत में इस प्रकार पीड़ा से त्रस्त अपनी पत्नी के पास पहुँचने पर पत्नी और बच्चे को मृत पाकर दु:खी हो जाता है तभी उसके मानव होने का अस्वीकार उसे पीड़ित करता है और तभी 'वंदे मातरम्' के गीत की गुंजन से आज़ाद भारत की परिस्थिति पर प्रकाश छा जाता है ।

ढोलनी दांडीए :

अमृत दलित शिक्षित युवक होते हुए भी मंगा जैसे दलित पर घृणा दृष्टि से देखता है और उसे अपमानित करता है । मंगा परिस्थिति के कारण उस अपमान की परवाह किए बिना अपने भूखे परिवार का सोचकर अपमान के घूँट पी लेता है । पर जब चौधरी द्वारा अमृत का अपमान होता है तो उसे सुकुन मिलता है । इस प्रकार एक दलित दूसरे दलित का स्वीकार करने में असमर्थ होता हुआ दिखाया है । हालाकि दलित जानता है कि समाज उसे मनुष्य मानने से कतराते है ।

कदाच :

अमला और जडी का घर जल जाने के कारण चुनाव का माहोल नज़दीक होने पर गंगुभा उनकी मदद करते है । चुनाव जीतने के लिए अमला का उपयोग करते है पर जैसे ही जीत प्राप्त होती है उसका अस्वीकार करके उसको मास्तर द्वारा शिकार बनाकर घर जला देते है पर भूतकाल को याद करके अमला अभी भी गंगुभा की सहायता का इंतजार करता है पर सत्यता प्राप्त होने पर उसे लगता है वह केवल गंगुभा के खेल का केवल एक मोहरा है ।

वळगाड :

वछराम द्वारा यौनशोषण के दु:ख से त्रस्त लखमी को अंधश्रद्धा के कारण उसके माता-पिता भूवा को भगवान समझकर भूत की छाँव पड़ी है ऐसा मानकर लखमी को वछराम के पास ले जाते है पर लखमी हिंमतपूर्वक वछराम को झंझीरों से पीटकर देवी के रूप में असुर का संहार करने पृथ्वी पर उतरी हो ऐसा लगता है । दलित स्त्री को केवल साधन माननेवाले को लखमी बराबर सबक सिखाती है ।

टेस्टट्यूब बेबी :

रीमा द्वारा चुना गया दलित युवक का अस्वीकार करके रीमा की दूसरी शादी करके पिता धन्यता का अनुभव करता है पर रीमा ने की हुई गलती की सज़ा वह अभी भुगत रही है और टेस्टट्यूब बेबी करने का सोचती है पर जब सास द्वारा उस बेबी के अवतरण पर जाति के विषय में मतभेद होने के कारण प्रश्न उठता है कि क्या व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है उसमें भी जाति को प्रधान स्वरूप स्वीकार जाता है ।

वादळो साथे वातो करती पाइलट पंडया :

दलित व्यक्ति का अस्वीकार करना उसे धृणा की नज़रों से देखना वह शिक्षित और उच्च पद पर बिराजमान व्यक्ति को शोभा नहीं देता । रघु द्वारा भूतकाल बताकर शिक्षित परिवार को धृणा का पात्र बनना, गाँव में जातिवाद के कारण अत्याचार का भोग बनकर मुंबई स्थित होना, इन सब बातों के कारण पाईलट लीला के दादाजी का अस्वीकार करने की क्रिया सभी में दलित व्यक्ति को मानव न समझकर केवल दलित ही मानना व्यंग्यात्मक है ।

दाढ़ :

नानका द्वारा समाज की स्त्री को लालजी की हवस के शिकार से रक्षित करना पर लालच के कारण गुन्हागार साबित होने पर मज़बूर करने की घटना से नानका के मन में बदले की भावना जागृत होती है । पर नानका की पत्नी कमली का यौनशोषण की परिस्थिति का हिंमतपूर्वक मुकाबला करके लालजी को सबक सिखाना गर्व की बात है क्योंकि लालजी जैसे उच्चवर्ण के लोग दलित को शोषण का साधन मानते है न कि मानव ।

जीत :

दलित बालक को अछूत मानकर अंतिम पंक्ति में बिठाना और निमेष द्वारा किए विरोध के कारण शिक्षक का अपमान न करने की सलाह से सच्चाई सामने आती है कि सही अर्थ में मानव कौन है । डॉक्टर के पेशे को शरमींदा करनेवाले उच्चवर्ण के शिक्षित लोगों को मानव मानना शर्म महसूस होती है । यहाँ सच्चे अर्थ में जाति नहीं पर एक मनुष्य के कर्म ही उसकी सच्ची पहचान है ।

चबरख़ी :

दलित बालिका का जाति के आधार पर अपमानित करना शिक्षित

व्यक्ति को शोभा नहीं देता पर एक छोटी बच्ची की सहीं सोच के कारण दलित बालिका का स्वीकार करना उत्तम मनुष्य की पहचान ही तो है ।

जटायु :

तीन पीढ़ी से पीसते चले आ रहे व्यक्ति केवल शंकरदा की गुलामी को स्वीकारते हुए जीते है पर समय के बदलाव में माना एक नवयुवक है जो लाडु की इज्जत की रखवाली तो करता है पर अपने आपको गुलामी से आज़ाद भी कर देता है । वह अजय को दिखाता है कि हम भी मनुष्य है । हमें भी इज्जत से जीने का अधिकार है ।

(3) जातिवाद का विरोध :

भारतीय हिन्दू संस्कृति का मूलाधार धार्मिकग्रंथ होने से आज भी हमारी मानसिकता पुरानी ही बनी रही है । धार्मिक मान्यताओं के कारण ही हमारी समाज-व्यवस्था बिखर गई है । जिसके फलस्वरूप जाति और ज्ञाति के भेदभावों को स्वीकृति मिल चुकी है ।

हिन्दूओं में रूढ़ यह अस्पृश्यता बेजोड़ तथा अद्वितीय है । संसार के इतिहास में उसका पर्याय नहीं । जो हिन्दू उन्हें स्पर्श करने से अपवित्र होते है वे शुद्धिकरण विधि करने से शुद्ध हो सकते है, परंतु अस्पृश्यों को शुद्ध कर लेने का कोई साधन नहीं है । वे जन्म से ही अपवित्र है । वे जन्मभर अपवित्र ही रहते है, अपवित्र के रूप में ही मरते है और वे जिन बच्चों को जन्म देते है वे अपने भाल पर अपवित्रता का कलंक लेकर ही जन्म पाते है । हिन्दूओं की इस धर्म-व्यवस्था में इस प्रकार दुर्दशाकृत जीवन के भागी दलितों के लिए मानव होकर भी इनके भाग्य में नारकीय जीवन है ।

महात्मा फूले ने अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए सन् 1873 ई. में "सत्यशोधक समाज" की स्थापना की । जातिभेद, धर्मभेद जैसी नीति पर हुमले किए और इस प्रकार हिन्दू धर्म में प्रचलित वेद, श्रुति, स्मृति, पुराणोत्क अनेक सिद्धांतों और मतों का आह्वान दिया । सत्यशोधक आंदोलन याने सामाजिक दासता में अनेक बरसों तक दबे हुए दलितों के प्रथम प्रतिकार की आवाज़ थी ।

जातिभेद से अपना देशाभिमान कितना संकुचित हुआ है । जाति से ज्ञान, कला, शास्त्र इत्यादि जहाँ के वहाँ कुण्ठित हुए है, जाति से धर्म-विचार और आचार में कितना मतभेद उत्पन्न होकर वह बैर छल और मत्सर के लिए कारण हुआ है, जाति से देश में या विदेश के लिए प्रवास कठिन हुआ है ।

जाति से परद्वीपस्थ और परधर्मीय लोगों से अलग रहने लगने से कितना नुकशान होता है जाति से हमारी परोपकारिता हमारे विचारों, हमारी भूतद्रया, हमारा बंधुप्रेम, हमारी उदारता, धर्म बुद्धि का क्षेत्र कितना मर्यादित हुआ है । इसी समस्याओं को सुलझाने में आगरकरने 19वीं सदी में महाराष्ट्र में रूढ़िग्रस्त बंधनों को तोड़कर बुद्धिप्रमाण और विवेक-स्वातंत्र्य का प्रथम उदघोष किया । इस जातिवाद के विरोध में लोकमान्य तिलक, महर्षि प्रो. आण्णसाहब कर्वे, श्री महाराज सयाजीराव गायकवाड, गोपालकृष्ण गोखले, महात्मा गांधी, महर्षि विठ्ठल रामजी शिन्दें, स्वातंत्र्य वीर सावरकर, राजर्षि श्री साहू महाराज आदि थे ।

'मनुस्मृति' के चार वर्णो को न मानकर समाज-व्यवस्था की स्मृति स्थापित करनेवाले, समता और स्वातंत्र्य के प्रतिपादक तथा दलितों के भाग्यविधाता डॉ. बाबा साहब अम्बेड़कर ने अनावस्यक, अन्यायी ढोंगी प्राचीन व्यवस्था के प्रति विद्रोह करके कहाँ "अस्पृश्यता राष्ट्रीय प्रश्न है, उसे मानवीय मूल्य से तौलना चाहिए, अस्पृश्यता से भारतीय एकात्मक जीवन खंडित हुआ है। जाति व्यवस्था के निर्मूलन के सिवा देश सम्पन्न और समृद्ध नहीं होगा, हिन्दू समाज का समता की नींव पर पुनर्गठन होने की आवश्यकता है, चातुर्यवर्ण की दीवारें गिरा कर एक वर्णी समाज में सच्चा राष्ट्र पलता है । इस प्रकार की भाव विह्वलता और तड़प दिखाई । हिन्दू समाज को दलितों की उपेक्षित, बहिष्कृत जिंदगी का नग्न, यथार्थ रूप दिखाकर उनके लिए समान अधिकार की मांग की। उच्चवर्गीय सनातनी हिन्दूमन को दलितों की अनन्त यातनाएँ, दर्दभरी पशुवत हालत पर विचार करके भेद-भाव, ऊँच-नीच, जातपाँत की भेदनीति का त्याग करने के लिए उन्होंने कई बार ललकारा । पर व्यर्थ यह भेद-नीति समाज का स्थायी अंग बनकर ही रही । इसलिए जो धर्म न्याय नहीं देता उसे त्याग देने का विचार शुरू हुआ । परिणामतः सन् 1935 ई. में उन्होंने अपने धर्मान्तर की ऐतिहासिक घोषणा की - "मैं हिन्दू के रूप में जन्मा हूँ, पर हिन्दू के रूप में मरूँगा नहीं ।"[110]

दलित कहानियों को अधिकांश समस्याओं के मूल जाति की भावना ही है । जब वर्ण और वर्ग को दूर नहीं किया जाएगा तब तक हमारी मानसिक संकुचितता बनी रहेगी । मैंने गुजराती हिन्दी दलित कहानियों में निरूपित इस समस्या का अध्ययन, विश्लेषण किया है ।

हिन्दी दलित कहानियाँ :

लटकी हुई शर्त :

बाबुओं के घर जूठी पतल उठाने का विरोध करके गंगाराम ने जातिवाद का विरोध किया है । गंगाराम ने बाबुों को हर प्रकार से मदद की है पर जाति के प्रश्न पर शर्त के आधार पर विरोध करके समानता स्थापित करने का प्रयत्न करके एकता की बात की है ।

एक और अंत :

टुनरा और सुमनी का बेटा नन्हुआ जाति के कारण टुनरा की मौसी के लिए धृणापात्र बनता है । टुनरा इस प्रकार के व्यवहार से नन्हुआ को शिक्षित बनाकर समाज में उसका स्थान बनाने के लिए सोचता है जिससे समाज भी जातिवाद के विरोध के लिए सरलता से तैयार हो सके ।

एक और सीता :

सीता और रमिया का ठाकुर शोषण करता है जिसमें सीता दलित स्त्री होने से अपने पति की कमज़ोरी के कारण स्वयं हिंमतपूर्वक ठाकुर को लक्ष्मणरेखा खींच कर सावधान करती है । जाति के कारण होनेवाले अन्याय का विरोध करती है ।

आदमी :

जंगलबाबू दलित स्त्रीको केवल यौनशोषण का साधन मानकर उन बेबस मज़दूरों का शोषण करते है जिसमें कारिया और ओरांव अपनी जान गँवा देते है । कारियाँ ओरांव का बदला लेकर दलित को कमज़ोर समझने की भूल न करने का कहता है ।

अस्वीकृति :

विक्रम दलित होने के कारण सक्षम होते हुए भी उसका अस्वीकार होता है जिससे लेखकने कहानी में दिखाया है कि अस्वीकृति व्यक्ति की होनी चाहिए या जाति की जो समाज के लिए प्रश्न उठा है ।

अषाढ़ का एक दिन :

भगेलू दलित है जिसे सरकार द्वारा ज़मीन मिली है । सरकारी ज़मीन को हड़पने के लिए शिवनाथ सिंह भगेलू को अपमानित करके काम न करने का कहते है । इस वज़ह से पूरा परिवार भूखा होने के कारण भगेलू अपनी पत्नी को शिवनाथ सिंह के घर भेजता है पर अपनी गलती का अहेसास होने पर लेने जाने पर मौत मिलती है ।

कमीज़ :

राम दलित होने के कारण मालिक के हुकम का गुलाम ही होता है । वह अपनी जान गँवा कर भी मालिक की भैंस का बच्चा ले आता है पर केवल दस-पंद्रह किलो गेहूँ ही उनके जान की किंमत है । इस प्रकार जान कि किंमत केवल रामा की नहीं पूरे परिवार की लग जाती है जिसमें दलित परिवार फिर से शोषित बन जाता है ।

पन्ना धाय का दूसरा बेटा :

दलित धीम्मा अपने परिवार को बचाने के लिए प्राणों की आहुति देता है पर ज़मीदार और उसके बेटे अहेसान फरामोश होने से उन पर लगे गुन्हों की सज़ा दलित व्यक्ति को ही भुगतनी पड़ती है ।

सर्प-दंश :

गोकुल अपने भूखे परिवार की भूख को मिटाने के लिए स्वयं उगाई मक्का की बालियाँ चुराता है जिसकी सज़ा उसे प्रधानजी मौत सुना देता है । गोकुल दलित होने के कारण प्रधानजी उसका मनचाहा शोषण कर सकते है जो साँप की तरह दंशिला भी होता है ।

बिच्छूधास :

अछूत व्यक्ति के छूने की गलती को पशु से भी बदतर मानकर बिच्छूधास की मार की सज़ा मिलने पर मूसा दूर्गादत की मुलाकात पर दूर्गादत का पछतावा ही दिखाता है कि दूर्गादत किस प्रकार मूसा की जाति का विरोध करता है ।

कामरेड का सपना :

कामरेड कल्ला और कामरेड धन्ना पर हुए हुमले और कल्ला की मौत करके ललई पंडित और सरजू ठाकुर रिश्वत देकर बच जाते है । चंद्रावती के चरित्र द्वारा पता चलता है कि किस प्रकार दलित स्त्री होकर जातिवाद का विरोध करके विरांगना के रूप में प्रतिघात करने के लिए तैयार है ।

हरिजन सेवक :

मुंशी रामशरणलाल जैसे व्यक्ति पिछड़ी जाति के लोगों को साक्षर बनाकर स्वयं के लिए खड़े होने का सहारा देते है । हमारे समाज में निम्न वर्ण का शोषण ही होता है उसे मनचाहा रूप देकर कभी नक्सलवादी तो कभी आतंकवादी भी बनाकर उनका शोषण किया जाता है । इस प्रकार दलित

अत्याचार का विरोध करके बिमला घायल शेरनी की तरह हिंमत से सामना करती है ।

बलात्कारी : -

बिल्टुआ दलित होने से उसे पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है उसे ठाकुर साहब की गुलामी ही करनी पड़ती है । इस गुलामी में उसका और उसकी माँ का शोषण होता है और बाद में उसकी पत्नी सनेही का यौनशोषण होता है । ठाकुर की बहू की इज्ज़त से खेल कर बिल्टुआ को गलत जुर्म में फसाकर अपनी प्रतिष्ठा को बचानेवालों की पोल खोलकर बिल्टुआ जाति और अत्याचार का विरोध करता है ।

षडयंत्र :

शिक्षण को धंधा समझकर दलित लोगों का उपयोग करनेवाले शिक्षकों की पोल खोलनेवाले घनसेर राम दलित लोगों को शिक्षित करने और अपने हक के लिए लड़ने की ताकत देकर सच्चाई दिखाकर जातिवाद का विरोध करके सुखी समाज की कल्पना करता है ।

इशारा :

कामयाब व्यक्ति का जाति के कारण शोषण होता है । मद्धे पहलवान का अस्वीकार होने से वह चुप रहता है पर पुत्र की प्रगति में जाति का सवाल उठने पर अपने आपको रोक नहीं सकता और नरेन्द्रसिंह का खून करके जाति का विरोध करता है और अपने बेटे कर्मा को इस दूषण से बचा लेता है ।

अपना गाँव :

अस्सी बरस का हरिया की बहू कबूतरी को जमींदार का बेटा गाँव में नंगा घूमाता है इस घटना से हरिया सन्न हो जाता है । पंचायत के फैसले को सुनकर हरिया जमींदार द्वारा उसकी बहू पर हुए अत्याचार दूसरों की बहू पर न हो ऐसा सोचकर विरोध करता है पर फसल को जलते देखकर अपना गाँव बसाने का सोचकर जाति के साथ समाज का भी विरोध करता है ।

सपना :

सभी सुविधा से पूर्ण कोलोनी में केवल मंदिर न होने पर मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ होता है । मंदिर निर्माण में सभी धर्म, जाति के लोग

अपना योगदान देते है । प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में निम्न जाति के लोगों को जूतों की रखवाली देकर मंदिर बहार कर दिया जाता है पर ऋषि द्वारा जातिवाद का विरोध करने पर ऋषि को भी दबोचा जाता है । यहाँ तक उसे जूठे गुन्हों में फँसाकर गिरफ्तार भी किया जाता है पर ऋषि जातिवाद का विरोध करता ही रहता है ।

गुजराती दलित कहानियाँ :

बदलो :

गोकुल अछूत होते हुए भी उसमें मानवता है । विकट परिस्थिति में हाथ फैलानेवाले माधुसंग की मदद करता है पर दूसरे दृश्य में माधुसंग का पुत्र वजेसंग गोकुल को जानवर की तरह पीटकर अपनी जाति को लज्जित करता है । गोकुल ने वजेसंग को खड़ा होकर आदर न दिया क्योंकि वह बिमार था । इस वजह से वह पशु की तरह पीटा जाता है यहाँ पर हमारी सोच ठहर जाती है कि सही अर्थ में निम्नजाति का कौन है जिसका विरोध समाज करके बहोत बड़ी गलती कर रहा है ।

सोमली :

आज़ादी के माहोल में सरपंच की गुलामी को ललकारके सोमली ने जातिवाद का पर्दाफाश किया है । सरपंच निम्न जाति की स्त्री को अपनी हवस का शिकार बनाकर उसे और उसके परिवार का शोषण करता है जिसका प्रतिधात सोमली सरपंच की हत्या करके करती है । इस गुनाह की सही सजा सुनाकर न्यायाधीश ने जातिवाद का विरोध करके 'सत्यमेव जयते' के नारे को सही में साकार किया है ।

दायण :

दाई का काम करनेवाली बेनीमा अपने कार्य को पूरी ईमानदारी से करके पशी जैसी कई उच्च जाति की स्त्री को मदद करती है पर जातिवाद का स्वीकार करके बेनीमा के उपकार का बदला चुकाने के वजाह उनके निम्न जाति का दिखाकर छोटे बच्चे को भी अपनी गलती का सहभागी बनाकर अपनी उच्चता को दिखाकर बेनीमा जैसी औरत के जवाब से निम्न जाति किसकी है वह फैसला बताकर जातिवाद का विरोध किया है ।

नकलंक :

दिवा और कांति के पात्र द्वारा लेखकने जाति के विषय में जो मान्यता है उसका सच्चा दृश्य दिखाया है । जिसमें दिवा कांति के प्रति आकर्षित है पर कांति अपनी जाति को शर्मिदा नहीं करना चाहता और दिवा का उपयोग करने के बज़ाय उसका विरोध करता है । सेंधा द्वारा किया गया कृत्य अपने जाति को शर्मिदा दिखाया है जिसमें स्पष्ट हो जाता है कि कौन उच्च जाति का है ।

सूरज ने कहो उगे नहीं :

जीलुभा उच्च जाति का है जो वंशीया जैसे दलित व्यक्ति पर जुल्म करता है । वंशीया दलित होने के कारण सरकार से मिली ज़मीन पर कड़ी महेनत करके फसल उगाता है पर जीलुभा के अत्याचार से फसल ख़ाक हो जाती है । जिसका परिणाम वंशीया को भुगतना पड़ता है । जाति के कारण एक मज़दूर व्यक्ति का किस प्रकार शोषण होता है ।

रामराज्य :

करमला जूता बनानेवाला दलित व्यक्ति है । जिसके सीले हुए जूतों से मुखी के पैर में चोट आई जिसकी सज़ामें करमला को पशु की तरह पीटा गया। अंगूठी निकालने के लिए मुखी गाय की हत्या कर देता है । इस घटना से करमला अपने अपमान का बदला लेता है । और मुखी को उसी प्रकार पीटता है पर तीसरे दृश्य की घटना में बाढ़ आने के कारण सवर्ण की नज़र टीले पर बिगड़ने से करमला मिली हुई सरकार का विरोध करके काँटे की दिवार हटा देता है और इस प्रकार के विरोध का परिणाम होता है उसके बेटों को सज़ा और वह किसी ओर के कँधे पर सवार होकर स्मशान जाता है । इस प्रकार की घटना से करमला ने जाति को नहीं मानव समज़कर समाज को व्यवहार करने का निवेदन किया है ।

मारे चा पीवी नथी! :

दरबार की ख़ुशी के हिस्सेदार केवल उच्चवर्ण होने पर जीवा ने विरोध किया है । दरबार के नौकर के घर चा पीलाने की सूचना का विरोध करके जीवा ने जातिवाद का विरोध करके समानता की बात करने का प्रयास किया है ।

सरनामु :

शिक्षित व्यक्ति द्वारा तेजस्वी विद्यार्थी की जाति की जानकारी के बाद

के विरोध को दिखाकर स्पष्ट दिखाया है कि शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित ही माना जायेगा । शिक्षित व्यक्ति आरती स्वतंत्र सोचनेवाली महिला होते हुए भी ऐसे अंधविश्वासों को मानकर शिक्षण स्त्रृद्ध अपमानित करती है ।

जात :

दलित समाज द्वारा निर्मित मंदिर पर हक्क जमाकर उच्च जाति एक प्रकार से उनका शोषण करती है पर दलित समाज के शिक्षित युवक कनु के द्वारा विरोध करने पर पूरा समाज उच्चजाति को दिखा देता है कि हम भी मनुष्य है और हमारा भी हक है । मंदिर पर पहला नेज़ा चढ़ाकर जातिवाद का विरोध किया गया है ।

रेशनालीस्ट :

गुरु और शिष्य के संबंध में जाति का स्थान न दिखाकर एक श्रेष्ठ शिक्षक डॉ. महेता को चित्रित करके जातिवाद का विरोध दिखाया है और भूतकाल में घटित घटना में बालुजी की तानाशाही का शिकार भीखला के चरित्र से स्पष्ट होता है कि जातिवाद का विरोध जरूरी है ।

रोटलो नजराई गयो ! :

दलित लड़के रघु का अस्वीकार करके उसे अपमानित किया जाता है । इस अपमान का कारण उसकी जाति और गरीबी है जिसके कारण रघु गुन्हा करके अपने टिफिन की रोटी को छोड़कर दूसरे का टिफिन चुराकर गुन्हा कर देता है । इस प्रकार न चाहते हुए भी रघु जाति और परवरिश को शर्मिदा करता है, जिसमें रघु गुन्हागार बनकर रह जाता है ।

लोहीनी लागणी :

मंगु हिंमतपूर्वक दिलपा के हाथ से छुटकर पूरे परिवार समेत गाँव छोड़कर भाग जाते है । इस अपमान के बदले में दरबार पूरे कस्बे को जलाने जाते है पर जेठा डंटकर मुकाबला करता है जिसमें पूरा कस्बा शामिल हो जाता है । दरबार को भागना पड़ता है । जेठा भी शोषण का विरोध करता है। इस विरोध में जेठा भलसंग की बहन संतोक का अपहरण करने की ठानता है पर दो अनजान व्यक्ति द्वारा संतोक पर होनेवाले जुल्म की रखवाली ही दिखा देती है की उच्चवर्ण किसका है । दिनिया की बात जैसे सही में सच्च हो गई हो की हमारा खून हलका नहीं है ।

थळी :

दलित स्त्री को हंमेशा हवस भरी निगाहों से ही देखा जाता है उसका शोषण करते समय उसकी जाति नहीं पर शरीर को महत्व दिया जाता है जिसमें उसके मान-सन्मान को कभी भी अपमानित किया जाता है । रेवी इस प्रकार के होनेवाले अपमान से तंग आकर मानसिंह को सबक सिखाकर अपने आपको मुक्त करने में कामयाब होती है ।

लाखु :

रमतुडां उच्चवर्ण का होते हुए भी उसके विचार निम्न है । वह दलित स्त्री का यौनशोषण करने में अछूत नहीं होता और काळी को शिकार बनाता है। काळी हिंमत से रणचंडी का रूप धारण करके रमतुडां को सबक सिखाती है ।

ढोल वाग्यो :

शादी के खुशहाल माहोल में दलित व्यक्ति को ढोल बजाने पर रोककर उनकी हिंसा करके मंगल अवसर को अमंगल करनेवाला असुर वरसंग के चरित्र को चित्रित करके समाज को प्रेरणा देते है कि जातिवाद एक कलंक समान है ।

मारण :

दशरथ सोलंकी एक दलित व्यक्ति है जिसका संबंध हमेशा शोषण से है । जीवित होने पर भी उसे तेज़स्वी होते हुए भी निराशा हाथ थामे खड़ी है तो मृत्यु के बाद स्वर्ग लोक में जातिवाद से संबंधित तर्कगत प्रश्नों से सभी का घृणापात्र बनकर असहाय मदद की मांग करने पर स्वयं को अकेला पाकर अपनी जाति को कोसकर जातिवाद का विरोध करता है ।

डंख :

मंगा दलित है इसलिए शोषण करते हुए बापु को प्रस्ववेदना से त्रस्त पत्नी और बच्चे की बात बताकर रोटी मांगता है पर बापु के मज़ाक का पात्र बन जाता है । स्वयं भूख के कारण अस्वस्थ होने पर मंदिर पर आराम करने बैठता है तो वहाँ जाति के कारण उसे फटकार कर अपमानित किया जाता है। मंगा लहूलूहान हालत में पहुँचता है तो मृत पत्नी और बच्चे को पाता है । आज़ाद भारत में दलित व्यक्ति की क्या हालत होती है इसका विवरण

दिखाकर 'वंदे मातरम्' गीत का गुंजन समाज को अंधी मान्यता का विरोध करने की सलाह देता है ।

ढोलनी दांडिए :

'मंगा' सफाई कामदार है पर शादी में ढोल बज़ाकर रोज़ी रोटी कमाता है पर अपने ही जाति के सुखी व्यक्ति अमृत से अपमानित होता है । मंगा परिस्थिति को देखकर अपमान का घूंट पी लेता है पर जब चौधरी द्वारा जाति को लेकर अमृत का अपमान होता है तो उसे खुशी होती है । जाति के कारण एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को मनुष्य न समझकर पशु से भी निम्न मान लेता है ।

कदाच :

अमला और जड़ी दलित पात्र है जिसका चुनाव में जीत मिल सके इसलिए उनका युक्तिपूर्वक उपयोग होता है । चुनाव में जीत प्राप्त होते ही गंगुभा उन्हें ठोकर मार देता है । एक दलित को दूसरे दलित के विरूद्ध भड़काकर राजनैतिक दावपेच खेलते है जैसे मनुष्य नहीं खिलौना हो । जरूरत पड़ने पर नया मकान बनवाना और जरूरत खतम होने पर उनकी मुश्किल परिस्थिति में अपमानित करके ठोकर मारना तभी प्रश्न उठता है कि जाति के कारण मनुष्य को मनुष्य न समझकर खिलौने की तरह इस्तेमाल करना गलत माना जाएगा जिसका विरोध करना चाहिए ।

टेस्टट्यूब बेबी :

दलित व्यक्ति उच्च जाति के साथ काबिल होते हुए भी रिश्ता नहीं जोड़ सकता क्योंकि जातिवाद दिमक की तरह फैला हुआ है । रीमा को मज़बूर करके अपने प्रेम और प्रेम की निशानी को मिटाया जाता है जिसके परिणाम स्वरूप रीमा को माँ बनने के लिए टेस्टट्यूब बेबी का प्रयोग करना पड़ता है । टेस्टट्यूब बेबी आधुनिक आविष्कार होते हुए भी लोगों के मन में अंधी मान्यता को महत्व देकर केवल जाति के प्रश्न को महत्व दिया जाता है । जिसमें आधुनिकता कोई माईने नहीं रखती ।

वादळ साथे वातो करती पाईलट पंड्या :

लीला पाइलट है इसलिए वह उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए भी जातिवाद को मानकर इन्टरव्यूह में आए हुए रघु जो दलित है उसके प्रति दादाजी के प्रतिभाव और क्रिया का विरोध करने में नाकामयाब हुई है । रघु

द्वारा दिया गया परिस्थिति का वर्णन स्पष्ट करता है कि दलित व्यक्तियों को किस प्रकार त्राहित किया जाता है जिसका विरोध करना जरूरी है ।

दाढ़ :

लालजी उच्चवर्ण का है इसलिए वह स्वतंत्र बनकर दलित वर्ग की स्त्रियों का यौनशोषण करता था जिसके विरोध में नानका उन मज़बूर स्त्रियों की रक्षा करता है पर लालजी की चाल में आकर लालच में एक गुन्हगार बन जाता है पर कमली का यौनशोषण होने पर कमली लालजी को सबक सिखाने में कामयाब होती है । इस प्रकार दलित व्यक्ति का मनचाहा उपयोग किया जाता है जिसका कमली जैसी स्त्री विरोध करके सबक सिखाने में कामयाब होती है ।

जीत :

हिरा निम्न जाति का होते हुए भी संस्कार से परिपूर्ण है । स्कूल में तेजस्वी विद्यार्थी होते हुए अंतिम पंक्ति में बैठने की बात का स्वीकार करके अपने मित्र को साहब के विरूद्ध बोलते हुए रोकता है और अपनी जाति के प्रति सन्मान देकर आगे बढ़ता है । उच्च जाति के डॉक्टर द्वारा की हुई हरकत से बचाकर दलित जाति के अपने लोगों की सहायता से फिर से जीवित होकर जाति के प्रति मान प्रदर्शित करता है । जाति की एकता के कारण हीरा की जीत न बनकर जातिवाद के विरोध की विजय लगती है ।

चबरखी :

शिक्षित व्यक्तियों द्वारा अपमानित तीन बालिका जो केवल जाति के कारण धृणा का पात्र बनती है पर अपनी सहेली द्वारा किया गया स्वीकार वर्णवाद को तोड़कर जातिवाद का विरोध करके एक बालसहज निर्णय पर गर्वान्वित होने पर मज़बूर हो जाते है ।

जटायु :

शंकरदा की गुलामी करते करते पीढ़ी बदल गई पर गुलामी का दौर वहाँ का वहाँ रहा । अजय द्वारा लाडु की इज्जत लूटने की घटना में मनो उनकी गुलामी, जातिवाद का विरोध करते हुए अजय की शान को ठीकाने लाता है और स्वयं को जटायु की उपमा देकर सीता का अपहरण से लेकर चीरहरण की निम्न घटना को रोकने में कामयाब होता है ।

(4) विद्रोह की भावना :

संसार का नियम है कि जब तक उसके सहने की ताकत होती है वह सहता है । वह चाहे मनुष्य हो, पशु हो, पंछी हो जब बात उससे मुक्ति पाने के लिए कोई भी प्राणी को सक्षम बनकर उसका सामना करने का बल हासिल करना पड़ता है ।

जीवन का नियम है कि अगर आप जुल्मों का प्रतिकार नहीं कर सकते तो चुपचाप उसे सहन करे या विद्रोह करें वह सही हो या गलत । कोई प्राणी अपने ऊपर होनेवाले अत्याचार अपनी क्षमता से परे होकर सहन तो करता है पर कभी ऐसा मोड़ आता है कि प्राणी उसका विरोध करके स्वयं की रक्षा के लिए प्रयत्नशील होता है क्योंकि जुल्म करना भी पाप है और सहना भी पाप है ।

हिन्दू धर्म में चार वर्ण को दिखाकर उच्चवर्ग ने निम्नवर्ग को हंमेशा कुचलना चाहा । वह चाहे सही हो या गलत पर उच्चवर्ग उसीमें अपनी उच्चता की गरिमा मानता है क्योंकि सबल व्यक्ति हंमेशा निर्बल पर हावी होगा । उच्च वर्ग ने भी यही किया वह हंमेशा सेवा करनेवाले वर्ग को अपनी निम्न सोच का शिकार बनाकर अपना काम निकालने में कामयाब रहा और उनका शोषण करने में अग्रिमता प्राप्त करके संतुष्ट बनकर ख़ुशी मनाता रहा जिसका पीड़ितवर्ग ने अहसास किया और उसका मार्ग निकालने में प्रयत्नशील बने जिसमें उन्होंने स्वयं को बर्बादी के मोड़ पर खड़ा पाया और ख़ुन के आँसू में भीगे अपने परिवार की असह्य पीड़ा के गवाह बने ।

डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर, ज्योतिबा फूले जैसे हमारे समाज के ही बुद्धिजीवी वर्ग ने इस समस्या से लड़ने की ताकत हमें प्रदान की है । उन्होंने हमें कहाँ जहाँ गलत बात हो उसको सहने के बजाय उसका विरोध करों क्योंकि गुन्हा करनेवाले से ज्यादा गुन्हगार सहनेवाला होता है । इसलिए हमारे नेता ने हमें शिक्षित बनने के लिए प्रोत्साहित किया जिससे आम आदमी सही गलत का फेंसला करने में माहिर हो । क्योंकि कोई भी लड़ाई बिना शस्त्र के नहीं लड़ी जाती । इसलिए बाबा साहबने दलितों को जागृत करने के लिए नारा लगाया - "दास को आभास करा दो कि वह दास है, तभी वह विद्रोह करेगा ।" इसके अनुसार सामाजिक, आर्थिक, राजकीय क्षेत्रों में दलितों की विद्रोह नीति की चिनगारियाँ उत्पन्न हुई जो धीरे-धीरे लपटें बन गयी ।

महात्मा ज्योतिबा फूलेने सत्यशोधक आंदोलन में हीन-दलितों का पक्ष लेकर उनकी हित-रक्षा की । इस दृष्टि से दलितोद्धार के इतिहास में इस आंदोलन का स्थान ऊँचा माना जायेगा । यह आंदोलन शोषितों, दुर्बलों की विद्रोहमयी चेतना की अभिव्यंजना थी । सत्यशोधक आंदोलन याने सामाजिक दासता में अनेक बरसों तक दबे हुए दलितों के प्रथम प्रतिकार की आवाज़ थी ।

इस प्रकार समाज में जागृति छा गई जिससे संबंधित कहानियों का विश्लेषण अपने शोधकार्य में करके एक ठोस कदम ही मानती हूँ ।

हिन्दी दलित कहानियाँ :

लटकी हुई शर्त :

गंगाराम की शर्त है बाबूओं द्वारा दिए गए न्यौता में सम्मान के साथ बैठना और जूठी पतल न उठाएगें । इस प्रकार की शर्त बाबूओं की तानाशाही का विरोध करके अपने समाज के लिए विद्रोह करके एकता स्थापित करने की भावना है ।

एक और सीता :

स्त्री को अपनी हवस का शिकार बनानेवाले ठाकुर को सीता गंडासा लेकर हिंमत से ठाकुर से विद्रोह करके स्वयं का बचाव करके लक्ष्मणरेखा खींचकर अपनी ताकत से अवगत कराती है ।

कामरेड का सपना :

दलितों के हक्क के लिए लड़नेवाले कामरेड की हत्या करने पर ललई पंडित और सरजू ठाकुर अपनी ताकत दिखाना चाहते है पर समग्र जनता जागृत होकर जुलूस निकालकर चंद्रावती की नेतागीरी में जूड़कर जनता ने विद्रोह की भावना प्रकट की है ।

अब नहीं नाचब :

कन्हई के अछूत होने पर अनाज न देने के निर्णय पर शेरसिंह, विद्यासागर, पंडितजी शामिल है । इस निर्णय को न मानकर पूरा दलित समाज विद्रोह करके सभी से माफी भी मंगवाते है ।

आतंक :

दलित नारी पर होनेवाले अमानवीय अत्याचार को समाज मूक बनकर देखता है पर बिमला जैसी नारी ठाकुर से विद्रोह करके न्याय भी पाती है जिसकी सज़ा वह स्वयं देती है ।

बलात्कारी :

ठाकुर द्वारा किए हुए अन्याय और अत्याचार को सहते सहते बिल्टुआ जूठे गुन्हों का शिकार होता है पर जब सही गुन्हा में पकड़े जाने पर यह साबित होता है कि सही में वह ठाकुर साहब से विद्रोह कर रहा है ।

षडयंत्र :

स्वयं की रोज़ी बचाने के लिए गरीब दलितों को इस्तमाल करके उनको अपनी हवस का शिकार बनानेवाले शिक्षकों की सच्चाई दिखाकर घनसेरराम दलितों को न्याय मांगने की सच्ची रीत बताकर उनके अंदर विद्रोह की भावना को जाग्रत करते है ।

इशारा :

मद्धे पहलवान का जाति के कारण हुए शोषण का विरोध करके नरेन्द्रसिंह का खून करने पर अपने ऊपर होनेवाले अन्याय को रोक कर विद्रोह की भावना से वह इस प्रकार के गुन्हा करने पर मजबूर किया जाता है ।

अपना गाँव :

अस्सी बरस का हरिया अपनी बहू कबूतरी पर हुए अत्याचार के विरोध में जमींदार से विद्रोह करके नए गाँव की स्थापना करके अपनी ताकत दिखा देता है ।

सपना :

कॉलोनी में मंदिर की आवश्यकता होने पर उसका निर्माण होता है पर उस निर्माण में जिन्होंने खून-पसीना डालकर प्राण पूरे उसी मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में उन्हें धुत्कार कर उन्हें अपवित्र मानकर जूतें की रखवाली का काम सोंपकर उन निम्न जाति पर एक प्रकार से किया हुआ अन्याय एवं अत्याचार ही तो है जिसका विरोध करनेवाले ऋषि को दंगें करने

के जुर्म में गिरफ्तार करके गुन्हगार बना देना अन्याय ही तो है । ऋषि का विरोध वहीं कहता है कि वह भी मनुष्य है इसलिए उन पर किए हुए अन्याय और अत्याचार का विरोध तो करना ही होगा ।

गुजराती दलित कहानियाँ :

सोमली :

स्त्री का यौनशोषण करना और उसके परिवार का शोषण करना सरपंच की तानाशाही और अत्याचार पर विरोध प्रकट करके विद्रोही सोमली स्वयं की रक्षा करके परिवार को अन्याय से बचाने के लिए मौत के घाट उतारकर सरपंच और समाज से विद्रोह करती है ।

रामराज्य :

करमला द्वारा बनाए गए जूते से मुखी के पैरों में चोट होने से मुखी पशु की तरह पीटते है पर समय के बदलाव के साथ करमला विद्रोही बनकर मुखी से बदला लेता है । सरकार द्वारा होनेवाले पक्षपात का विरोध करके काँटे की दिवार को हटाकर विद्रोह करता है जिसमें उसको अपनी जान गवानी पड़ती है यहाँ तक बेटों की गिरफ़्तारी के कारण उसे अंतिम यात्रा में दूसरों के कंधों पर सवार होकर जाना पड़ता है ।

मारे चा पीवी नथी ! :

बापु के बेटे की शादी की खुशी में अपने नौकर के घर चाय पीलाकर बापु व्यवहार दिखाते है पर उसके इस व्यवहार का जीवा विद्रोह करके विरोध करता है कि बापु को चाय पीलानी हो तो उनके घर पीलाए समान भाव के साथ जिसमें पूरा समाज साथ देकर इस प्रस्ताव का विरोध करके विद्रोह करता है ।

रेशनालीस्ट :

दलित विद्यार्थी की केवल काबेलियत को देखकर भूतकाल की घटना और समाजव्यवस्था के साथ विद्रोह करके डॉ. महेता ने मानवधर्म का सच्चा परिचय दिया है । इस प्रकार के विद्रोह से दलित व्यक्ति भी मनुष्य की तरह जीने का अधिकार रख सकता है इस प्रकार की भावना को महत्व दिया है ।

थळी :

रेवी दलित नारी है इसलिए मानसिंह उसका यौनशोषण करके उसे अपना अधिकार मानता है पर पीड़ित रेवी एक दिन विद्रोह करके मानसिंह को उसकी हद दिखाकर स्वयं की रक्षा करके उसके अत्याचार से मुक्ति पा लेती है ।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY University of Baroda

लाखु :

रमतुंडा की कुदृष्टि से काळी स्वयं का बचाव तो करती है पर रणचंडी बनकर विद्रोह करके रमतुडां को सबक सिखा देती है ।

वळगाड :

लोगों को अंधश्रद्धा का शिकार बनाकर, लखमी जैसी लड़की का यौनशोषण करके स्वयं को पूजनीय गरिमा देनेवाले वशराम भूवा को झंझीरों से पीटकर लखमी विद्रोही बनकर अपनी रक्षा करती है ।

दाढ़ :

गरीबों को खिलौना समझनेवाला अमीरवर्ग, दलित स्त्री को यौनशोषण का शिकार बनानेवाले लालजी से विद्रोह करनेवाला नानका को गुन्हगार बना दिया जाता है जिसके परिणाम में नानका की पत्नी कमली का शोषण करनेवाले लालजी को कमली सबक सिखाकर विद्रोह करके अपनी रक्षा करने में कामयाब होती है और लालजी द्वारा किए हुए कर्म का दंड़ भी देती है ।

चबरखी :

शिक्षित व्यक्ति की निम्न सोच का शिकार दलित बालिका तो है पर इस सोच में शामिल करके उस छोटी बालिका की सोच को बदलेवाले व्यक्ति धृणा के पात्र है । इस कहानी की छोटी सी बालिका का विद्रोह समाजव्यवस्था, शिक्षक आदि से है । बालिका के सही गलत का फेसला बताकर नये समाज की रचना करनेवाली वीरबालिका है जो अपनी सहेलियों का स्वीकार करके पूरे समाज से विद्रोह करती है ।

जटायु :

मानो दलित नवयुवक है इसलिए वह लाडु पर होनेवाले अत्याचार का

विरोध करता है और अजय को सबक सिखाता है । मानो का विरोध केवल एक स्त्री की इज्जत बचाना तो था पर साथ में तीन पीढ़ी से गुलामी करने वाले सभी की आज़ादी थी इसलिए मानो निडर होकर इस प्रकार के होनेवाले अन्याय और अत्याचार का विरोध करता है ।

(5) अन्याय और अत्याचार के प्रति विरोध :

भारतीय हिन्दू संस्कृति के आधार पर बनाए गए चार वर्ण को लेकर गंभीर समस्या उत्पन्न हुई है । चार वर्णों के कार्य को नज़रअंदाज करके असक्षम वर्ण को पशु से भी निम्न समझकर उस पर अन्याय एवं अत्याचार करने के लिए उत्सुक तीन वर्ण है ।

मनुस्मृति का स्वीकार करके समाज ने संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था- को कुछ और ही विचार से समजकर उसके विचार को नगण्य मानकर उस पर अपना हक मानकर एक निम्न वर्ण के मनुष्य पर अत्याचार करके हेवान बनकर उनका शोषण करता है ।

प्राचीनकाल में तो स्पृश्य-अस्पृश्य भेद से दलितों की बहिष्कृत निस्सीम थी । दलितों के केवल स्पर्श से ही नहीं, बल्कि उनकी छाया से भी बचकर सवर्ण जाते थे । इस अतिरेकी पद्धति के पालन में दलितों के प्राण आकण्ठ आते थे । दलितों की बदहाली तो कल्पनातीत थी । ब्राह्मण पर अपनी छाया न पड़ने का ख्याल उन्हें रखना पड़ता था । इससे साँझ-सबेरे जबकि धूप की छायाएँ लम्बी हो जाती थी, उस वक्त दलितों को विशेषकर ब्राह्मणों की बस्ती से गुजरने में बहुत ही खतरा रहता था । स्पृश्य और ब्राह्मण जिस रास्ते से गुजरते उस रास्ते पर उन्हें गले में मिट्‌टी का बर्तन बाँधकर जाना पड़ता था । उस तरह उन्हें कमर में पेड़ की शाखा नीचे लटकती बाँधने पर ही रास्ते से घूमने-फिरने की अनुमति मिलती थी, क्योंकि उससे उनके पापी पदचिन्ह जिस मिट्‌टी पर छोड़ दिये है, उस पर से वह शाखा फिरने पर छोड़े हुए पदचिन्ह मिट जाते थे । इस प्रकार के अत्याचार दलित वर्ग पर किए जाते थे ।

दलित की केवल छाया, पदचिन्ह भी अस्पृश्य माना जाता था पर अगर कोई पशु उसी जगह पर मूत्रत्याग कर दे तो वहाँ किसी भी प्रकार की अस्पृश्यता नहीं खलती थी । दलित वर्ग की हालत पशु से भी बदतर थी उसे

गंदा पानी, गाली-गलोच, डाँट-फटकार, स्त्री का यौनशोषण जैसे अनेक पीड़ा एवम् अत्याचार सहना पड़ता था ।

दलित की इस असहनीय परिस्थिति को महसूस करके और देखकर कुछ समाजसुधारक ने विरोध तो किया बल्कि दलित वर्ग को जागृत करने का तरीका भी अपनाया । उन्होंने उनकी कमज़ोरी को सक्षम करने में उनकी मदद की । उन्हें शिक्षित, संस्कारी, बुद्धिचातुर्य में माहीर करके सही रास्ता दिखाकर अपने पर होनेवाले अत्याचार से लड़ने की ताकत प्रदान की जिससे नव समाज, नव भारत के निर्माण के लिए भारतियों को अंधश्रद्धा, निर्थक परंपराओं और दुर्गुणों का त्याग करके सुधार का रास्ता पकड़ना चाहिए ।

अठारवीं सदी से शुरु होकर बीसवीं सदी में एक बड़े सामाजिक आंदोलन में परिवर्तित होकर पंजाब से लेकर दक्षिण भारत तक जातियता और वर्णव्यवस्था के कारण उत्पीड़ित समाज में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुक्ति आंदोलन उठे हुए है । इस समाज-क्रांति में महात्मा फुले, रामास्वामी नायकर, सयाजीराव गायकवाड, गांधीजी, लोकमान्य तिलक, डॉ. भीमराव अम्बेड़कर की भूमिकाएं दलित समाज के मुक्ति आंदोलन को तार्किक, वैचारिक और सैद्धांतिक आधार दिया ।

दलित समाज को जरूरत थी उनके खोए हुए स्वाभिमान एवं आत्मसम्मान की वे मनुष्य है ये समझाना । वे गुलाम बना दिया गए है इसका अहसास करवाना । इन सब चीजों के लिए जरूरी था शिक्षित होना, संघर्ष करना और संगठित होना था । इस कार्य में शिक्षित वर्ग ने आंदोलन द्वारा और साहित्य लिखकर जन समुदाय को जागृत करके अन्याय और अत्याचार के प्रति विरोध किया जिसके परिणामस्वरूप समाज में उन पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार में कमी आई ।

अपने शोधकार्य में ऐसी कहानियों के माध्यम से इन पात्रों के द्वारा अन्याय और अत्याचार के विरोध को दर्शाते हुए उज्जवल भविष्य को उजागर करने का सफल प्रयत्न किया है ।

हिन्दी दलित कहानियाँ :

लटकी हुई शर्त :

बाबुओं को मदद करने वाला गंगाराम को दलित समझकर मान देने

के वजह उससे जूठी पतल उठाने और उच्च वर्ण के लोगों को जो सन्मान मिलता है ऐसा सन्मान देने का अनुरोध करके गंगाराम ने उच्च वर्ण द्वारा किए हुए अन्याय का विरोध करके शर्त रखी है ।

पच्चीस चौके डेढ़ सौ :

चौधरी द्वारा लिया हुआ ब्याज पचीस चौके डेढ़ सौ गिनकर एक अनपढ़, अशिक्षित आदमी पर अन्याय और अत्याचार किया जाता है जिसका पता शिक्षित बेटे को होने पर पिता को सत्य समझाकर सच्चाई से वाकेफ करते है । पिता सच्चाई जानकर चौधरी को गाली देकर शोषण से अवगत होकर विरोध करते है ।

एक और अंत :

नन्हुआ के साथ मौसी का दुर्व्यवहार देखकर टुनरा मज़दूरी करवाता है पर समय के साथ ताल मिलाकर महेनत करके नन्हुआ को शिक्षित करके उस पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार का विरोध केवल वहीं कर सकता है जो शिक्षित हो और समाज भी उसका स्वीकार करता है ।

एक और सीता :

ठाकुर द्वारा अपने पति की कमज़ोरी का और जाति के कारण होनेवाले अन्याय और अत्याचार के विरोध में सीता रेखा खींचकर ठाकुर को अपनी मर्यादा दिखाकर अन्याय और अत्याचार का विरोध करती है ।

आदमी :

कारिया और ओरांव के जीवन से खेलनेवाला जंगलबाबू को मारकर ओरांव का बदला लिया है । ओरांव का यौनशोषण करके जिस प्रकार जंगलबाबू ने अन्याय और अत्याचार किया उसका विरोध कारिया ने जंगलबाबू की मौत से किया है ।

बिच्छूधास :

दूर्गादत्त की शिकायत पर मूसा को बिच्छूधास की फटकार मास्तर द्वारा देने पर दूर्गादत उम्र बढ़ने पर अपने वालिद की बातों का विरोध करके मूसा का स्वीकार करके एवम् अपनी गलती मानकर मूसा की माफी मांगकर अन्याय और अत्याचार के प्रति विरोध व्यक्त करके मूसा को मान देते है ।

कामरेड का सपना :

ललई पंडित और सरजू ठाकुर द्वारा कामरेड की हत्या और पुलिस को रिश्वत लेते हुए दिखाकर दलित समुदाय नि:सहाय बनकर खड़ा नहीं रहता पर फिर से अन्याय और अत्याचार का विरोध करके चंद्रावती जैसी अबला नारी की हिंमत दिखाई है ।

उठे हुए हाथ :

राधो महतो द्वारा दलित नारी का यौनशोषण होने पर पूरी बस्ती घायल शेरनी की तरह बदला लेकर अन्याय और अत्याचार के प्रति विरोध प्रकट करती है इसमें छोटा बच्चा भी मिले हुए सिक्के से बंदूक खरीदेगा और बदला लेगा जिसमें दलित समाज की एकता निर्देशित होती है ।

अब नहीं नाचब :

शूद्र को गेहूँ जैसे अनाज खाने के लिए योग्य न समझकर शेरसिंह, विद्यासागर, पंडितजी कन्हई को ना कहकर उस पर अन्याय करते है जिसका दलित समाज विरोध करके उन्हें सबक सिखाने के लिए उनकी मज़दूर न करने का ठानकर अन्याय के प्रति विरोध प्रकट करते है ।

जीवनसाथी :

रेखा और प्रेम दलित वर्ण के है इसलिए गुंडों द्वारा रेखा को अपनी हवस का शिकार बनाते है और पुलिस भी उन्हें प्रोत्साहित करके आज़ाद घूमने देते है । रेखा की मौत का बदला लेने के लिए प्रेम अपने पर और पुलिस पर गोली चलाकर अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए अपनी आहूति देते है ।

आतंक :

छोटी बात की राखी को इतनी बड़ी सजा देकर चमन ठाकुर दलित वर्ग पर अत्याचार करता है जिसका बिमला दलित नारी होते हुए भी उसका बदला लेकर हिंमतपूर्वक चमन ठाकुर को मौत के घाट उतार कर अन्याय और अत्याचार का विरोध करती है ।

बलात्कारी :

बिल्टुआ दलित है जिसको जूठे गुनाहों में फसाकर सज़ा दिलवाकर ठाकुर साहब अपनी मर्दानगी समजते है । बिल्टुआ की पत्नी सनेही पर किए

हुए बलात्कार का बदला लेने के लिए बिल्टुआ ठाकुर की बेटी को अपना निशाना बनाता है इस प्रकार ठाकुर द्वारा किए हुए अन्याय और अत्याचार का विरोध करके सच्चे गुनाहों में सजा भुगतने के लिए तैयार है ।

षडयंत्र :

सरकार की तनख्वा मुफ्त लेनेवाले उच्च जाति के शिक्षक द्वारा दलित बच्चों पर होनेवाले अत्याचार और अन्याय का विरोध करनेवाले 'धनसेर राम' दलित समाज को जागृत करके अपने हक्क के लिए लड़ने के लिए कटिबद्ध करते है ।

इशारा :

मद्धे पहलवान अपने उस्ताद द्वारा शोषण होने पर अपना जातिगत व्यवसाय भी करता है और पहलवानी के अखाडे में जाति के कारण निष्फल होता है । लेकिन जब अपने पुत्र का शोषण होता है तो वह नरेन्द्रसिंह का खून करके उस पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार का विरोध करता है ।

अपना गाँव :

अपनी पुत्रवधू कबूतरी पर जमींदार द्वारा किए हुए अत्याचार का विरोध करके जमींदार का जुल्म झेलता है । इतनी उम्र का होते हुए भी हरिया अभी भी नौजवानों जैसी ताकत दिखाकर अपना गाँव बसाने की हिंमत दिखाकर जमींदार द्वारा किए हुए अत्याचार और अन्याय का विरोध करता है ।

गुजराती दलित कहानियाँ :

सोमली :

सरपंच द्वारा होनेवाला यौनशोषण का पर्दाफाश करके मौत देनेवाली सोमली समाज को दिखाती है कि किस प्रकार वह और उसका परिवार सरपंच के शोषण का शिकार बनी । उस पर हुए अत्याचार और अन्याय को दूर करने के लिए सरपंच को मौत के घाट उतार कर अपना विरोध प्रकट करती है और इस विरोध में न्यायाधीश का फेशला 'सत्यमेव जयते' बनकर सोमली का साथ देते है ।

रामराज्य :

करमला की छोटी सी भूल की इतनी बड़ी सज़ा देकर मुखी अपनी

तानाशाही दिखाता है पर मौका पाते ही करमला उस पर हुए अन्याय और अत्याचार का बदला लेकर मुखी को पशु की तरह पीटता है । सरकारी दिवार को हटाकर स्वयंभाव दर्शाकर सरकार एवम् उच्चवर्ग की मनमानी का विरोध करते हुए अपनी जान भी गँवा देता है । जिसका उसे कोई शिकवा नहीं है ।

मारे चा पीवी नथी ! :

बापु के बेटे की शादी की खुशी में पिलाई जानेवाली चा बापु के घर नहीं पर नौकर के घर पिलाने पर जीवा इस प्रकार होनेवाले अन्याय का विरोध करके चाय का अस्वीकार कर देता है जिसके साथ पूरा समाज जुड़ जाता है ।

रेशनालीस्ट :

गुरु और शिष्य के संबंध की महानता के साथ डॉ. महेता ने समाजव्यवस्था का विरोध करके किशोर की कांबेलियत को देखकर उसका स्वीकार किया है न कि उसकी भूतकाल की घटना के विषय को नज़रअंदाज करके सच्चाई का साथ देकर अन्याय और अत्याचार से त्रस्त जाति का स्वीकार करके अपना विरोध प्रकट किया है ।

थळी :

मानसिंह की हवस का शिकार बननेवाली रेवी एकबार हिंमतपूर्वक उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर के उस पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार से मुक्ति पाकर मानसिंह का विरोध करके अन्याय और अत्याचार का विरोध करती है ।

लाखु :

रमतुडां की सोच और हरकत का हिंमतपूर्वक जवाब देकर काळी ने रणचंडी का रूप धारण करके अपने पर होनेवाले अत्याचार और अन्याय का विरोध किया है जिसमें रमतुडां को सबक सिखाता है ।

वळगाड :

लखमी का यौनशोषण होने पर बेसुध और गुमसुम बैठी रहती है पर वछराम भूवा की जूठी महानता को लोगों को सामने पर्दाफाश करके उसे झंझीरों से पीटकर उस पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार का विरोध करती है ।

दाढ़ :

नानको लालची होते हुए भी अपने वर्ग की स्त्री पर होनेवाले अत्याचार और अन्याय का विरोध करता है जिसमें उसे गुन्हगार बना दिया जाता है । जिसका बदला और स्वयं की रक्षा करके कमली लालजी को सबक सिखाकर अन्याय और अत्याचार का विरोध प्रकट करती है ।

जीत :

हीरा अपने संस्कार द्वारा आगे बढ़कर समाज की सेवा करता है जिसमें हीरा उच्च जाति के लोगों की चाल का शिकार बनता है पर उसके समाज की एकता द्वारा वह मुसीबत से बहार निकल जाता है जिसमें समाज की एकता ही उस पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार का विरोध है ।

चबरखी :

अपने शिक्षक, स्कूल स्टाफ और अपनी सहेलियों की धृणा का पात्र बननेवाली बालिका मौन खड़ी सब सहती जाती है उनका गुन्हा इतना है कि वह निम्न है पर जब मित्रता जागृत होती है तब धृणा करनेवाली सहेलियाँ उसका स्वीकार करके उन्हें अपनाती है । इस प्रकार बालमानस की सोच अन्याय और अत्याचार के प्रति विरोध करके सही निर्णय दर्शाते है ।

(6) सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जागरूकता :

समाज में रहकर ही मनुष्य जीवनयापन करता है । संस्कृति के माध्यम से अपने समग्र जीवन का विकास करने के लिए तत्पर रहता है । भारतीय समाज में दलित वर्ग का ध्यान आते ही उसे शोषण का ध्यान आता है । जो इतिहास में पहली बार आदमी ने आदमी के साथ किया था । आदमी और आदमी के बीच में अलगाव और धृणा का आधार बना । समाज के अंदर हम अलग-अलग वर्गो में बटे हुए है इसलिए ठीक से जी नहीं पाते । साँस ले रहे है, उनका इतिहास बहुत पुराना है । उसकी जड़े इतनी गहरी हैं कि सामाजिक धरातल को भीतर तक फोड़कर उस स्थान में प्रविष्ट कर गयी है । जहाँ से इनको उखाड़ फेंकना सुधारवादियों की कल्पना मात्र दिखाई देती है । इसलिए लिए आवश्यकता है एक बड़ी क्रांति की, एक बड़े बदलाव की जो इसे जड़मूल से समाप्त करने का सामर्थ्य रखता है ।

सामाजिक शोषण के प्रति जागरूकता लाने के लिए दलित वर्ग को प्रथम शिक्षित बनना होगा जिससे समाज उनका स्वीकार कर सके । भारतीय संविधान की पहचान करके अपने हक के प्रति जाग्रत होकर समाज को सावधान रहने का इशारा करना होगा । समाज के वर्णभेद के बटवारे के कारण दलित वर्ग के ऊपर होनेवाले अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए स्वयं एक होकर सक्षम बनना पड़ेगा । सामाजिक अस्वीकारता के कारण अंदर ही अंदर क्षीण होनेवाले मनोबल को दृढ़ करना होगा ।

जहाँ तक शोषित और दलित वर्ग की समस्याओं का प्रश्न है, वह आज से पहले तक लगभग सामाजिक स्तर की थी, लेकिन अपने युग तक आते-आते बल्कि हम स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके है और हमने अपने संविधान में मानव अधिकारों की समानता का सिद्धांतः स्वीकार कर लिया है, यह समस्या सामाजिक स्तर से आगे बढ़कर मनोवैज्ञानिक हुई और राजनैतिक भी हो गई है ।

हजारों वर्षो से वर्ण व्यवस्था द्वारा नकारे गए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक गुलामी की जंजीरों से जकड़े हुए मानवीय व्यवहार की उम्मीदों से किया गया आंदोलन है । दलित वर्ग का लक्ष्य मानवीय विरोधी व्यवस्था में बदलाव लाकर समता, बंधुता और मैत्री की स्थापना करके मानवीयता के गुणों का समावेश करना है । इस लक्ष्य की स्थापना के लिए उसे यह भी ज्ञात है कि ढ़ाई हज़ार वर्ष की लंबी परंपराने उसे इतना क्षीण, असहाय और मज़बूर कर दिया है कि इस लक्ष्य तक पहुँचना इतना आसान नहीं है । इसी कारण उसे संघर्ष की मुद्रा धारण करनी पड़ी है । डॉ. भीमराव अम्बेड़कर के प्रयत्नों के कारण दलित वर्ग में धीरे-धीरे ही क्यों न हो अपने अस्तित्व को लेकर सोच की शक्ति उभरने लगी है ।

भारत के गाँवों में दलितों का जीवन पशुवत होता है । वो जहाँ काम करते है उनके मालिक उन्हें भरपेट खाना भी खिला नहीं सकते । वह कला और संस्कृति से वंचित रहते है । साथ ही साथ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी नहीं हो पाता और न ही अपने साथ होनेवाले अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष कर पाते है । इसलिए डॉ. भीमराव अम्बेड़कर ने विशेष रूप से राजनैतिक स्तर पर दलित वर्ग अपने अधिकारों की लड़ाई सफलतापूर्वक कर पाए उसके लिए भारतीय संविधान में मुख्यरुप से कानून

बनाकर उन्होंने हरेक दलित को संगठन, शिक्षा, संघर्ष का पाठ पढ़े और अपनी पीड़ा को दूर करने का रास्ता दिखा दिया है ।

राजनैतिक जागरूकता के लिए हमारे महान समाजसुधारक, साहित्यकार की सहायता से लोगों में राजनैतिक चेतना के द्वारा लोगों को हजारों वर्षो की गुलामी की जंजीरों को तोड़ने की सलाह दी है ।

दूर्भाग्य यह है कि वर्तमान राजनीति के हथकंडों ने इन समस्याओं को जितना सुलझाया नहीं है, उतना उलझा दिया है । यह उलझाव सामाजिक भी है और मनोवैज्ञानिक भी । इससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि हम इनके समाधान के लिए पिछली एक शताब्दी से जो दृष्टिकोण अपनाएँ हुए है, वह भी सुधारवादी ढंग का है । इन समस्याओं का समाधान सुधारवादी दर्शन से संभव नहीं है । मानव शोषण का लंबा इतिहास यह बताता है कि आर्थिक कारणों ने समाज में विभिन्न वर्णो को जन्म दिया था ।

भारत गाँवों का देश है जिसमें रहनेवाले ज्यादातर किसान वर्ग है । जमींदार के द्वारा आर्थिक रूप से शोषित होते है । जमींदारों के यहाँ काम करनेवाले दलित व्यक्ति रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या से घिरा हुआ होता है । उनका व्यवसाय भले ही अलग हो पर वह हंमेशा ज़मीदार पर निर्भर होते है । इसलिए उनका जीवन पीड़ा से भरा रहता है । उनको उनके काम से कम पैसे मिलने से उनका आर्थिक शोषण होता रहता है ।

उत्पादन के कर्मी ने समाज को एक विशेष स्वरूप प्रदान किया जिसमें उत्पादन के साधन रखनेवाला श्रेष्ठ और अपने श्रम से उत्पादन करनेवाला निम्न ठहराया गया । यह मानकर भी आर्थिक विषमताओं से जुड़ी हुई इस समस्या को हम सुधारवादी तरीके से हल करने निकले है तो विश्वास नहीं होता कि हम अपने लक्ष्य पर पहुँच भी सकते है । क्योंकि जमींदार किसानों का अमूल्य श्रम तो लेते है, लेकिन उस श्रम से केवल जमींदारों की ही तिजोरियाँ भरी जाती हैं । जमींदारों द्वारा मनमाने ढंग से लगान बढ़ाकर किसानों का शोषण करते है । जमींदार दलितों की दयनीय दशा का लाभ उठाकर उनका शोषण अधिक ही करता रहता है ।

दलितवर्ग की इस दयनीय परिस्थिति से टकराने के लिए हरेक दलित व्यक्ति को आर्थिक रूप से खड़ा होना पड़ेगा वह केवल संगठन, शिक्षा और संघर्ष के कारण ही संभवित है । डॉ. अम्बेड़कर ने दलित वर्ग शिक्षित बनकर समाज में क्रांति फैलाए ऐसे विचार प्रकट किए है । उन्होंने भारतीय संविधान में दलित वर्ग के लिए सहायक कानून की व्यवस्था करके दलित समाज को हिंमत दी है । दलित के दमन का मुख्य कारण उनकी आर्थिक स्थिति का कमज़ोर होना होता है क्योंकि उससे ही व्यक्ति समाज द्वारा शोषित बनता है । उसीसे उनके रहने, खाने, शिक्षा की समस्या बढ़ती है । क्योंकि उनको कोई भी आर्थिक सहायता न मिलने पर वह अधिक शोषित बनकर पूरे परिवार को शोषित बनने के लिए मज़बूर कर देता है ।

आर्थिक विषमता भी स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुता के समाज के निर्माण में बहुत बड़ी बाधा है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता । आर्थिक कठिनाईयों के बहुत रूप होते है जिनमें सबसे भीषण है जीवन की आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने की असमर्थता जब धन की कमी रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या को हल करने में असफल होती है तो मनुष्य का जीवन विषम बन जाता है । आदमी के मन में असंतोष तभी जागता है जबकि वह अपनी मौजूदा स्थिति से बेहतर स्थिति की संभावना देखता है । सामाजिक समता एवं आर्थिक समता के बिना राजनैतिक सता और स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुता पर आधारित सामाजिक संरचना के विचार बेकार सिद्ध होते है । इसीलिए आर्थिक समता एवं सनातनी मनुवादी सामाजिक व्यवस्था तथा शोषक वर्ग के खिलाफ संग्राम के लिए तैयार करने में प्रभावक साबित होता है ।

हिन्दी दलित कहानी और गुजराती दलित कहानी में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जाग्रत कहानी लेकर अपने शोधकार्य में हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों के परिवेश अलग-अलग होने पर भी शोषण की समस्या एक सी है । इसके मूल में अर्थ व्यवस्था के फलस्वरूप शोषण का शिकार होना पड़ता है । हक़ीकत में तो समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था में बदलाव लाने की दिशा में ही दलित कहानियों की निष्ठा और प्रतिबद्धता रही है ।

हिन्दी दलित कहानियाँ :

लटकी हुई शर्त :

बाबुओं के घर पर भोज पर से उठाना, जूठी पतल उठाने का विरोध करके गंगाराम ने राजनैतिक, सामाजिक शोषण के विरूद्ध में जाकर पूरे समाज को जागृत करने का प्रयास किया है जिसमें गंगाराम ने शर्त रखकर अपना और समाज का शोषण रोककर जागरूकता दिखाई है ।

पच्चीस चौके डेढ़ सौ :

चौधरी द्वारा किए गए आर्थिक शोषण में दलित गरीब व्यक्ति का राजनैतिक स्तर पर शोषण हुआ है । बरसों से गलत गिनती बताकर किस प्रकार ब्याज लिया गया है ऐसा ज्ञान सुदीप अपने पिता को अपनी पहली कमाई के माध्यम से दिखाता है कि "पच्चीस चौक सौ" होते है न कि "पच्चीस चौके डेढ़ सौ" । शिक्षित व्यक्ति द्वारा आर्थिक शोषण का ज्ञान बताकर सुदीप अपने पिता को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करता है ।

एक और अंत :

टुनरा और सुमनी के बेटे को धृणा का पात्र समझने पर टुनरा नन्हुआ को मज़दूरी कराता है पर शिक्षा के प्रति जागरूकता दिखाकर एक दलित को सामाजिक शोषण से दूर करके प्रतिष्ठा पात्र बनाने में शिक्षा को महत्वपूर्ण माननेवाला टुनरा ने सामाजिक शोषण के प्रति शिक्षा के माध्यम से जागरूकता दिखाई है ।

एक और सीता :

सीता को अपनी हवस का शिकार बनानेवाले ठाकुर का प्रतिकार करने पर ठाकुर को सीमा दिखाकर सीता स्वयं की रक्षा करके स्वयं को सामाजिक और राजनैतिक शोषण के प्रति जागरूक दिखाया है ।

आदमी :

कारिया और आरोंव का सुखी जीवन जाति और राजनैतिक स्तर पर शोषण होता है जिसमें आरोंव अपने गर्भ में पलनेवाले मासूम बच्चे को गवाने पर कारिया जंगलबाबू को मौत का दंड देकर सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जागरूक होकर जंगबाबू को सजा देता है ।

अस्वीकृति :

लेखक द्वारा किया हुआ निर्णय एक प्रकार से एक काबिल व्यक्ति के लिए किया हुआ शोषण ही है । जिसमें लेखक ने स्वयं के स्वभाव से परिचय करवाकर समाज को जागृत करने की कोशिश है । जिसमें विक्रम का सामाजिक स्तर पर शोषण होने पर स्वयं को ओर समाज को जागरूकता दिखाने की बात है ।

अषाढ़ का एक दिन :

सरकार की योजना के लाभान्वित लोगों से ज़मीन हड़प लेने में उनका राजनैतिक स्तर शोषण, सामाजिक और आर्थिक शोषण से समाज व्यवस्था के प्रति जागरूकता दिखाई है ।

कमीज़ :

मालिक के हुकम को अपनी जान देकर पूरा करनेवाले रामा के परिवार का सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्तर पर शोषण हुआ है । कहानी में इसका ज्ञान छोटे बच्चे के एक वाक्य से ही कमीज़ मिलने की लालसा समाज के द्वारा किए हुए शोषण के प्रति जागरूक कर देते है ।

पन्ना धाय का दूसरा बेटा :

ज़मीदार द्वारा राजनैतिक स्तर पर नौकर का शोषण करके स्वयं को आज़ाद पाकर घूमते हुए बताया गया है । जिसमें एक भाई दूसरे भाई के खून का बदला लेने में स्वयं को असहाय महसूस करता है जिससे ज्ञात होता है कि किस प्रकार सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण होता है जिससे हम जाग्रत हो सके ।

सर्प-दंश :

पशु को चोट पहुँचाने पर दंशता है पर मनुष्य तो केवल राजनैतिक दर्जे से दलित व्यक्ति का सामाजिक और आर्थिक शोषण करने के लिए ही निर्मित हो ऐसा दिखाकर गोकुल के निर्णय में जागरूकता दिखाई देती है ।

बिच्छूधास :

विद्यार्थी अवस्था में कि हुई भूल का स्वीकार करके दलित मूसा का स्वीकार करके लेखक ने सामाजिक, आर्थिक शोषण के प्रति जागरूकता दिखाई है ।

कामरेड का सपना :

ललई पंडित और सरजू ठाकुर द्वारा अपने हक्क के लिए लड़नेवाले कामरेड की हत्या की जाती है और पुलिस को रिश्वत दी जाती है । दलित व्यक्ति का सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जागृत होने पर उन्हें मौत से ही भेंट करनी पड़ती है । ऐसी जागृतता लाने के लिए अपनी जान गँवाने पर घटना का परिवर्तन होता रहता है पर चंद्रावती जैसी महिला हिंमत से मुकाबला करती है ।

हरिजन सेवक :

मुंशी रामशरणलाल जैसे समाजसुधारक दलित को हक्क दिलाने के लिए प्रयत्नशील है पर वह भी राजनैतिक शोषण का शिकार बनते है । दलित वर्ग के लोगों का सामाजिक और आर्थिक शोषण कम होता है बल्कि उसके ऊपर उनको नक्सलवादी बनाकर उन्हें सज़ा देकर हरेक प्रकार से शोषण किया जाता है जो आज़ाद भारत का पर्दाफाश करके समाज को जागृत कराते है ।

उठे हुए हाथ :

राधो महतो द्वारा दलित नारी का यौनशोषण करने से समाज और पीड़ित स्त्री उसका बदला लेने के लिए तैयार होता है यहाँ तक उसका छोटा बच्चा भी इस शोषण से मुक्ति पाना चाहता है । वह हिंमतपूर्वक सामाजिक, राजनैतिक शोषण के प्रति जागरूक होता हुआ दिखाई देता है ।

अब नहीं नाचब :

दलित व्यक्ति को अनाज खाने का कोई अधिकार नहीं ऐसी झूठी बातें बताकर शेरसिंह, विद्यासागर, पंडितजी उन्हें अनाज न देने का निर्णय लेते है पर दलित वर्ग के संगठन से वह निर्णय बदलने और उनको मात देकर अपने प्रति किए हुए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण से जाग्रत होकर अपने हक के लिए लड़नेवाले है ।

जीवनसाथी :

जाति के कारण प्रताड़ित किए हुए युगल को साथ देने के बजाय पुलिस कर्मचारी गुडों को प्रोत्साहित करते है जिसमें रेखा उनकी हवस का

शिकार होकर मौत से भेंटती है । इस प्रकार होनेवाले शोषण से प्रेम उनका खून करके स्वयं भी मौत पा लेता है जिसमें उसके साथ किए हुए शोषण से जाग्रत होकर अपने हक के लिए लड़ने की बात है ।

दाग दिया सच :

अलग-अलग जाति के प्रेमी युगल को और उनके परिवार को धाक-धमकी के दबाव में लाकर उनका शोषण करना राजनैतिक और सामाजिक शोषण ही है जिसमें सभी शोषित होते है और मौत मिलती है यहाँ पर महावीर के पिता द्वारा बोले हुए वाक्य से समाज में जागरुकता लाने का प्रयास मात्र है ।

आतंक :

बच्चों की लड़ाई का बहुत बड़ा अंजाम देकर राखी पर किए हुए अत्याचार और अन्याय के खिलाफ कोई भी आवाज़ उठाने में नाकामयाब रहता क्योंकि उन्हें पता है किस प्रकार राजनैतिक सत्ता से दलित का शोषण होता है पर बिमला जैसी सबला नारी बिना डरे चमन ठाकुर का मुकाबला करके समाज और पीड़ित नारी को अपने ऊपर किए हुए शोषण के प्रति जाग्रत करके स्वाभिमान से जीने की राह चींधती है ।

बलात्कारी :

दलित व्यक्ति का हंमेशा शोषण ही होता है जिसमें उसके द्वारा किए गुन्हों के बदले में उसे मनचाहें गुन्हों का गुन्हगार बना दिया जाता है और उसकी अनुउपस्थिति में उसके परिवार का शोषण होता है जिसका बदला लेकर बिल्टुआ सच्चे गुन्हों में गिरफ़्तार होना चाहता है जिसमें उसके ऊपर हुए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्तर पर हुए शोषण के प्रति जागरूकता ही दिखाई देती है ।

षडयंत्र :

दलित वर्ग का उपयोग करके उनका यौनशोषण करके छुपे रहना और मुफ्त की तनखा खाना ऐसे गुन्हगार से बचने के लिए घनसेर राम अपने समाज को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक शोषण के प्रति जाग्रत रहकर स्वयं को सुरक्षित रहने की सलाह देता है ।

इशारा :

दलित पहलवान का आर्थिक शोषण तो उसका उस्ताद करता है जिससे वह छोड़कर अपना अखाड़ा खोलता है पर जाति के कारण वह नाकामयाब हो जाता है । पर जब अपने पुत्र को जाति के कारण हुए भेदभाव से त्रस्त होकर नरेन्द्र सिंह का खून कर देता है तो ऐसे पीड़ित पिता को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण होने पर जागृत होकर अपने हक के लिए लड़ते हुए बताया गया है ।

अपना गाँव :

अस्सी बरस का हरिया अपनी पुत्रवधू पर हुए अत्याचार से त्रस्त होकर नवयुवक जैसी हिंमत दिखाकर अपने हक्क के लिए और शोषण के प्रति जाग्रत होकर अपना गाँव बसाने की क्षमता रखता है ।

सपना :

इस कहानी में सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक तीनों रूप से दलित व्यक्ति का शोषण होता है । जब मंदिर निर्माण की बात होती है तो पसीना केवल निम्न लोग बहाते है पर जब मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा में उच्च जाति के लोगों को प्रमुखता देकर महत्व दिया जाता है । निम्न लोग का उपयोग करके आर्थिक रूप से लाभ प्राप्त करके नामना केवल उच्च वर्ण की होती है । जिसका विरोध एक उच्च जाति का व्यक्ति ऋषि करता है जिससे समाज में जागरूकता आए और मि. नटराजन को कड़े शब्दों में सच्चाई से अवगत कराते है ।

गुजराती दलित कहानियाँ :

सोमली :

सरपंच द्वारा किए हुए शोषण का पर्दाफाश करके सोमली स्वयं का और अपने परिवार की रक्षा करने के लिए सरपंच को मार देती है । इस दंड की सजा में न्यायाधीश उसका पक्ष लेकर 'सत्यमेव जयते' को सत्य मानकर अपनी जाग्रतता दिखाते है और सोमली भी अपने शोषण के प्रति जागरूक होकर सरपंच को मौत के घाट उतार देती है ।

रामराज्य :

करमला द्वारा सीले हुए जूते से मुखी के पैरों में चोट लगने से पशुवत पीटा जाता है पर समय के बदलाव के साथ जाग्रत होकर करमला बदला लेकर मुखी को पीटता है यहाँ तक बाढ़ की स्थिति में सरकारी निर्णय का अस्वीकार करके अपने हक को साबित करते-करते मौत उसे ही मिलती है जिसमें उसकी स्मशानयात्रा दूसरों के कंधों पर सवार होकर करता है इसमें करमला की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जागरूकता दिखाई देती है ।

मारे चा पीवी नथी ! :

दरबार की खुशी में शामिल होने में किए हुए भेदभावों से जागृत होकर जीवा नौकर के घर पर हुई चाय पीलाने की व्यवस्था का अस्वीकार करके स्वयं और अपने समाज को सामाजिक, राजनैतिक शोषण से जाग्रत करने का प्रयत्न ही है ।

रेशनालीस्ट :

शिक्षित व्यक्ति की सोच रखनेवाले डॉ. महेता दलित युवक को उसकी काबेलियत के आधार पर उसका स्वीकार करके उसके भूतकाल की घटना को नज़र-अंदाज करके समाज के शिक्षितवर्ग को सामाजिक शोषण के प्रति जागरूक करते है ।

थळी :

रेवी का बार-बार यौनशोषण होने पर वह निर्णय लेकर हिंमतपूर्वक मानसिंह के प्रस्ताव का अस्वीकार करके स्वयं के शोषण से जाग्रत होकर उसको ललकारती है जिसमें सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जाग्रत एक अबला नारी सबला बनती है और स्वयं की रक्षा करती है ।

लाखु :

जाति को अनदेखा करके दलित नारी का यौनशोषण करनेवाले रमतुडां को सबक सिखाकर रणचंडी बनी काळी अपनी रक्षा करती है वह अपने ऊपर होनेवाले सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जाग्रत है ।

वळगाड :

लखमी का यौनशोषण करके उसे अस्थिर मानकर अंधविश्वास के सहारे उसका शोषण होता है पंर वछराम भूवा को झंझीरों से पीटकर अपने हक के लिए जाग्रत होनेवाली लखमी समाज को भी चेतावनी देकर जाग्रत करती है ।

दाढ़ :

दलित स्त्री का यौनशोषण होते हुए देखकर नानकों लालजी से टकराता है पर उसे गुन्हगार बना दिया जाता है जिसमें उसकी पत्नी कमली भी शिकार होती है । पर कमली लालजी द्वारा किए हुए शोषण से जाग्रत होकर उसका विरोध करके उसे सबक सिखाती है ।

जीत :

हीरा दलित होते हुए भी संस्कारों से भरा है पर उच्चवर्ग की चाल का शिकार बनता है पर अपने ही समाज के संगठन के द्वारा बच जाता है जिसमें समाज को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति जाग्रत होते हुए दिखाया है ।

चबरखी :

शिक्षित और बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा दलित बालिका का शोषण होने पर उसकी ही सहेली उनका अस्वीकार तो करती है पर भूल की सच्चाई जानकर अपनी दलित सहेलियों का स्वीकार करके शिक्षित वर्ग को शरमिंदा करती है और समाज को भी जाग्रत करके प्रेरणा देती है ।

जटायु :

तीन पीढ़ी से खून चुसनेवाले शंकरदा की हकुमत को ठुकराकर अजय को रामायण का चरित्र जटायु से अवगत करवाकर मानो सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण के प्रति स्वयं को तो जाग्रत करता है साथ में शोषण करनेवाले अजय को भी जाग्रत करके स्वयं की रक्षा करने का मौका देता है ।

(7) नारीभावना :

सदियों से समाज में नारी की स्थिति हंमेशा दूसरे स्थान पर रही है। पुरूष प्रधान समाज में नारी को पुरूषों के सामने हंमेशा नगण्य और तुच्छ माना गया है । केवल घर और परिवार की चाकरी करना ही नारी का कर्तव्य है । नारी के प्रति ऐसी सामाजिक मानसिकता नारी को कभी भी आगे बढने की प्रेरणा नहीं दे सकी । स्वयं नारी भी कभी यह नहीं समझ पाई कि सदियों से चली आ रही परंपरा से हटकर भी वे कुछ कर सकती है । आज जहाँ पर नारी-सशक्तिकरण की बात की जा रही है वहाँ वास्तविकता कुछ ओर ही है । हंमेशा पुरूषप्रधान समाज में नारी की स्थिति कैसी है यह हम सब अपनी तरह जानते है । उच्चवर्ग की महिलाओं की अपेक्षा में दलित वर्ग की महिलाओं की समस्याएँ अधिक है क्योंकि वे सदियों से दोहरा संताप उठाती रही है । मनुवादी मान्यताओं के साथ समाज में फैली विषमतावादी सामाजिक व्यवस्था की शिकार दलित महिलाएँ ही अधिक बनती है । अत: उनके प्रति समाज में अधिक निम्न दृष्टिकोण समाज का रहा है जिससे वे हंमेशा ही प्रताड़ित की जाती रही । इसीसे हंमेशा पीछे रहने की भावना से वे ग्रसित रही साथ असुरक्षा का भाव उनके साथ हंमेशा बना रहा । अन्यायपूर्ण और अधिकार शून्य रहा । समाज की विषमतावादी व्यवस्था के शिकार दलित पुरूष स्वयं भी मनुवादी मानसिकता से ग्रसित होकर अपनी स्त्रियों पर अधिक अत्याचार करते रहे जिससे दलित महिलाएँ कभी भी आगे आने के विषय में सोच भी नहीं पाई । घर-परिवार की जिम्मेदारी निभाते हुए अपने पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर कठोर परिश्रम करनेवाली दलित महिला समाज में कभी पुरूषों के समान अधिकार नहीं पा सकी । समाज में स्त्रियों को हंमेशा पुरूषों ने सिर्फ खिलौना समझा है । उन्हें सही रूप में पुरूषों की मित्र, सहयोगिनी या सहगामिनी नहीं माना गया । फलस्वरूप नारी के प्रति सद्भाव, मित्रभाव औौर समानता की मानसिकता कभी समाज में पनप नहीं सकी । गरीबी या आर्थिक अभावों की मारी विवश दलित नारी को मात्र यौन-शोषण का साधन मानकर उच्च वर्ग ने खिलौना समझा है जिसमें मज़दूरवर्ग की दलित महिलाओं का दोहरा शोषण होता है ।

बीसवीं सदी के उतरार्ध में स्वतंत्रता के बाद नयी शिक्षा के प्रभाव से और सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रयत्नों से समाज में नारी के प्रति दृष्टिकोण के फलस्वरूप समाज में नारी के प्रति मानसिकता में बदलाव आया है । बदलती सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक और राजनैतिक परिस्थितियों ने

भी नारी के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण बदलने में सहयोग दिया । हंमेशा अज्ञान के अंधकार में रखी गयी नारी शिक्षा प्राप्त करने लगी । शिक्षा प्राप्त करके अपनी योग्यता के अनुसार वह विशिष्ट पदों पर नौकरी भी करने लगी। इस तरह शिक्षा प्राप्त नारी के परिवार को आर्थिक सहयोग मिलने लगा । नारी को बंधनों से जकड़कर रखनेवाला धर्म ही था जो कि उसे जरा भी स्वतंत्रता और अधिकार देने के पक्ष में नहीं था ।

राजनैतिक परिवर्तन के बाद नारी को कानूनी रूप में समानता का अधिकार मिला । जहाँ नारी पर अत्याचार हुआ वहाँ नारी ने अपनी शक्ति का उपयोग करके प्रतिधात भी किया जिसमें वह जीत भी हासिल कर पाई । नारी अबला बनकर बैठी नहीं जिसने भी उस पर बुरी नज़र डाली उसका उसने मुँह तोड़ जवाब भी दिया है ।

महात्मा ज्योतिबा फूले और क्रांति माँ सावित्रीबाई फूले के कार्यो और प्रयत्नों से दलित जन जीवन में चेतना आई । बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेड़कर ने कठिन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियों में स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त की । शिक्षा के बल पर ही वे समझ सके कि दलित जीवन की समस्याएँ क्या है ? दलित नारी की समस्याएँ क्या है ? उनके अवगति के कारण क्या है ? दलित का विकास कैसे संभव हो सकेगा और प्रगति की ओर वह कैसे बढ़ सकेगा ।

बाबा साहब के लेखन, भाषण और चेतना प्रसारण से दलित समाज में जन जागृति आई है लेकिन फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण दलित समाज जाग्रत हो गया है, चैतन्य हो गया है । स्थिति यह है कि अभी और अधिक चेतना प्रसारण की जरूरत है । विशेषकर स्त्रियों के संदर्भ में यह आवश्यक है कि "दलित समाज मनुवादी मानसिकता छोड़े, वे दलित महिलाओं को समानता का दर्जा दे, समान स्वतंत्रता दें और बराबर का साथी मानकर जीवन के हर क्षेत्र में साथ-साथ आगे बढ़े ।

हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों में मुख्यत: नारी को पीड़ित दिखाया गया है तो कहीं पर विद्रोह करती हुई भी बताया गया है । इस चेतना प्रसारण को ध्यान में रखकर मैंने अपने शोधकार्य में इस विषय को जागृत करने की कोशिश की है ।

हिन्दी दलित कहानियाँ

एक और सीता :

रमिया की कमज़ोरी के कारण और दलित होने से ठाकुर सीता को अपनी हवस का शिकार बनाता है पर सीता अपनी रक्षा करने के लिए हिंमतपूर्वक हाथ में गंडासा लेकर ठाकुर को लक्ष्मण रेखा खींचकर उसकी हद का ज्ञान भी करा देती है ।

आदमी :

कारिया और ओराव की खुशहाल जींदगी को नर्क में बदलनेवाले जंगलबाबु को अपनी गर्भावस्था की परिस्थिति बताती है पर हवस के नशे में चूर- जंगलबाबू ओराव को खिलौना समझकर उससे खेलना चाहता है । इस जोरजबरदस्ती में वह हिंमतपूर्वक जंगलबाबू का मुकाबला करती है पर अंत में मृत्यु ही पाती है । कारिया के आने की प्रतिक्षा में वह मृत्यु को रोककर अंत में जंगलबाबू की करतून का पर्दाफाश करके अपना और बच्चे का बदला लेने के लिए प्रोत्साहित भी करती है ।

अषाढ़ का एक दिन :

सरकारी ज़मीन के कारण हुए विद्रोह से भगेलू शिवनाथसिंह के वहाँ हल चलाने जाने पर अपमानित होता है । भगेलू ने भूतकाल में अपनी पत्नी सूरजमुखी को शिवनाथसिंह से सावधान रहने की सूचना दी थी पर परिस्थिति के बदलाव के कारण स्वयं अपनी पत्नी को शिवनाथ के घर भेजकर उसकी इज्ज़त से खेलता है । भगेलू अपनी भूल को मानकर सुरजमुखी को समझाकर वापस भी लाता है पर इस निर्णय के कारण उसे मौत ही मिलती है ।

छिपे हुए हाथ :

छंगुरी शहर जाकर आर्थिक रूप से सशक्त होता है पर ज़मीदार की चाल का शिकार बनकर अपनी पत्नी और भाई के अनैतिक संबंध की जूठी बात जानकर पूरे परिवार का अंत कर देता है । ज़मीदार के लिए स्त्री की इज्ज़त केवल एक मोहरे की तरह है जिसे जब चाहे उपयोग करके फेंका जाता है ।

कामरेड का सपना :

दलित वर्ग को अपने हक से अवगत करानेवाले कामरेड की हत्या करके ललई पंडित, सरजूठाकुर और पुलिस खुश है । लेकिन चंद्रावती जैसी

बाहोश महिला कामरेड की हत्या से घबराये बगैर फिर से जुलुस निकालकर दलित वर्ग पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार के विरोध आवाज़ उठाती है ।

बयान :

एक स्त्री की इज्ज़त का जितना महत्व नहीं जितना भूख का । क्योंकि भूख ही मनुष्य को मनुष्यता से छिनकर गुन्हगार को साबित करने के बजाय केवल उसे प्राप्त हुए खाने से वह अत्यंत खुश है । उसे स्त्री की इज्ज़त से अधिक भूख का महत्व लगता है । यही हमारे समाज की स्थिति है जिसमें स्त्री को तुच्छ चीज़ ही समझी जाती है ।

उठे हुए हाथ :

राघो महतो की हवस का शिकार बनी बसंती अपना बदला लेने के लिए घायल शेरनी की तरह उस पर लपक जाती है जिसमें समाज भी उसका साथ देता है । इस प्रकार हिंमत दिखाने पर एक बालमानस पर भी विद्रोह का भाव जागृत हो जाता है ।

जीवनसाथी :

दलित स्त्री पर अपना अधिकार जतानेवाले और उसका यौनशोषण करनेवाले मवाली एक सुखी परिवार को पीड़ा ही देते है जिसमें पुलिस कर्मचारी भी न्याय के साथ न रहकर वर्णव्यवस्था के आधार पर असामाजिक तत्वों को प्रोत्साहित करके गुन्हा रोकने की बज़ाय दलित वर्ग का शोषण करने के लिए प्रयत्नशील है ।

दाग दिया सच :

अलग जाति के प्रेमी को सजा देने में दोनों समाज के लोग इक्कठा होते है जिसमें स्त्री को सजा देने के लिए ऐसा दंड देते है जो कोई पशु को भी न देता हो । इस प्रकार के अत्याचार को देखकर महावीर के पिता पागल हो जाने पर उनके मन में प्रश्न उठता है कि क्या वह मनुष्य ही थे ?

आतंक :

बच्चों की लड़ाई में दलित बच्चे की माँ को सजा देकर ठाकुर सरमुखत्यारशाही जताता है । जिसे देखकर पूरा दलित वर्ग मौन खड़ा रहता है पर उसी वर्ग की एक बाहोश महिला बिमला स्वयं की परवाह किए बिना राखी का बदला लेकर स्वयं को गुन्हगार तो पाती है पर गर्व का अनुभव भी करती है ।

अपना गाँव :

जमींदार अपनी जीत हासिल करने के लिए कोई भी शस्त्र का इस्तेमाल कर सकता है इसके लिए वह स्वतंत्र है । चाहे वह स्त्री को नंगा घुमाऐ उसे कोई फर्क नहीं पड़ता । जमींदार की सोच में स्त्री को तुच्छ समझकर मनचाहा व्यवहार करने में ही वह अपनी मर्दानगी मानता है । इस शोषण का विरोध करने में अस्सी बरस का हरिया नवयुवक की भांति ही दिखाई देता है । हरिया जमींदार के जुल्मों से तंग आकर अपना गाँव बसाने की स्वतंत्र सोच भी रखता है ।

गुजराती दलित कहानियाँ :

सोमली :

सोमली उसका पति, बेटा और बहू पर सरपंच के अत्याचार से तंग आकर सोमली सरपंच का खून कर देती है । सरपंच की हवस का शिकार बहू न बन पाए इसलिए हवसखोर को ही मार देती है । इस घटना का फेंसला न्यायाधीश 'सत्यमेव जयते' के नारे को साकार करके सोमली के निर्णय को सही मानकर सोमली की भावना और वेदना को समझते है ।

दायण :

बेनीमा के सेवाभावी स्वभाव के कारण अछूत होते हुए भी उच्च वर्ग के लोग उनकी मुसीबत में मदद लेते है और बेनीमा भी उनके विश्वास को पूरा करती है । बेनीमा अपने कार्य को धंधा न समझकर सेवा का दर्जा देती है पर जैसे स्त्री-स्त्री की दुश्मन हो ऐसी पशी बेनीमा की मदद को नज़र अंदाज करके बेनीमा का अपमान करके उनके हृदय को ठेस पहुँचाती है जिसमें बाल मन पर गहरा प्रश्न उठता है । जिन्होंने मातृत्व का पद दिलाया ऐसी पूजनीय स्त्री को हलका वर्ण गिनकर उसको धुत्तकारना पशी की नासमझी ही है ।

नकलंक :

दिवा के पात्र को देखकर यह सच होता है कि प्रेम में कोई दिवार दिखाई नहीं देती । उसे तो केवल प्रेमी का प्रेम ही दिखाई देता है । दिवा की परिस्थिति भी ऐसी है वह कांति की जाति को अनदेखा करके उसको समर्पित होने की चाहना रखती है । दिवा जाति नहीं कांति के गुण से प्रभावित है ।

रखोपाना साँप :

पिता का कर्ज चुकाने के लिए वीरजी का शोषण तो होता है पर माँ और पत्नी का यौनशोषण भी होता है । रूड़ी के सौंदर्य-से आकर्षित जीलुभा उसे भोगने के लिए प्रयत्नशील है जिसमें रूड़ी के पति वीरजी को मार भी देता है इसलिए वह वीरजी को नहीं पर पूरे परिवार को दंश कर मौत ही देता है ।

कुळदीपक :

अपने पति के इंतजार में अपना और बच्चे का पालन-पोषण करने में स्वयं को बेचने वाली स्त्री के अथाग प्रयत्न करने पर भी बच्चे को बचाने में नाकामयाब होती है । स्वयं को बेचकर बच्चे की दवा लाने के लिए जिस प्रकार एक असुर की हवस को तृप्त करने में उसके बेटे से वह हंमेशा के लिए अतृप्त रहकर अपने आप को कोसती है ।

सरनामु :

कहानी की नायिका आरती शिक्षित और स्वतंत्र सोचवाली महिला है पर वह भी वर्णभेद की रेखा को लांघने में अपने आपको कमज़ोर समझती है। अरूण पंड्या अछूत लड़का होने से वह उसे अपने ज्ञान से वंचित रखकर कितना बड़ा गुन्हा करती है जिसका वह अंदाजा नहीं लगा सकती ।

सगपण :

डॉक्टर द्वारा मणकी को अपनी हवस का शिकार बनाकर उसे मौत देनेवाले शिक्षित वर्ग आज़ादी से घूमते है पर इस सदमें के कारण उसका प्रेमी रूड़िया पागल हो जाता है और मणकी का पिता उसकी देखभाल में जीवन व्यतित करता है । इस कहानी में मणकी द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग के संस्कार का पर्दाफाश किया है ।

थळी :

रेवी को अपनी हवस का शिकार बनाकर उसकी इज़्ज़त से खेलने वाले मानसिंह को रेवी हिंमतपूर्वक उसके प्रस्ताव का विरोध करके स्वयं की रक्षा करती है और मानसिंह को उसकी हद भी दिखा देती है ।

लाखु :

काळी का यौनशोषण करते समय रमतुडां की मानसिकता का विरोध करके स्वयं की रक्षा करके रणचंड़ी का रूप धारण करनेवाली काळी बुद्धिशील और बाहोश होने के कारण रमतुडां को सबक सिखाने में कामयाब होती है ।

वळगाड :

वछराम भूवा द्वारा लखमी का यौनशोषण होने पर लखमी अस्वस्थ रहती है । लखमी के माता-पिता को अंधश्रद्धा का शिकार बनाने पर लखमी वछराम भूवा को सबक सिखान के लिए झंझीरों से पीटकर अपना बदला लेती है । लखमी समाज से अंधश्रद्धा का पर्दाफाश करके समाज को सच्चाई से अवगत भी कराती है ।

टेस्टट्यूब बेबी :

पिता की सोच को मानकर अपने प्रेम का गला घोटनेवाली रीमा स्वयं को ओर अपने कोख में पल रहे प्यार की निशानी को मार देती है । जीवन से समझौता करने पर वह मातृत्व से वंचित रहती है पर 21वीं सदीं के आधुनिकीकरण के कारण वह मातृत्व का सुख पाने का सौभाग्य प्राप्त कर लेती है पर वहाँ पर वालीद की सोच का शिकार बनती है का टेस्टट्यूब बेबी किस जाति का है । इस कहानी में एक स्त्री को केवल खिलौना माननेवाला वालिद जब चाहे चाबी घुमकर मनचाहा खेल खेल सकते है । इसमें एक प्रेमिका, माँ की वेदना ही दिखाई देती है ।

वादळ साथे वातो करती पाइलट पंड्या :

उपर्युक्त शीर्षक में ही चरित्र का स्थान दिखाई देता है । पाइलट पंडया अपने घर आए व्यक्ति में अछूत व्यक्ति की वेदना भूतकाल में भी वही होती है और वर्तमान में भी वही है । जिसका विरोध करने में उसे असक्षम पाया जाता है । दादाजी की क्रिया का वो विरोध कर सकती थी पर वहाँ मूक होकर तमाशा देखती रहती है । मानसिकता इसमें इतने उच्च स्थान पाने के काबिल व्यक्ति की संकुचितता नज़र आती है ।

दाढ़ :

नानका द्वारा हिंमत दिखाकर लालजी का विरोध करना उसे सबक सिखाने पर स्वयं को गुन्हगार पाना ओर इस मौके का फायदा उठानेवाले लालजी का मुकाबला करता है । यहाँ पर नानजी की तरह कमली भी हिंमतपूर्वक लालजी की हवस से बचने के लिए लालाजी को सबक सिखाने में कामयाब होती है । वह अपने पति की गेरहाजरी में भी स्वयं की रक्षा करनेवाली सबल नारी है ।

चबरखी :

दलित बालिका को मिलनेवाली स्कोलरशीप को मज़ाक का रूप देनेवाले स्कूल के क्लर्क और वर्णव्यवस्था की घटिया सोच के शिकार शिक्षकगण पर करारा व्यंग्य है । शिक्षक सही राह बताने के बज़ाय विद्यार्थियों को जातिवाद के शिकार बनाकर घटिया सोचने पर मज़बूर करते है और दलित बालिका को अपमानित करते है । इस बात का शिकार हुई उसी की सहेलियाँ पहले दलित सहेली का अस्वीकार करती है पर गहरी समझ शक्ति से स्वतंत्र निर्णय लेकर अपनी सहेलियों का स्वीकार भी करती है जिसमें बुद्धिक्षमता की कसौटी दिखाई देती है ।

जटायु :

सीताहरण में जटायु की जो भूमिका थी उसी प्रकार की भूमिका मानो की है और उसके संवाद से तुरंत रामायण की याद ताज़ा हो जाती है। लाडु का अपहरण करके स्त्री की इज्जत के साथ खेलनेवाले को बूढ़े जटायु की स्थिति से अवगत करवाकर स्वयं को नवयुवक जटायु है उसका भान करानेवाला मानो यौनशोषण का विरोध करके अजय को ठीकाने लगाने वाला निड़र युवक और स्त्री की इज्जत करने की सीख भी देता है ।

(8) समाज के प्रति अस्मिता की पहचान :

भारतीय परिवेश के धर्मो द्वारा अद्वैतवाद का दर्शन देनेवाला, प्रकृति की उपासना करनेवाला, विश्व बंधुत्व (**वसुधैव कुटुम्बकम्**) का संदेश देनेवाला यह देश अपने बीच स्थित एक सम्पूर्ण वर्ग को अछूत, अस्पृश्य घोषित करके अमानवीय व्यवहार करता रहा है और आज भी कर रहा है । सदियों से इन पर विचार किया गया । इनका अपमान, शोषण, दलन, प्रताड़न किया गया । पशुओं से भी बदतर इन्हें माना गया । इनको छूना भी पाप माना गया । भगवान और भाग्य का भय दिखाकर इन्हें यथास्थिति में बने रहने पर विवश किया गया । दूसरे वर्णो की सेवा करना ही इनका धर्म निर्धारित किया गया। सेवाकर्म से च्युत होने पर जहाँ विधान में राजकीय दण्ड किये गये, वहाँ पर धर्मग्रंथों में भी नरक का भय दिखाया गया है । इनमें चेतना पैदा न हो इसलिए इनके लिए शिक्षा प्रतिबंधित रही । वर्णाश्रम व्यवस्था द्वारा इन्हें समाज से पृथक कर दिया गया । आगे चलकर वर्ण व्यवस्था से ही जाति व्यवस्था बनी । शुद्र के घर पैदा होनेवाला अस्पृश्य ही माना गया, चाहे वह कितना ही विद्वान सदाचारी और ज्ञानी ही क्यों न हो ।

'महाड़ तालाब सत्याग्रह' द्वारा अम्बेडकर की प्रेरणा से ही शक्ति को संगठित करके उनके उत्प्रेरक नारे के ओर भी ध्यान देना होगा - **"शिक्षित हो, संघर्ष करो, संगठित हो ।"** उनकी सकारात्मक सोच का ही परिचायक यह तथ्य उज़ागर है कि दलितों का दलित होना, पिछड़ों का पिछड़ा होना, इन्हीं वर्गों की दशा अशिक्षा के कारण है । क्योंकि शिक्षित व्यक्ति ही अपने आप पर विचार करने के साथ-साथ अपने परिवेश और सामाजिक ढाँचे पर भी दृष्टिपात करने की क्षमता रखता है । दलितों की दशा को इस तरले दर्जे पर पहुँचाने के लिए जातीयता हिन्दू समाज जिम्मेदार है । उन्होंने साफ़-साफ़ देख लिया था कि शिक्षा, संगठन और संघर्ष मिलकर किसी भी प्रकार की दासता से मुक्त कराने के उपाय के रूप में प्रयोग किये जा सकते हैं ।

जब व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसकी बिसात ही कितनी है तब समझलों उसके सामने अस्मिता को 'क्राइसिस' आ गया है । यह 'महसूसना' परिवेश की ऐसी स्थिति के कारण होता है जिसकी दशाएँ उस व्यक्ति की आस्थाओं और वैचारिक मूल्यों को समूल रौंद डालने को तत्पर एवं क्रियाशील लग रही है । यहाँ पर बाह्य तत्व उस व्यक्ति की आंतरिकता का इस प्रकार भेदन करते हैं कि उसके व्यक्तित्व का अस्तित्व नकार (अवाइडनैस) की सीमा तक संकुचित हो जाता हैं जो किसी व्यक्ति की उपस्थिति को पहचान रहित करके महत्वहीन बना देती है और उन परिस्थितियों को सार्वभौमता का करार देकर एक प्रकार की बाध्यता सर्जित कर दी जाती है ।

यहाँ पर पहचान रहित का अर्थ व्यक्ति या सामाजिक समूह के 'स्व' को अतिक्रमित करके रखने की बात है । इस 'स्व' को पहचान रहित करने की परिस्थितियों और दशाओं को निर्मित करके जो स्थिति पैदा की जाती है उससे मुक्त होने की इच्छा तब ही जागृत हो सकती है जब व्यक्ति या समूह उस बड़े समूह या समाज में अपने योगदान को भी चिन्हित करना या कराना चाहता है । यह इच्छा कई प्रकार से क्रियाशील होती है । चाहे समता की हो, महत्व की हो या प्रभाव की, इच्छा मनुष्य को अपने होने के अनुभव से परिचित कराती है ।

यह 'होने' का भाव ही व्यक्ति को अपने अस्तित्व की भौमिकता से सम्बद्ध करके समानान्तरता पर खड़ा कर देता है । यह प्रतिक्रिया से उत्पन्न प्रतिफल नहीं अपितु सामाजिक इकाई में सम्पूर्णता हेतु योगदान की इच्छा है जो भीतर ऐसा भाव जागृत करती है कि "मैं भी अपना योगदान करूँ" या

"मेरा भी कुछ योगदान है कि नहीं, यदि मेरा योगदान उस श्रेणी का नहीं माना जा रहा जिस श्रेणी का योगदान दूसरे का है तब मुझे भी उस श्रेणी का योगदान करने का अवसर मिलना चाहिए, "मैं भी श्रेष्ठ योगदान करनेवालों की पंक्ति में सम्मिलित क्यों नहीं हो सकता ।" इस प्रकार की सोच सांस्कृतिक उत्कृष्टता के सापेक्ष हेय घोषित कर दिये गये समाज में 'स्व' का उद्भव एवं विकास स्वघोषित उत्कृष्टता के विरूद्ध उठ खड़े होने की इच्छा से सराबोर होने लगता है । यह एक समानान्तरण की भावना है जो पहचान के लिए भीतर ही भीतर कशमसाती है ।

आधुनिक शिक्षा ने जिसमें विज्ञान का महत्वपूर्ण हाथ है यह संभव बना दिया है कि विभिन्न वैज्ञानिक, नृतत्वात्मक और सामाजिक-सांस्कृतिक शोधों के आधार पर निर्णय लिए जा सकें । यह स्पष्ट हो गया है कि प्राकृतिक रूप से जो भिन्नता मानव समूहों में बाह्य रूप से दिखायी देती है उसी प्रकार की भिन्नता मानसिक एवं सांस्कृतिक रूप से उत्कृष्ट एवं हेय के रूप में किये गये विभाजन में उसी प्रकृति की ओर से की गयी है, आज तक सिद्ध नहीं हो सका ।

एक ही भूभाग की, एक ही नृतत्व आधारवाली मानव जाति किस प्रकार पवित्र द्विज और अपवित्र शूद्र के रूप में परिभाषित कर दी गयी, जब इस पर विचार किया जाता है तो यह विभाजन श्रम विभाजन तो कदापि नहीं लगता क्योंकि श्रम विभाजन केवल उन लोगों या व्यक्ति समूहों के मध्य ही होगा, जो श्रम करते हैं । बैठकर खानेवाले और कमाकर देनेवाले ये दो वर्ग किसी धार्मिक या सांस्कृतिक आधार पर खड़े करके कमाकर देनेवाले को सबसे निचले पायदान पर कैसे रखा गया, इस पर विचार करने पर जब इसकी तह में छद्म और आडम्बर का गठजोड़ दिखायी देता है तो तुच्छता-बोध को उतार फेंकने की बात तुच्छ घोषित कर दिये गये मानव के मन में उभर आना स्वाभाविक है ।

अपनी 'इयता' को पहचान कर 'इयता' को 'वृहद अस्तित्व' में प्रदर्शित, परिभाषित और प्रतिष्ठिपित करने की लालसा जिस आस्था को जन्म देती है वह 'अस्मिता' की पहचान और स्थापना में आधार शक्ति का कार्य करती हैं । इसी भक्ति के बल पर 'अस्मिता' अपने आपको तैयार करती है और सामने आती है । इस प्रकार हम संक्षेप में कह सकते है कि आंतरिकता, सामान्य जीवनदृष्टि और आत्माभिव्यक्ति मिलकर अस्मिता का निर्माण करते है ।

अस्मिता का पहला कदम महानता के आतंक से मुक्त होता है । समाज पर मुट्‌ठीभर विचारकों के मानदण्डों द्वारा सिद्ध महानता को कुछ विशिष्ट जन्मगत प्रमाणपत्र धारी लोगों पर आरोपित कर दिये जाने के विरूद्ध ऐसे लोगों में जागृति का आ जाना जो इस महानता का गुणगान सुनकर अपने आपको तुच्छ अनुभव करते रहे हैं और जन्मगत/व्यवसायगत/श्रमगत कारणों से दबकर रह रहे है । अस्मिता का उद्‌भक्त है । ऐसी महानता चाहें मिथकों में वर्णित हो अथवा इतिहास में या फिर साहित्य में स्थापित की गयी हो । इन महानताओं को स्वीकार करने से पहले महानताहीन घोषित कर दिये गये लोगों के मस्तिष्क में 'अस्मिता' तर्क-विवेक को जगाती है । यह तर्क-विवेक अंधश्रद्धा का काला आवरण उतार कर खुली आँखों से देखना आरंभ कर देता है, यह तर्क-विवेक हर उस परिपाटी, परंपरा विश्वास और स्थापना से टकराता है जिसे शाश्वत या स्वीकार्य करके बराबरी पर आने के लिए नयी स्थापनाओं की ओर अस्मिता अग्रसर होती है । सीधी बात है वर्ण-गर्व की चेतना से टकराने का साहस ही दलितों की "अस्मिता" हो ।

तर्क-विवेक के आधार पर अस्मिता (चेतना) यथार्थ (वस्तुस्थिति, बाह्य) को समझकर विद्रुपता पर गहन दृष्टि से पर्यवेक्षण करके आवर्तित और प्रतिपित स्थितियों पर अपना विचार प्रकट करने की क्षमता व्यक्ति में आ जाती है, तब ही वह अस्मिता के संघर्ष का शंखनाद प्रस्थापित करता है ।

अहं एवं दर्व के सम्मुख अस्मिता समानता का ध्वज लेकर खड़ी होती है । यही कारण है कि अस्मिता आत्मकेन्द्रिता से दूर होकर सब के लिए धरातल के निर्माण का कार्य करती है । अस्मिता जब जागृत होती है तो तीन कदम उठाती है - अस्वीकार, विरोध और विद्रोह । ये तीनों कदम उठाने के लिए जिस समझ की आवश्यकता होती है वह भीतर ही भीतर पनप रहे आक्रोश से प्रेरित होकर क्रियाशील होती है । अत: यह भावना ऊपर से नहीं लादी जा सकती । विद्रोह तो आंतरिक शक्ति के आवेग से फूटता है ।

अस्मिता का उद्देश्य अथवा लक्ष्य किसी को परेशान करना न होकर मानवता की भावना को समता के आधार पर स्थापित और सुदृढ़ करना है । अस्मिता ही तो है जो दलित को दीन-कातरपना छोड़कर समृद्ध होने की ओर लगा रही है । यह अस्मिता दलित को अपनी पहचान पर लगे ग्रहण को धोने के लिए उक्सा रही है । इतना ही नहीं ग्रहण के कारणों को निर्मूल करने के

लिए संघर्ष करने की शक्ति भी प्रदान कर रही है । यानि दलित अस्मिता अब 'क्राइसिस' के दौर से उबर कर 'स्ट्रगल' के दौर को पार करते हुए पूर्ण रूप से प्रस्थापित हो चुकी है ।

मैं स्पष्ट रूप से मानती हूँ कि जब तक मनुष्य अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सजग होकर बड़ी उत्कंटना के साथ अभिव्यस्त होने के लिए छटपटाता नहीं है तब तक दलित अस्मिता प्रकट हो ही नहीं सकती । दलित कहानी इसी का प्रमाण है । अपने शोधकार्य में कहानी के चरित्रों के माध्यम से समाज के प्रति जैसी भी अस्मिता है उसे उजागर करने का प्रयास किया है ।

हिन्दी दलित कहानियाँ :

लटकी हुई शर्त :

कहानी का नायक गंगाराम अछूत है जो बाबूओं के घर पर भोज में पतल उठाने के निर्णय का विरोध करके समाज को दिखाना चाहता है कि हम भी इन्सान है । जिस प्रकार हरेक जाति के लोगों के साथ व्यवहार किया जाता है उसी प्रकार समानता स्थापित करने के लिए शर्त रखकर किसी को नुकशान न पहुँचाकर समय आने पर बाबूओं को मदद भी करके स्वयं को उच्च साबित करके समाज के सामने विरोध प्रकट करके अपनी अस्मिता की पहचान कराने के लिए कार्यशील बताया गया है ।

पच्चीस चौके डेढ़ सौ :

इस कहानी में डॉ. बाबासाहब के विचार को लेकर समाज के प्रति अस्मिता की पहचान कराने के लिए सुदीप को साक्षर दिखाकर सालों से ठगे हुए पिता को चौधरी की सच्चाई दिखाकर अपने पिता को पच्चीस चौके डेढ़ सो नहीं पर पच्चीस चौके सौ की गिनती गिनाकर पिता को अपने साक्षर होने के कारण अपने हक के लिए जागृत करके अपने प्रति अस्मिता दिखाने का प्रयत्न किया गया है ।

एक और अंत :

टुनरा की मौसी की धृणा का शिकार नन्हुआ पाँच साल की उम्र में मज़दूरी करने लगता है पर टुनरा उसकी बाल्यावस्था पर विचार करता है तो वह भी अपने द्वारा लिए निर्णय को गलत साबित करने के लिए अपने बेटे को स्कूल भेजकर समाज के सामने उसका स्थान स्थापित करने के लिए निर्णय लेता है । उसे पता है कि व्यक्ति समाज में अपनी पहचान अस्मिता के द्वारा ही छोड़ सकता है इसीलिए उसे शिक्षित होना जरूरी है ।

बिच्छूधास :

कहानी का चरित्र दूर्गादत्त अपने बचपन की गलती का स्वीकार करके उच्च वर्ण का होते हुए भी मूसा पर किए गए बिच्छूधास के ददोड़े की वेदना स्वयं भुगत रहे है । दूर्गादत्त अंधविश्वास का विरोध करके समाज को व्यक्ति की अस्मिता को मान देकर उसे एक व्यक्ति के रूप में स्वीकारने का संदेशा देते है ।

कामरेड का सपना :

ललई पंडित और सरजू ठाकुर द्वारा कामरेड की हत्या हुई है । इस षडयंत्र में पुलिस द्वारा किया हुआ भ्रष्टाचार में उनका साथ देने के लिए रिशवत लेना । कामरेड कल्ला कहानी का चेतना सभर पात्र है जो अनपढ़, बेबस लोगों को अपने हक के लिए लड़ने की ताकत देता है पर वह ऐसे लोगों के षडयंत्र का शिकार बनकर अपने मक्सद में कामयाब नहीं होता पर उसकी बेटी चंद्रावती अन्याय और अत्याचार के विरोध का झंडा लेकर चल रही है और समाज के प्रति अस्मिता की पहचान कराते समय सैनिक सी तनी हुई लगती है ।

अब नहीं नाचब :

कहानी का नायक कन्हई भगत शेरसिंह, विद्यासागर, पंडितजी के निर्णय से खफा होकर उन्हें सबक सिखाने के लिए जातिवाद का विरोध करके संगठन बनाकर उन्हें माफी माँगने पर मज़बूर कर देता है इस विरोध का परिणाम जीत ही होती है । इस प्रकार कन्हई और दलित समाज के संगठन द्वारा समाज के प्रति अस्मिता की पहचान दिखाने में कामयाबी प्राप्त हुई है ।

षडयंत्र :

इस कहानी में शिक्षा को व्यापार समझनेवाले शिक्षित, उच्चवर्ग के शिक्षक किस प्रकार मुफ़्त की तन्खा लेते है और मौका मिलने पर छोटी बच्ची को अपनी हवस का शिकार बनाने से नहीं चुकते । इस कहानी में इन्सपेक्टर की लालचीवृत्ति का पर्दाफाश करके सच्चाई से अवगत कराया है पर धनसेर राम के द्वारा लोगों को अपने अधिकारों के लिए जागृत रहने की सलाह देकर सच्चे शिक्षक की भूमिका अदा करके अपनी ही जाति को हिंमत देकर षडयंत्र को नाकामयाब करके समाज के प्रति अस्मिता की पहचान कराने का प्रयत्न किया है ।

अपना गाँव :

अस्सी साल का वृद्ध नौजवान हरिया अपनी पुत्रवधू की जमींदार द्वारा की हुई हालत से सन्न हो जानेवाला हरिया एकदम शक्तिशाली बनकर फैंसला करता है और विरोध करता है कि ऐसी स्थिति रही तो हम अपना गाँव स्वयं बसायेंगें इस प्रकार निर्णय करता है । हरिया समाज के प्रति अस्मिता की पहचान करवाकर वृद्ध नहीं पर एक नवयुवक सा दिखाई देता है जो इतनी ताकत भी रखता है ।

सपना :

पवित्र महोत्सव में ऋषि द्वारा किया हुआ विरोध एक रूकावट नहीं पर समाज के प्रति अस्मिता की पहचान करने की संपूर्ण कोशिश है जिसमें वह स्वयं को गिरफ्तार पाता है पर समाज के सामने सच्चाई का कच्चा-चीठ्ठा भी खोल के रख देता है ।

गुजराती दलित कहानियाँ :

नकलंक :

छात्रावस्था की भावना को मौका मिलने पर दिवा, कांति के प्रति आकर्षित होती है पर कांति स्वयं को जागृत रखकर अपनी जाति पर कलंक न लगे इसलिए दूरी की लक्ष्मणरेखा खींचकर रखता है । वह कभी विचलित हो जाता है पर अपने गुणों के कारण अपने आपको रोक लेता है । तकदीर का तमाशा ऐसा होता है कि दिवा अपने ही देवर की हवस का शिकार बनती है तभी तुलना करने पर हम मज़बूर हो जाते है कि सही में समाज को अस्मिता की पहचान होनी चाहिए ।

मारे चा पीवी नथी ! :

दरबार के बेटे की शादी में नौकर के घर खुशी से चाय पिलाने के आदेश पर किए गए निर्णय का विरोध करनेवाला जीवा सभी से प्रश्न करता है कि खुशी व्यक्त करने पर भी समानता न हो उस खुशी का विरोध होना चाहिए जिसका स्वीकार पूरा समाज करता है । इस प्रकार समाज के प्रति अस्मिता की पहचान कराने का सही प्रयत्न है ।

जात :

इस कहानी में धार्मिकता के आधार पर किया गया विरोध में सभी का संगठित होकर अपने अधिकार के लिए लड़ना यह साबित करता है कि जिन्होंने मंदिर की स्थापना की उनका पहला अधिकार होता है और वही नेज़ा (धज़ा) चढ़ाने का अधिकारी होता है पर जाति के कारण इस अधिकार को

छीनकर अधिकार पानेवाले को सबक सिखाकर दिखा देते है की हमारा अधिकार हमसे कोई नहीं छीन सकता । 'बोलो रामापीर की.....' में समाज के प्रति अस्मिता की पहचान ही है ।

रेशनालीस्ट :

गुरु की महिमा को दिखाकर सच्चे गुरु की पहचान करानेवाले डॉ. महेता जाति नहीं पर उस दलित युवक की काबेलियत को सराहता है और हंमेशा उसकी मदद के लिए कटिबद्ध दिखाए गए है । इस प्रकार समाज के प्रति अस्मिता की पहचान को दिखाकर बालुजी की तानाशाही का पर्दाफाश करके खेल करने पर की सज़ा मौत ही हो ऐसे क्रुर व्यक्ति क्या अस्मिता के लिए लायक है यह प्रश्न उपस्थित होता है ।

जीत :

हीरा अछूत होते हुए भी संस्कारी है वह अपने गुरु का आदर करता है इसलिए अंतिम पंक्ति में बैठने की सूचना पर विवाद होने से अपने मित्र के विरोध को रोक कर अपने संस्कार की झलक दिखाता है । वह अपनी जाति के प्रति भी आदर रखता है । इस प्रकार अपनी अस्मिता को संभालता है । एक डॉक्टर बनकर वह अपनी काबेलियत दिखाता है पर षडयंत्र का शिकार होने पर उसके ही जातिबंधु उसे बचा लेते है । यही समाज के प्रति अस्मिता की पहचान है ।

चबरखी :

सरकार द्वारा अनुसूचित जाति को आर्थिक सहाय मिलने पर गलत समझने और समझानेवाले शिक्षित वर्ग इस सहायता को निम्नता का रुप देकर छोटे से बालमानस में जातिवाद का दूषण डालते है । जिसको सच्च मानकर उनकी बात का स्वीकार करके अपनी सहाध्यायी से धृणा करने पर मज़बूर हो जाती है पर इस प्रकार बात को सोचने पर अपने गलत निर्णय को न मानकर वहीं छोटी लड़की जब दलित सहेलियों का स्वीकार करती है तो समाज के प्रति अस्मिता की पहचान होने से उसे कोई नहीं रोक सकता ।

जटायु :

लाडु की इज्जत से खेलनेवाले अजय को मानो एक स्त्री की इज्जत कैसे की जाती है और तीन पीढ़ी से चुसनेवाले को स्वयं की पहचान करवाकर समाज के प्रति अस्मिता की पहचान कराने की कोशिश है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या, जगजीवन, पृष्ठ-22
2. रचनाकर्म अप्रैल-जून, 2008 (त्रैमासिक), पृ.36
3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य, हिन्दी साहित्य अकादमी, गांधीनगर, पृ.2
4. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी, भूमिका से
5. वही, पृ.100
6. तुलनात्मक साहित्यनी दिशामां, डॉ. अश्विन देसाई, पृ.23
7. वही, पृ.10
8. तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप और समस्याएँ, डॉ. आर. राजूरकर, पृ.39
9. वही, पृ.33
10. तुलनात्मक साहित्य, डॉ. धीरुभाई परीख, पृ.16
11. तुलनात्मक अध्ययन दिशामां, डॉ. अश्विन देसाई, पृ.12
12. वही, पृ.18-19
13. वही, पृ.15-16
14. वही, पृ.26-27
15. तुलनात्मक साहित्य, लेखक - नगेन्द्र, पृ.22
16. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी, पृ.30-31
17. वही, पृ.31
18. वही, पृ.31-32
19. वही, पृ.28-29
20. तुलनात्मक साहित्य, लेखक - डॉ. नगेन्द्र, पृ.28-29
21. तुलनात्मक अध्ययन भारतीय भाषाएँ और साहित्य, डॉ. आर. राजूरकर, पृ.124
22. वही, पृ.119
23. वही, पृ.15
24. तुलनात्मक साहित्य स्वरूप और समस्याएँ, डॉ. आर. राजूरकर, पृ.51
25. वही, पृ.51
26. तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, डॉ. एस. गुलाम रसुल, डॉ.सरगु, पृ.34
27. हिन्दी अनुसंधान, डॉ. विजयपालसिंह, पृ.264-265
28. वही, पृ.284
29. दलित दखल, श्यौराजसिंह बेचैन, पृ.120
30. हिन्दी उपन्यास सौ वर्ष का सफरनामा, डॉ. अब्दुल रशीद, ए. शेख, पृ.86

31. दलित कहानी संचयन/चयन, संपादक रमणिका गुप्ता, संस्करण-2003, पृ.83
32. वही, पृ.84
33. वही, पृ.24
34. वही, पृ.28
35. दलित जीवन की कहानियाँ, संपादक - गिरिराजशरण, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृ.23
36. वही, पृ.28
37. वही, पृ.29
38. वही, पृ.39
39. वही, पृ.44
40. वही, पृ.70
41. वही, पृ.70
42. वही, पृ.104
43. वही, पृ.122
44. वही, पृ.146
45. वही, पृ.77
46. वही, पृ.80
47. वही, पृ.96
48. वही, पृ.96
49. वही, पृ.111
50. वही, पृ.111
51. वही, पृ.86
52. वही, पृ.86
53. नयी सदी की पहचान : श्रेष्ठ कहानियाँ, संपादक - मुद्राराक्षस, लोकभारती, इलाहाबाद, पृ.27
54. वही, पृ.37
55. वही, पृ.41
56. वही, पृ.70
57. वही, पृ.85
58. वही, पृ.101
59. वही, पृ.143

60. वही, पृ.153
61. वही, पृ.153
62. वही, पृ.160-161
63. वही, पृ.178
64. वही, पृ.183
65. वही, पृ.179
66. वही, पृ.49
67. वही, पृ.51
68. सलाम, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.29
69. वही, पृ.29
70. वही, पृ.30
71. गुजराती दलित वार्ता-1987, संपादक - मोहन परमार, हरीश मंगलम्, आर. आर. शेठ कंपनी, अहमदाबाद, पृ.7
72. वही, पृ.14
73. वही, पृ.20
74. वही, पृ.25
75. वही, पृ.25
76. वही, पृ.55
77. वही, पृ.73
78. दलित गुजराती वार्ता - 1995, संपादक - अजित ठाकोर, राजेन्द्र जाडेजा, पार्श्व प्रकाशन, पृ.52
79. वही, पृ.52
80. वही, पृ.56
81. वही, पृ.58
82. वही, पृ.68
83. वही, पृ.68
84. वणबोटी वारताओ (समाजमित्र) पृ.6
85. वही, पृ.21
86. वही, पृ.22
87. वही, पृ.48
88. वही, पृ.52

89. वही, पृ.76
90. वही, पृ.80
91. वही, पृ.114
92. वही, पृ.141
93. वही, पृ.148
94. वही, पृ.157
95. वही, पृ.187
96. वही, पृ.192
97. वही, पृ.210
98. वही, पृ.212
99. वही, पृ.212
100. वही, पृ.222
101. शब्दसृष्टि, दलित साहित्य विशेषांक, पृ.54
102. वही, पृ.59
103. वही, पृ.87-88
104. वही, पृ.97
105. वही, पृ.100
106. चूडलाकरण, पृ.96
107. हयाती, अंक-14, पृ.19-20
108. वही, पृ.22
109. वही, पृ.23
110. प्रेमचंद साहित्य में दलितचेतना, पृ.41